रांची, सोमवार
20.01.2025
वर्ष : 10, अंक : 51 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

बिहान भारत

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक
खबरे हमारी, विश्वास आपका

website : www.bihanbharat.org | bihanbharat@gmail.com | @bihan_bharat | Bihan Bharat | RNI NO - JHAHIN/2015/73988

संक्षिप्त खबरें

महाकुंभ मेला क्षेत्र में लगी आग, 18 शिविर जले

महाकुंभनगर : महाकुंभनगर में झूंसी थाना क्षेत्र में लोअर संगम के सेक्टर 19 में रविवार को आग लगने से 18 टेंट जलकर खाक हो गए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मेला के कार्यों का निरीक्षण करने आए हुए हैं। श्री योगी आदित्यनाथ ने घटनास्थल का दौरा किया और स्थिति का जायजा लिया। आग लगने की सूचना पर तत्काल मेला अधिकारी विजय किरण आनंद और एसएसपी राजेश द्विवेदी समेत तमाम अधिकारी मौके पर पहुंचे। जिलाधिकारी रविंद्र कुमार मांदड़ ने कहा कि 4.30 बजे कुंभ क्षेत्र सेक्टर के गीता प्रेस शिविर में आग लगने की सूचना मिली थी। अग्निशमन और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। गीता प्रेस के साथ 10 प्रयागवाल के टेंट में भी आग फैलने की सूचना मिली थी जिस पर काबू पा लिया गया है। स्थिति सामान्य है। उन्होंने बताया कि स्थिति सामान्य है और किसी प्रकार की जनहानि की सूचना नहीं है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी (कुंभ) प्रमोद शर्मा ने बताया कि सेक्टर 19 में शास्त्री पुल के नीचे गीता प्रेस के कैंप में आग लगी थी। कई शिविर जल कर राख हो गए। फायर ब्रिगेड ने इलाका सील कर दिया गया। आग बुझाने के लिए करीब 15 अग्निशमन की गाड़ियों ने आग पर काबू पा लिया गया है। कोई जनहानि की सूचना नहीं है। कारणों की जांच की जा रही है।

हम नई राष्ट्रीय खेल नीति लेकर आ रहे हैं : केन्द्रीय खेल मंत्री

भोपाल। केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने कहा कि हमारे युवा देश की आस हैं और अपेक्षा भी। हम इन्हें फिर से फिट रखने की कोशिश कर रहे हैं। देश में खेलों की अधोसंरचनाओं का विकास किया जा रहा है। हम बहुत जल्द नई राष्ट्रीय खेल नीति लेकर आएंगे। इसमें खेलों, खेल अधोसंरचनाओं, खिलाड़ियों और प्रशिक्षकों के व्यापक स्तर पर प्रशिक्षण के लिए कार्ययोजना बनाकर काम करेंगे। केंद्रीय मंत्री डॉ. मांडविया रविवार को भोपाल प्रवास के दौरान गौतम नगर में फिट इंडिया क्लब के प्रथम चरण का लोकार्पण एवं दूसरे चरण के भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हम 2036 में देश में ओलंपिक खेल आयोजित कराना चाहते हैं। इसके लिए हमें देश की खेल अधोसंरचनाओं का विकास कर वैश्विक स्तर पर टॉप-टेन कंट्री में आना है। हम 9 से 15 वर्ष के सभी खिलाड़ियों को सभी प्रकार के अवसर देंगे। उनके आगे आने के बाद हम उन्हें सभी जरूरी प्रशिक्षण देकर उनके आहार पर विशेष ध्यान देंगे। सरकार हर खिलाड़ी की प्रतिभा के अनुसार उसके खेल का विकास कर उसे और हुनरमंद बनाएगी।

देशवासी मताधिकारों का उपयोग कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सशक्त करें: मोदी

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में मतदान प्रक्रिया को आधुनिक और मजबूत बनाने के लिए चुनाव आयोग को धन्यवाद दिया और साथ ही देशभर में निष्पक्ष चुनाव कराने की आयोग की प्रतिबद्धता की सराहना की। चुनाव आयोग की स्थापना के दिन 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है। प्रधानमंत्री ने इसका जिक्र करते हुए देशवासियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में अपने मताधिकार का उपयोग करने और देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सशक्त करने की अपील की।

मन की बात का 118वां एपीसोड अगले सप्ताह गणतंत्र दिवस आयोजन के चलते अंतिम रविवार के स्थान पर आज तीसरे रविवार को प्रसारित किया गया। इस एपीसोड में प्रधानमंत्री ने कुंभ से लेकर अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों से श्रोताओं को अवगत कराया और देश में हो रहे पर्यावरण और समाज परिवर्तन के कार्यों की जानकारी दी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम मन की बात में संविधान लागू होने के 75 वर्ष पूरे होने पर संविधान सभा में चचाओं

में भाग लेते हुए डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के ऑडियो क्लिप सुनाएं। इसमें डॉ. अंबेडकर ने संविधान सभा को एक मत होने, डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के मानवीय मूल्यों और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी अवसरों की समानता पर अपनी बात रख रहे थे।

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में आयोजित कुंभ, दक्षिण की नदियों के तटों पर आयोजित होने वाले पुष्करम और पश्चिम बंगाल के गंगा सागर मेले के सुंदर आयोजनों और विहंगम दृश्यों को मन की बात का हिस्सा बनाते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पर्व भारत के लोगों को भारत की परंपराओं से जोड़ते हैं। उन्होंने कहा कि हजारों वर्षों से चली आ रही इस परंपरा में कहीं कोई भेदभाव या जातिवाद नहीं है, तभी तो कुंभ को एकता का महाकुंभ कहा जाता है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार उत्तर भारत में प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में कुंभ का आयोजन होता है। इसी प्रकार दक्षिण में गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा और कावेरी नदी के तटों पर पुष्करम का आयोजन होता है। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में गंगा सागर मेले में संक्रांति के अवसर पर पूरी दुनिया से आए लाखों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई। वर्ष-2025 में भारत की अंतरिक्ष में ऐतिहासिक उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इस पर हम सभी भारतीयों को गर्व करना चाहिए। उन्होंने इस दौरान भारतीय स्पेस टैक स्टार्टअप बेंगलुरु के पिक्सेल के बारे में बताया जिसने भारत का पहला निजी सैटेलाइट कांस्टेलेशन फायरफ्लाई सफलतापूर्वक पर लॉन्च किया है। उन्होंने अंतरिक्ष के क्षेत्र में स्पेस डॉकिंग की उपलब्धि का जिक्र किया। वहीं, उन्होंने बताया कि आईआईटी मद्रास का एक्सटेमकेंद्र अंतरिक्ष में मैन्युफैक्चरिंग के लिए कई नई तकनीक का पर काम कर रहा है। मन की बात में इस बार भी प्रधानमंत्री ने पर्यावरण की दृष्टि से देशभर में हो रहे सराहनीय कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि असम के नौगांव में हाथियों से जुड़ी कई घटनाएं होती थी। इसको देखते हुए गांव वालों ने हाथी बंधु नाम से एक टीम बनाई और करीब 800 बीघा बंजर भूमि को घास युक्त किया। इसके चलते हाथियों का आबादी और खेतों में जाना काम हो गया। साथ ही उन्होंने इस बात पर खुशी जाहिर की कि पिछले दो महीनों में भारत ने दो नए टाइगर रिजर्व जोड़े हैं- छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास-तमोर पिंगला और मध्य प्रदेश में रातापानी।

2047 तक भारत को विकसित देश बनाएंगे : राजनाथ सिंह

एजेंसी

जौनपुर : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत सबसे बड़ी डिजिटल अर्थव्यवस्था बन चुका है। शहर से गांव तक सबसे ज्यादा 5 जी यूजर्स है। हम 2047 तक भारत को विकसित देश बनाएंगे।

रक्षा मंत्री राजनाथ से रविवार को उत्तरप्रदेश में जौनपुर जिले के निजामुद्दीनपुर गांव में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता जगत नारायण दुबे के आवास पर आयोजित मांगलिक समारोह में भाग लेने के पश्चात पत्रकारों से वार्ता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज भारत कुछ बोलता है, तो सारी दुनिया कान खोल कर सुनती है कि भारत बोल क्या रहा है।

विज्ञानी सेना से जुड़े उपकरण भारत की धरती पर बना रहे हैं और दूसरे देशों को भी एक्सपोर्ट कर रहे हैं। देश में 1.30 लाख स्टार्टअप काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज देश के युवाओं को भारत का इतिहास पढ़ना चाहिए, हमारे इतिहास में हर क्षेत्र में भारत की उपलब्धि व्याप्त है।

श्री सिंह ने पत्रकारों के सवालों का जबाब देते हुए कहा कि गुलाम जम्मू कश्मीर भारत का मुकुट मणि है और इसके बिना जम्मू कश्मीर अधूरा है, पाकिस्तान के लिए यह एक विदेशी क्षेत्र से अधिक कुछ नहीं है वह इसका इस्तेमाल आतंक को शह देने व भारत विरोधी दुष्प्रचार के लिए कर रहा है। रक्षा मंत्री ने गुलाम जम्मू कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग करार दिया और साथ ही पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि गुलाम जम्मू कश्मीर में आतंकी ट्रेनिंग कैम्प व लॉन्चिंग पैड खत्म कर दे नहीं तो उचित जवाब दिया जाएगा। रक्षा मंत्री ने इस वाक्य से पाकिस्तान को आतंकी शिविरों पर सर्जिकल स्ट्राइक व बालाकोट स्ट्राइक की याद भी दिला दी।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान जम्मू कश्मीर में आतंक को शह देने की साजिशें निरंतर जारी रखे हुए हैं। गुलाम जम्मू कश्मीर के प्रधानमंत्री अनवर उल हक के भारत विरोधी दुष्प्रचार पर रक्षा मंत्री ने कहा कि पाकिस्तान वहां लोगों को धर्म के नाम पर भारत के खिलाफ भड़काने की कोशिश कर रहा है और वहां के निवासियों पर अत्याचार करता है।

दिल्ली विस चुनाव: कुल 1522 नामांकन पत्र भरे गए, 1040 हुए स्वीकृत

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के लिए नामांकन प्रक्रिया पूरी हो गई है। निर्वाचन आ ैग के अनुसार कुल 1522 नामांकन पत्र दाखिल किए गए। इनमें से 477 खारिज किए गए। इस तरह कुल 1040 नामांकन पत्र स्वीकृत हुए। सबसे ज्यादा नामांकन नई दिल्ली विधानसभा सीट से भरे गए। यहां 29 उम्मीदवारों ने 40 नामांकन पत्र दाखिल किए। इस सीट पर आम आदमी पार्टी (आआपा) से पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, भाजपा से प्रवेश वर्मा और पूर्व सीएम स्व. शीला दीक्षित के बेटे संदीप दीक्षित मैदान में हैं। शुरूआत से ही यह सीट हाई प्रोफाइल बनी हुई है। वहीं, सबसे कम नामांकन कस्तूरबा नगर सीट पर हुआ है। इस सीट से कुल छह उम्मीदवारों ने नौ नामांकन पत्र भरे हैं। यहां से आआपा ने रमेश पहलवान, भाजपा ने नीरज बसोया और कांग्रेस ने अभिषेक दत्त को प्रत्याशी बनाया है।

झारखंड में एक बार फिर शुरू होगा एकलव्य और आश्रम विद्यालय : चमरा

बिभा संवाददाता

रामगढ़। झारखंड के अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री चमरा लिंडा हजारीबाग जाने के दौरान रविवार को रामगढ़ के मांडू में रुके। यहां झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव फागू बेसरा ने उनका स्वागत किया।

इस दौरान मीडिया से बात करते हुए चमरा लिंडा ने कहा कि झारखंड में एक बार फिर एकलव्य विद्यालय और आश्रम विद्यालय की शुरूआत की जाएगी। जिन स्थानों पर पहले से इन विद्यालयों का निर्माण हो चुका है, वहां पढ़ाई अभी बंद है। लेकिन सरकार योजनाबद्ध तरीके से उन विद्यालयों में शिक्षा देने की शुरूआत करेगी। आदिवासी समाज के बच्चों को उच्च शिक्षा उपलब्ध हो, इसके लिए हेमंत सोरेन की सरकार ने पहले भी बड़े फैसले लिए हैं। यहां के बच्चों को पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजने का फैसला भी सरकार ने लिया है। कई बच्चे स्कॉलरशिप पर वहां पढ़ाई कर रहे हैं। लेकिन देश में भी झारखंड के बच्चे बेहतर सेवा दे सकें, इसलिए यूपीएससी, इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई के लिए भी सरकार योजना बना रही है। यूपीएससी की तैयारी करने के लिए दिल्ली में शिक्षा उपलब्ध कराया जाएगा। रांची में भी नीट, आईआईटी के तहत इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई छात्रों को कराई जाएगी। इन सभी मुद्दों पर विभाग अपनी योजना तैयार कर रहा है।

पिछले 10 साल में भारत में बिजनेस करना हुआ मुश्किल: कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि पिछले 10 साल में भारत में इज ऑफ डूइंग बिजनेस यानी व्यापार करने में आसानी को अनइज ऑफ डूइंग बिजनेस यानी व्यापार करने में असुविधा में बदल दिया गया है। कांग्रेस ने इसके तीन कारण बताते हुए आगामी बजट में रेड राज और कर आतंक को खत्म करने की मांग की।

रविवार को कांग्रेस महासचिव (संचार) जयराम रमेश ने एक वक्तव्य जारी कर कहा कि सरकार को आगामी बजट में रेड राज और कर आतंक को खत्म करना होगा। उत्पादन क्षेत्र की नौकरियों की रक्षा करने के लिए कार्रवाई करनी होगी और वेतन और क्रय शक्ति को बढ़ाने के लिए निर्णायक कदम उठाने होंगे।

कांग्रेस नेता रमेश ने कहा कि पिछले दशक में देश में निजी निवेश में कमी देखने को मिली है। निवेश का सबसे बड़ा भाग निजी घरेलू निवेश 2014 के बाद से लगातार कमजोर हो रहा है। डॉ मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान यह मजबूती से सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 25 से 30 प्रतिशत के बीच में रहा था। पिछले 10 वर्षों में यह गिरकर 20 से 25 प्रतिशत पर आ गया है। निवेश में कमी के साथ-साथ उच्च नेट वर्थ वाले लोगों का बड़े पैमाने पर पलायन भी हुआ है। पिछले एक दशक में 17.5 लाख से अधिक भारतीयों ने दूसरे देशों की नागरिकता ली है। एक अनुमान के मुताबिक 2022 से 2025 के बीच 21,300 अरबपतियों ने भारत छोड़ा है।

भारतीय महिला टीम ने रचा इतिहास, नेपाल को हराकर जीता खो खो विश्व कप 2025 का खिताब

एजेंसी

नई दिल्ली। गति, रणनीति और कौशल के बेहतरीन प्रदर्शन के साथ भारतीय महिला खो खो टीम ने इतिहास रच दिया है। रविवार रात इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में खेले गए खो खो विश्व कप 2025 के फाइनल मुकाबले को टीम इंडिया ने जीत लिया है। ब्लू जर्सी में खेल रहीं भारतीय महिलाओं ने खिताबी मुकाबले में शुरूआत से ही नेपाल पर दबदबा बनाये रखा और 78-40 के एकतरफा स्कोर के साथ जीत दर्ज की।

भारतीय आक्रमण ने टर्न 1 में शानदार शुरूआत की। तीन बैच में, नेपाल की महिलाएँ 7 मौकों पर आसान टच से आउट हो गईं,

जिसमें भारत के नाम 14 अंक रहे। कप्तान प्रियंका इंगले अपनी टीम के लिए बेहतरीन फॉर्म में थीं और उनके नाम कई टच पॉइंट थे, क्योंकि भारतीयों ने शानदार शुरूआत की। यह ब्लू जर्सी में महिलाओं को 34 अंक तक ले जाने और नेपाल टीम के लिए एक भी ड्रीम रन रोकने के लिए पर्याप्त था।

मनमती धामी ने वैष्णवी पवार को आउट किया, और समझाना बी ने प्रियंका इंगले को बाहर किया, लेकिन चैथरा बी ने भारत के लिए टर्न 2 का पहला बैच ड्रीम रन में ले लिया। हालांकि यह लंबे समय तक नहीं चला, क्योंकि दीपा ने कुछ ही क्षणों बाद ऑल आउट पूरा कर लिया। इससे टीम फिर से खेल में आ गई, लेकिन वे टर्न 2 के अंत में केवल 24 अंक ही बना पाए, जबकि हाफ टाइम तक 11 अंकों की कमी थी।

टीम इंडिया एक बार फिर टर्न 3 में हावी रही, जिसने नेपाल के डिफेंडरों को कभी भी अपनी लय में नहीं आने दिया। दीपा बीके नेपाल के लिए नियमित खिलाड़ी थीं, लेकिन यह पूरी तरह से बेकार गया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि भारतीय ट्रॉफी के करीब पहुंच गए। चैत्र बी भारत के लिए ड्रीम रन की संचालक थीं, जिन्होंने टर्न 4 में स्कोर को 78 अंकों तक पहुंचाया। उनका बैच 5 मिनट और 14 सेकंड तक चला, जिससे भारत के पक्ष में खेल समाप्त हो गया और उन्हें खो खो विश्व कप 2025 का पहला चैंपियन घोषित किया गया। भारत के गौरव की राह में ग्रुप चरणों में दक्षिण कोरिया, ईरान और मलेशिया पर शानदार जीत शामिल थी। इसके बाद उसने क्वार्टर फाइनल में बांग्लादेश के खिलाफ जीत हासिल की और फिर सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका पर शानदार जीत दर्ज की। यह ऐतिहासिक उपलब्धि न केवल भारत को उद्घाटन विश्व चैंपियन का ताज पहनाती है, बल्कि वैश्विक मंच पर इस स्वदेशी खेल के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण भी है।

मैच पुरस्कार:मैच की सर्वश्रेष्ठ अटैकर: अंशु कुमारी (भारत)मैच की सर्वश्रेष्ठ डिफेंडर: मनमती धानी (नेपाल)मैच की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी: चैथरा बी (भारत)

गणतंत्र दिवस परेड में फ्लाईपास्ट करेंगे 40 एयरक्राफ्ट, ध्रुव और तेजस नहीं भरेंगे उड़ान

एजेंसी

नई दिल्ली। देश के गणतंत्र दिवस पर होने वाली परेड के लिए सेना के जवान कड़ाके की ठंड में रिहर्सल करके पसीना बहा रहे हैं। परेड के दौरान कर्तव्य पथ पर झांकियों के माध्यम से 'स्वर्णिम भारतः विरासत और विकास' को प्रदर्शित किया जाएगा। वायु सेना के 40 एयरक्राफ्ट फ्लाईपास्ट करेंगे, जिनमें 22 फाइटर एयरक्राफ्ट होंगे। इस बार एडवांस लाइट हेलीकॉप्टर ध्रुव और स्वदेशी

लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट तेजस परेड के दौरान उड़ान भरते नहीं दिखेंगे। गणतंत्र दिवस परेड में इस बार भारतीय वायु सेना की कोई भी झांकी नहीं होगी।

वायु सेना के विंग कमांडर मनीष शर्मा ने बताया कि कुल 40 एयरक्राफ्ट रिपब्लिक-डे परेड का हिस्सा बनेंगे। फ्लाईपास्ट में 22 लड़ाकू विमानों, 11 परिवहन विमानों और 7 हेलीकॉप्टरों की शक्ति का प्रदर्शन किया जाएगा। इनमें राफेल, सुखोई-30 और सी-130जे हरक्यूलिस कर्तव्य पथ पर हवाई करतब दिखाएंगे। इसके अलावा तीन डोर्नियर विमान भी गणतंत्र दिवस की परेड का हिस्सा होंगे। इस बार एडवांस लाइट हेलीकॉप्टर ध्रुव और स्वदेशी लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट तेजस परेड के दौरान उड़ान भरते नहीं दिखेंगे। इस माह की शुरूआत में गुजरात के पोरबंदर में भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) का एडवांस लाइट हेलीकॉप्टर ध्रुव नियमित प्रशिक्षण उड़ान के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, इसीलिए एएलएच ध्रुव को अभी भी जमीन पर ही रखा गया है और इसका इस्तेमाल फ्लाईपास्ट के लिए नहीं किया जाएगा।

विंग कमांडर ने स्वदेशी लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट तेजस को परेड का हिस्सा न बनाने के बारे में बताया कि इस बार भारतीय वायु सेना ने गणतंत्र दिवस परेड के लिए नई पॉलिसी तैयार की है। इसके मुताबिक, तेजस लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट को शानदार प्रदर्शन के बावजूद सिंगल इंजन होने के कारण बाहर रखा गया है। हालांकि, तेजस ने पहले भी गणतंत्र दिवस परेड के अलावा दुबई और सिंगापुर के अंतरराष्ट्रीय एयर शो में उड़ान भरी है। उन्होंने बताया कि फ्लाईपास्ट को दो भागों में बांटा गया है। दूसरे हिस्से में जटिल संरचनाएं और सटीक युद्धाभ्यास दिखाए जाएंगे।

बिहार के कटिहार नाव हादसे में तीन लोगों की मौत, सात लापता, मुख्यमंत्री ने जताया शोक

एजेंसी

कटिहार। बिहार में कटिहार जिले के अमदाबाद थाना क्षेत्र अंतर्गत दक्षिणी करीमुल्लापुर पंचायत के गोला घाट पर रविवार सुबह दर्दनाक नाव हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई।

मृतकों में अमदाबाद निवासी पवन मंडल (65वर्ष) पिता बस्तम मंडल, प्राणपुर निवासी सुधीर मंडल (70वर्ष) तथा अजमनागर निवासी भोली देवी का तीन वर्षीय पुत्र शामिल है। समाचार लिखे जाने तक सात नाव सवार लोग लापता है। लगभग 18 यात्रियों को लेकर एक नाव मनिहारी अनुमंडल के अमदाबाद ब्लॉक के दक्षिण करीमल्लूपुर मेघू टोला से सकरी (झारखंड) जा रही थी।

मुख्यमंत्री ने जताया शोक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कटिहार जिले के अमदाबाद में गंगा नदी में नाव डूबने से 03 लोगों की हुयी मौत पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि यह घटना अत्यंत दुखद है। मुख्यमंत्री ने इस घटना में लापता अन्य लोगों की समुचित खोजबीन जारी रखने का निर्देश दिया है।

मुख्यमंत्री ने मृतक के परिजनों को चार-चार लाख रुपए अनुग्रह अनुदान देने के निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिजनों को दुःख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

इस संदर्भ में जिला प्रशासन ने बताया नाव हादसे के बाद आठ लोगों को स्थानीय गोतखार एवं एसडीआरएफ टीम द्वारा बचाव कर लिया गया है एवं शेष का बचाव और तलाशी अभियान जारी है। जिन लोगों को बचा लिया गया है उनका इलाज चल रहा है। बचाए गए लोगों के अनुसार सात और लोग लापता हैं। सात में से दो नदी के विपरीत किनारे यानी गदाई दियारा में पहुंच गए हैं। मनिहारी एसडीएम ने बताया कि एसडीआरएफ की टीम बाकी पांच लोगों के लापता होने की सूचना के साथ उनका पता लगाने व बचाव करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने बताया कि अमदाबाद सीओ और एसएचओ मेघू टोला में राहत अभियान की निगरानी कर रहे हैं। मृत व्यक्तियों के परिवार को आपदा विभाग के नियमानुसर मुआवजा देने हेतु संबंधित को निदेश दिया गया है और लापता व्यक्तियों के लिए खोज व बचाव हेतु एसडीआरएफ द्वारा अभियान जारी है।

संक्षिप्त खबरें

छात्रवृत्ति न मिलने को लेकर छात्रों ने कल्याण मंत्री से की मुलाकात

रांची(बिभा): स्कॉलरशिप न मिलने की समस्या से जूझ रहे छात्रों ने कल्याण मंत्री चमरा लिंडा से मुलाकात की और अपनी समस्याएं साझा की। छात्र नेता मो० समी ने मंत्री से कहा कि समय पर राज्य के छात्रों को छात्रवृत्ति नही मिलने से छात्र अपने सेमेस्टर फी भर नही पा रहे हैं जिसके कारण छात्रों के साथ- साथ अभिभावक भी मानसिक तनाव जैसी समस्या से जूझ रहे हैं। इस मानसिक तनाव और फिक्र के कारण छात्र अपने अध्यन मे सही से फोकस नही कर पा रहे हैं और इसका दुष्प्रभाव उनके रिजल्ट पर देखने को मिल सकता है। छात्र आर्थिक रूप से कमजोर हैं और स्कॉलरशिप की राशि के लिए उनका आवेदन लंबे समय से लंबित पड़ा हुआ है। छात्रों ने मंत्री से आग्रह किया कि उनके आवेदन की जल्द निपटान हो ताकि वे अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। इस दौरान, कल्याण मंत्री ने छात्रों की समस्याओं को ध्यान से सुना और कहा कि विभाग को पैसे भेज दिए गए हैं बहुत ही जल्द सभी के अकाउंट पर पैसे क्रेडिट कर दिए जाएंगे। साथ ही साथ उन्होंने कहा, हम हर छात्र की शिक्षा को महत्व देते हैं, और राज्य के छात्रों के मामले में हमेशा उचित कदम उठाए जाएंगे। मंत्री ने यह भी कहा कि विभाग इस प्रक्रिया को और सरल और पारदर्शी बनाने के लिए कार्य कर रहा है। छात्रों ने मंत्री का धन्यवाद किया और उम्मीद जताई कि उनकी समस्या जल्द सुलझ जाएगी। इस मौके पर फरीद अंसारी, मो० सनाउल्लाह, मो० सैफ, मो० कैफ व अन्य छात्र मौजूद थें।

रांची नगर निगम में धांधलीः जन्म प्रमाण पत्र विवाद पर भाजपा ने उठाई जांच की मांग

रांची(बिभा) : झारखंड कैडर के आईएएस अधिकारी राजीव रंजन के बेटे के नाम पर तीन-तीन जन्म प्रमाण पत्र जारी होने के मामले पर भाजपा ने उच्च स्तरीय जांच की मांग की है। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता अजय साह ने इस घटना को झारखंड में व्याप्त भ्रष्टाचार का एक चिंताजनक उदाहरण बताया है। श्री साह ने कहा कि रांची नगर निगम में आम नागरिकों को अपने बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के लिए महीनों तक चक्कर लगाने पड़ते हैं। अधिकारियों की लापरवाही के कारण न जाने कितने बच्चों का स्कूल में दाखिला तक नहीं हो पाता। वहीं, दूसरी ओर प्रभावशाली अधिकारी अपने रसूख का इस्तेमाल कर नियम-कानूनों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यह मामला पासपोर्ट में संशोधन से जुड़ा हुआ है, जिससे यह आंतरिक सुरक्षा के लिहाज से भी गंभीर हो जाता है। यदि नगर निगम इतने आसानी से फर्जी जन्म प्रमाण पत्र जारी कर देता है, तो संभव है कि पहले भी ऐसे कई मामले सामने आए हों। श्री साह ने मांग की कि इस पूरे प्रकरण में दोषी आईएएस अधिकारी और नगर निगम के जिम्मेदार अधिकारियों पर फजीवाड़े के कानून के तहत मामला दर्ज होना चाहिए। उन्होंने भारतीय दंड संहिता की धारा 336 (फजीवाड़ा) के तहत कार्रवाई की मांग की। इसके साथ ही, श्री साह ने इस मामले को नगर निकाय चुनावों से भी जोड़ा। उन्होंने कहा कि झारखंड में नगर निकाय और निगम पूरी तरह अधिकारियों के भरोसे चल रहे हैं, जहां जवाबदेही लगभग न के बराबर है। जनप्रतिनिधियों की गैर-मौजूदगी ने इन संस्थानों को भ्रष्टाचार के अड्डे में बदल दिया है। उन्होंने मांग की कि इस भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए सख्त कदम उठाए जाएं और दोषियों को दंडित किया जाए।

बाबूलाल मरांडी ने मोदी सरकार का जताया आभार

रांची(बिभा) : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवम पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का आभार जताया है। श्री मरांडी ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा झारखंड के धनबाद जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग-19 के बरवा अड्डा - पानागढ़ के निरसा और गोबिंदपुर क्षेत्र में मौजूदा फुटपाथ के पुनर्निर्माण/पुनर्वास सहित दो 6-लेन एलिवेटेड फ्लाईओवर के निर्माण के लिए 1130.54 करोड़ रुपए की लागत के साथ स्वीकृति दी गई है। कहा कि झारखंड और बंगाल को जोड़ने वाली इस महत्त्वपूर्ण सड़क पर फ्लाईओवर की स्वीकृति प्रदान कर कोयलांचल की यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी एवं केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी जी का झारखंड की जनता की ओर से आभार।

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर सतबरवा में जागरूकता समारोह का आयोजन

रांची(बिभा) : राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर रविवार को सतबरवा प्रखंड अंतर्गत धवादीह सीएमटीसी में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम उमंग परियोजना के अंतर्गत झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी और पीसीआई इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ।इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किशोरियों और माताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना था। इस वर्ष राष्ट्रीय बालिका दिवस का विषय उज्ज्वल भविष्य के लिए लड़कियों को सशक्त बनाना था जो इस बात पर जोर देता है कि लड़कियों को समान अवसर दिये जायें ताकि वे एक संतोषजनक जीवन जी सकें और अपने भविष्य को आकार दे सकें।इस संदर्भ में उमंग परियोजना की भूमिका और उद्देश्यों पर विस्तार से जानकारी पीसीआई इंडिया की प्रतिनिधि सुमन कुमारी ने दी।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जेएसएलपीएस की जिला कार्यक्रम प्रबंधक अनीता केरकेट्टा ने कहा कि सरकार द्वारा घोषित इस वर्ष के विषय पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।उन्होंने किशोरियों को सोशल मीडिया के विवेकपूर्ण उपयोग और शिक्षा एवं विवाह से जुड़े निर्णय सोच-समझकर लेने की सलाह दी। जिला परिषद प्रतिनिधि सुधा देवी ने किशोरियों से आग्रह किया कि वे इस कार्यक्रम में सीखी गई बातों को अपने जीवन में अमल में लाएं।नई संस्कृति सोसाइटी के प्रतिनिधि अजीत पाठक ने राष्ट्रीय बालिका दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए हेल्पलाइन नंबर 1098 की जानकारी दी।उन्होंने कहा कि बाल विवाह को रोकने का संकल्प लें और अपने समाज में इसे रोकने का प्रयास करें। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन से हुई।इसके बाद माँ-बेटी की साझेदारी को उजागर करने के लिए रंगोली प्रतियोगिताका आयोजन किया गया जिसमें प्रथम पुरस्कार आकांक्षा कुमारी,द्वितीय पुरस्कार रेखा कुमारी और तृतीय पुरस्कार साक्षी कुमारी को दिया गया। इसके अतिरिक्त स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में भी बालिकाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।इसमें प्रथम स्थान आकांक्षा कुमारी,द्वितीय स्थान हर्षिता पाठक और तृतीय स्थान सृष्टि सिंह को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जेएसएलपीएस की जिला कार्यक्रम प्रबंधक,धवादीह मुखिया रिंकी देवी, जिला परिषद प्रतिनिधि सुधा देवी, यूनिसेफ-एक्सआईएसएस के जिला प्रतिनिधि डॉ. तबरेज,नई संस्कृति सोसाइटी के प्रतिनिधि अजीत पाठक,सामाजिक कार्यकर्ता चंदा झा,प्रदान के जिला प्रतिनिधि ओमप्रकाश कुमार समेत अन्य मौजूद थे।

68वीं राष्ट्रीय स्कूली खेल प्रतियोगिता अंतर्गत अंडर 19 बालक-बालिका वर्ग टेनिस प्रतियोगिता का समापन

बालक वर्ग में हरियाणा और बालिका में तेलंगाना की टीम बनी विजेता

बिभा संवाददाता

रांची : 68वीं राष्ट्रीय स्कूली खेल प्रतियोगिता अंतर्गत अंडर 19 बालक-बालिका वर्ग टेनिस प्रतियोगिता का आज समापन हो गया। इस प्रतियोगिता में झारखंड की टीम ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए रजत पदक प्राप्त किया है। प्रतियोगिता के बालक वर्ग में हरियाणा की टीम विजेता और महाराष्ट्र की टीम उपविजेता बनी। बालिका वर्ग में तेलंगाना की टीम विजेता और दिल्ली की टीम उपविजेता बनी। अंडर 19 बालक वर्ग साइकिलिंग प्रतियोगिता में तेलंगाना के गुंडाबड़िन्ना साईं चरण यादव को स्वर्ण पदक, असम के रूपज्योति को रजत पदक और राजस्थान के हरी प्रकाश को कांस्य पदक मिला है। बालिका वर्ग अंडर 19 साइकिलिंग प्रतियोगिता में महाराष्ट्र की आकांक्षा को स्वर्ण पदक, महाराष्ट्र के ही आशावरी रजवाने को रजत पदक और असम

की देवी चबुकधारा को कांस्य पदक मिला है। अंडर 17 बालक वर्ग साइकिलिंग प्रतियोगिता में मणिपुर के युमनाम सुशिल सिंह को स्वर्ण पदक, झारखंड के अर्जुन कुमार को रजत पदक और दिल्ली के नरेनगबम सिंह को कांस्य पदक मिला है। अंडर 17 बालिका वर्ग साइकिलिंग प्रतियोगिता में पंजाब की प्रभजोत कौर को स्वर्ण पदक, महाराष्ट्र की गायत्री को रजत पदक और तमिलनाडु की जय ज्योत्सना को कांस्य पदक मिला है। अंडर 14 बालक वर्ग प्रतियोगिता में मणिपुर के नरेनगबम सिंह को स्वर्ण पदक, मणिपुर के ही चुंगखम को रजत पदक और तमिलनाडु के मनीष को कांस्य पदक मिला है। अंडर 14 बालिका वर्ग साइकिलिंग प्रतियोगिता में राजस्थान की दीक्षा को स्वर्ण पदक, पंजाब की पलकप्रीत कौर को रजत पदक और महाराष्ट्र की दन्यानेश्वरी को कांस्य पदक मिला है।

अंडर 19 लॉन टेनिस एकल प्रतियोगिताओ में दिल्ली और महाराष्ट्र का दबदबा

अंडर 19 लॉन टेनिस एकल प्रतियोगिताओ में दिल्ली और महाराष्ट्र की टीम का दबदबा रहा। अंडर 19 बालिका वर्ग एकल लॉन टेनिस प्रतियोगिता में दिल्ली की याशिका को स्वर्ण पदक, दिल्ली की ही कुमकुम को रजत पदक और दिल्ली की ही दिव्या को कांस्य पदक प्राप्त हुआ है। अंडर 19 बालक वर्ग एकल लॉन टेनिस प्रतियोगिता में CISCE के मन्नान अग्रवाल को स्वर्ण पदक, महाराष्ट्र के ओमकार शिंदे को रजत पदक और महाराष्ट्र के ही लक्ष्य को कांस्य पदक मिला है।

अंडर 19 साइकिलिंग (ट्रैक) प्रतियोगिता में झारखंड का शानदार प्रदर्शन देखने को मिला है। अंडर 19 बालिका वर्ग साइकिलिंग में झारखंड की संजू कुमारी, सिंधु लता हेम्ब्रम और तारा मिंज को रजत पदक मिला है। अंडर 19 बालक वर्ग साइकिलिंग में झारखंड के दीपक उरांव, ऋतिक मिंज और सुशांत उरांव को कांस्य पदक मिला है। अंडर 19 बालक वर्ग साइकिलिंग प्रतियोगिता में राजस्थान के दिनेश गट, हरी प्रकाश और शिवरतन को स्वर्ण पदक, महाराष्ट्र के हरीश, रविराज और समरजीत को रजत पदक मिला है। झारखंड को तीसरे स्थान पर कांस्य पदक मिला है। अंडर 19 बालिका वर्ग साइकिलिंग प्रतियोगिता में महाराष्ट्र की आशावरी, आकांक्षा और प्रेरणा को स्वर्ण पदक, तमिलनाडु की जे निरायिमथी और टी कार्थियायनी को कांस्य पदक मिला है। इस प्रतियोगिता में झारखंड दूसरे स्थान पर रहा और राज्य को रजत पदक प्राप्त हुआ है। अंडर 17 बालक वर्ग साइकिलिंग प्रतियोगिता में झारखंड के अर्जुन कुमार को रजत पदक मिला है।

सीएम ने झारखंड के विजेताओं को दी बधाई

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, विभागीय मंत्री रामदास सोरेन, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता सचिव उमाशंकर सिंह, राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक शशि रंजन, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी धीरसेन सोरेंग समेत खेल कोषांग के अन्य पदाधिकारियों ने टेनिस और साइकिलिंग (ट्रैक) प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करने वाले झारखंड के खिलाड़ियों को पदक जीतने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

68वीं राष्ट्रीय स्कूली खेल प्रतियोगिता अंतर्गत अंडर 14/17/19 बालक-बालिका वर्ग साइकिलिंग (ट्रैक) प्रतियोगिता का सोमवार (20 जनवरी, 2025) को समापन होगा। इस प्रतियोगिता में अबतक झारखंड की टीम का शानदार प्रदर्शन देखने को मिला है। राज्य को कल भी झारखंड के खिलाड़ियों से पदक की उम्मीद है।

राष्ट्रीय पुस्तक मेला में 'समय के सवाल' श्रृंखला के तहत प्रकाशित हरिवंश की 10 पुस्तकों पर हुआ संवाद

बिभा संवाददाता

रांची : राष्ट्रीय पुस्तक मेला, रांची में लेखक-पत्रकार हरिवंश की 10 किताबों पर संवाद-परिचर्चा का आयोजन हुआ। 'समय के सवाल' श्रृंखला के तहत दस खंडों में प्रकाशित इन किताबों में देश-दुनिया के विविध विषयों के साथ ही दो विशेष खंड झारखंड पर केंद्रित है। ये आलेख हरिवंश के चार दशक की पत्रकारिता में विभिन्न प्रकाशन संस्थानों/पत्र-पत्रिकाओं में लिखे गये आलेखों का संकलन हैं। उल्लेखनीय है कि चार दशक की पत्रकारिता में हरिवंश ने धर्मयुग, रविवार,

प्रभात खबर जैसे संस्थान के साथ काम किया है। इनमें करीब तीन दशक कार्यक्षेत्र झारखंड ही रहा है।

आयोजन में मुख्य अतिथि, वरिष्ठ पत्रकार-लेखक बलबीर दत्त ने कहा कि एक साथ दस किताबों का लोकार्पण ऐतिहासिक है। यह असंभव इसलिए संभव हुआ क्योंकि हरिवंश खूब लिखते पढ़ते हैं। दत्त ने कहा हरिवंश की ये किताबें 1977 से 2019 तक पर हैं। ये चार दशक पत्रकारिता के लिए अहम कालखंड रहा है। इस कालखंड में हरिवंश ने जनमुद्दों की पत्रकारिता की इसलिए इनका लेखन जन इतिहास भी है।

बीज वक्तव्य देते हुए लेखक-प्राध्यापक और अध्येता रविदत्त वाजपेयी ने कहा कि इस श्रृंखला का नाम समय के सवाल है लेकिन हरिवंश जी अपने लेखन से सवालों का जवाब भी देते हैं। 1948 में कहा गया कि समाचार इतिहास का पहला रफ ड्राफ्ट होता है। लेकिन समय के साथ रफ शब्द हट गया। हरिवंश का लेखन रफ वाला हिस्ट्री नहीं बल्कि समय का प्रामाणिक दस्तावेज है, जिसका हमेशा महत्व है।

सुजीत सिन्हा गैंग के दो बदमाश गिरफ्तार

बिभा संवाददाता

रांची। जिले की ओरमांझी थाना पुलिस ने सुजीत सिन्हा गैंग के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से एक टैब, दो मोबाइल, एक पैकेट डायरी और एक बैग बरामद किए गए हैं। ग्रामीण एसपी सुमित अग्रवाल ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि गिरफ्तार आरोपितों में विक्की वर्मा और आयुष राज शामिल हैं। एसपी ने बताया कि 22 नवंबर, 2024 में ओरमांझी थाना क्षेत्र में दो बदमाश अपाची बाइक पर सवार होकर आये और फायरिंग की। इस दौरान संजीव जायसवाल के साथ काम कर रहे जावेद अंसारी और आजाद अंसारी को एक-एक गोली लगी थी। संजीव जायसवाल ने बताया था कि संगठित गिरोह सुजीत सिन्हा के सदस्यों ने उनसे लेवी मांगी थी और लेवी नहीं देने पर फायरिंग की गई।

एसपी ने बताया कि वारदात के बाद एसआईटी टीम का गठन किया गया। टीम ने एटीएस और रांची जिले की तकनीकी शाखा की मदद से गिरोह के एक आरोपित जिशान शेख उर्फ रिक्की खान को पूर्व में गिरफ्तार किया था। टीम ने अनुंसधान के दौरान एक अपराधी विक्की वर्मा को छत्तीसगढ़ (रायपुर) के गंज थाना क्षेत्र से और एक अपराधी आयुष राज उर्फ छोटू को विकास गोलचक्कर (शालीमार नर्सरी) के पास से गिरफ्तार किया है।

एक दिवसीय भव्य नगर संकीर्तन सह भागवत कथा का हुआ आयोजन

बिभा संवाददाता

रांची : एक दिवसीय भव्य नगर संकीर्तन सह भागवत कथा झारखंड प्रदेश विश्वकर्मा समाज रांची जिला के पूर्व अध्यक्ष एवं छात्र क्लब ग्रुप के मुख्य संयोजक संतोष कुमार के पुनदाग लक्ष्मीनगर स्थित आवास के गृह प्रवेश के प्रथम वर्षगांठ के शुभअवसर पर पुनदाग लक्ष्मीनगर में धूमधाम से संपन्न हुआ। प्रथम चरण मे हरे राम हरे कृष्ण,कृष्ण कृष्ण हरे हरे महामंत्र जाप के साथ पुनदाग लक्ष्मीनगर मुहल्ला मे श्रीमान दास गदाधर दास,सुबल दास प्रभु, रामजतन शर्मा,सुजीत प्रभु, रामबली प्रभु, शंकर प्रभु,रामचंद्र दास प्रभु,रीना माताजी,ज्योति माताजी, श्वेता सिन्हा,पिया बर्मन, वीणाश्री, कुमार गहलोत, कविता होरो, कुमारी नीलम,दीपक राणा,रमेश पंडित, शकुंतला देवी, शोभा देवी, भारती देवी,शंभु शर्मा, सुभाष कुमार,जानकी नंदन राणा, छत्रपाल राम उस्ताद, सुबोध कुमार शर्मा सहित हजारों श्रद्धालुओं के उपस्थिति मे भजन कीर्तन,नाच गान

के साथ भ्रमण किया गया।

दूसरे चरण मे भक्ति वेदांत विद्याभवन गुरुकुल कुटाम सिल्ली के कथाकार श्रीमान श्रीदास गदाधर दास एवं इनकी टीम द्वारा भागवत कथा सुनाई गई। इस मौके पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संतोष कुमार ने कहा अपने घर के गृह प्रवेश के प्रथम वर्षगांठ के शुभअवसर पर यह उत्सव का आयोजन किया गया है और देश,राज्य,घर एवं परिवार की खुशहाली के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है। भक्तिमय भजन संध्या एवं महाप्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम की समापन हुई। इस भक्तिमय कार्यक्रम में आए सभी श्रद्धालुओं के प्रति छात्र क्लब ग्रुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा ने आभार प्रकट करते हुए कार्यक्रम समापन की घोषणा किए।

झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा का 9 फरवरी को खूंटी में केंद्रीय समिति की विस्तारित बैठक व 23 फरवरी को पतरातू डैम में ही प्रशिक्षण शिविर

बिभा संवाददाता

रांची : झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा की कोर कमिटि की बैठक आयोजित की गयी. यह बैठक आगे की रणनीति, कार्यक्रम, नगर निगम/निकाय चुनाव एवं सदस्यता और संगठन विस्तार के लिए रखी गयी थी. बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहु ने किया. बैठक में विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मति से तय किया गया कि अब आगामी 23 फरवरी को पतरातू डैम में ही कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर सह मिलन समारोह का आयोजन किया जायेगा. उसके पूर्व 9 फरवरी को खूंटी में केंद्रीय समिति की विस्तारित बैठक का आयोजन किया जायेगा. इस बैठक की तैयारी की जवाबदेही खूंटी जिला प्रभारी राजन चौधरी, केंद्रीय महासचिव कपिल प्रसाद साहु एवं संगठन महासचिव कृष्णा साहु को दी गयी है. यह भी तय किया गया कि संगठन विस्तार और सदस्यता बढ़ाने के

लिए सभी पदाधिकारी अपने- अपने क्षेत्र में कार्यक्रम आयोजित करेंगे और केंद्रीय नेताओं को आमंत्रित करेंगे. केवल दूसरे पदाधिकारी के भरोसे नहीं रहेंगे. बैठक में नगर निगम और निकाय चुनाव पर चर्चा जारी रखने का निर्णय लिया गया, ताकि समय आने पर सही फैसला लिया जा सके.

इस अवसर पर केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहु ने कहा कि वैश्य समाज के मुद्दों पर सरकार और प्रशासन का ध्यान आकर्षित करने के लिए फिर से संघर्ष का रास्ता अपनाया जायेगा. आगामी विधानसभा सत्र से पहले ओबीसी को 27% आरक्षण, वैश्य आयोग का गठन आदि मांगों को लेकर अभियान चलाया जायेगा और सरकार को याद दिलाया जायेगा. आप सभी तैयारी में लग जाएं.

बैठक में प्रस्ताव पारित कर पतरातू एनटीपीसी के विस्थापितों के आंदोलन का समर्थन किया गया और सरकार एवं प्रबंधन से विस्थापितों की मांगों पर तत्काल सकारात्मक पहल करने की मांग की गई.

बैठक के अंत में वैश्य मोर्चा के केंद्रीय कोषाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद साहु की माता पार्वती देवी के निधन पर शोक व्यक्त किया गया और दो मिनट मौन रख कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई.

इस बैठक में मुख्य रूप से कार्यकारी अध्यक्ष रेखा मंडल, वरीय उपाध्यक्ष रामसेवक प्रसाद, अश्विनी कुमार साहु, केंद्रीय उपाध्यक्ष सह अधिवक्ता सहदेव चौधरी, परशुराम प्रसाद, केंद्रीय महासचिव दिलीप कुमार, कपिल प्रसाद साहु, संगठन महासचिव कृष्णा साहु, अनिल वैश्य, जगदीश साहु, केंद्रीय सचिव गुड्डू साहा, राजेन्द्र साहु, केंद्रीय सदस्य नरेश साहु, खूंटी जिला प्रभारी राजन चौधरी, महिला मोर्चा की कार्यकारी अध्यक्ष दीपारानी कुंज, युवा मोर्चा के सचिव आदित्य पोद्दार उपस्थित थे. जबकि वर्चुअल रूप से कार्यकारी अध्यक्ष मोहन साव, वरीय उपाध्यक्ष सुरेश साहु, महिला मोर्चा की अध्यक्ष रेणू देवी ने अपनी सहमति दी.

पुरोहित का अपने जीवन को निः स्वार्थ बनाना व आदर्श जीवन का प्रदर्शन जरूरीः महाधर्माध्यक्ष विंसेंट आईंद

बिभा संवाददाता

रांचीः रांची महाधर्मप्रांत के महाधर्माध्यक्ष विंसेंट आईंद ने रांची कैथोलिक महाधर्मप्रांत के चान्हो पल्ली में सोसाइटी ऑफ डॉन बॉस्को बैंगलोर प्रोविंस के उपयाजक एलियाजर कुजूर को पुरोहिताभिषेक प्रदान किया।

चान्हो पल्ली में आज पुरोहिताभिषेक समारोह का आयोजन रहा। इस समारोह की शुरूआत राँची कैथोलिक महाधर्मप्रांत के महाधर्माध्यक्ष विंसेंट आईंद ने मिस्सा बलिदान अर्पित कर किया। पुरोहिताभिषेक समारोह के पहले चान्हो पल्ली में महाधर्माध्यक्ष का जोर दार मांदर की ताल में झूमते हुए किया गया। पुरोहित अभिषेक की धर्मविधि की अगुवाई महाधर्माध्यक्ष विंसेंट आईंद ने की। उन्होंने अपने धर्मोपदेश में कहा कि ₹प्रत्येक पुरोहित को निः स्वार्थ जीवन जीना एवं अच्छा आचरण करना महत्वपूर्ण है। उनके अच्छे मार्गदर्शन एवं आचरण से

समाज में सकारात्मक परिवर्तन आता है। इसके साथ ही पुरोहित अपने जीवन को सदा दूसरों को समर्पित करने में तत्पर रहे।₹ उन्होंने उपयाजक एलियाजर कुजूर के अभिषेक के अवसर पर उसे संबोधित करते हुए पुरोहित, शिक्षक तथा चरवाहा के रूप में उसके कार्य का अर्थ समझाया तथा अपनी जिम्मेदारी को निष्ठापूर्ण निर्वाहन करने का संदेश भी दिया। एलियाजर कुजूर के पुरोहित अभिषेक के अवसर पर उनके सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित रहा। विभिन्न प्रस्तुति ने कार्यक्रम को रंगा रंग तथा रोमांचकारी बनाया। पशु पालन, कृषि एवं सहकारी मंत्री, झारखंड सरकार शिल्पी नेहा तिर्की ने अपने संबोधन में नव पुरोहित फा. एलियाजर कुजूर को शुभकामनाएं दीं और सभी को समाज सेवा में अपना योगदान देने का भी आह्वान भी किया। इस समारोह का सीधा प्रसारण रांची कैथोलिक महाधर्मप्रांत के यूट्यूब चैनल पर किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान रांची कैथोलिक महाधर्मप्रांत के महाधर्माध्यक्ष विंसेंट आईंद ने भी दूसरों के लिए जीवन समर्पित करने से प्राप्त खुशी एवं संतुष्टि का ब्योरा देते हुए, सभी को छोटी छोटी सेवा कार्य करने का आह्वान भी किया। बंधु तिर्की ने भी नव पुरोहित फा. इलियाजर कुजूर को शुभकामनाएं एवं बधाईयां देते हुए सभी को समाज की बेहतरी के लिए आगे आने और शिक्षा को बढ़ावा देने का सन्देश दिया।

फा. एलियाजर कुजूर के पुरोहित अभिषेक समारोह के अवसर पर रांची कैथोलिक महाधर्मप्रांत के महाधर्माध्यक्ष विंसेंट आईंद, कृषि, पशु पालन एवं सहकारी मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की, मांडर के पूर्व विधायक बंधु तिर्की जी, चान्हो के पल्ली पुरोहित फा. अलबर्ट लकड़ा, फा. दीपक बाड़ा, फा. युस्तास खलखो, फा. अनुज सोरेंग, महाधर्माध्यक्ष के सचिव फा. असीम मिंज, अन्य पुरोहितगण, विभिन्न धर्म समाज की धर्मबहनें एवं हजारों की संख्या में कैथोलिक ख्रीस्तीय विश्वासी शामिल हुए।

राष्ट्रीय स्वाभिमान दिवस के रूप में मनायी गई राष्ट्रगौरव महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि

बिभा संवाददाता

राँचीः भारत के वीर शिरोमणि महान योद्धा राष्ट्रगौरव महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि को झारखंड क्षत्रिय राजपूत महापंचायत एवं महाराणा प्रताप स्मृति संस्थान की केंद्रीय इकाई ने ₹राष्ट्रीय स्वाभिमान दिवस के रूप में संयुक्त तत्वाधान में मनाया। झारखंड क्षत्रिय राजपूत महापंचायत एवं महाराणा प्रताप स्मृति संस्थान के केंद्रीय इकाई के पदाधिकारियों ने रविवार की अपराह्न को झारखंड प्रदेश के राँची महानगर अंतर्गत पुराना विधानसभा के सामने धुर्वा के सेक्टर टू गोलचक्कर अवस्थित राष्ट्रगौरव महाराणा प्रताप के आधार स्तंभ में स्थापित तैलचित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया।राष्ट्रीय स्वाभिमान दिवस के अवसर पर आयोजित राष्टरत्न महाराणा प्रताप स्मृति समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।इस अवसर पर राष्टरत्न महाराणा प्रताप के संघर्ष व बलिदान से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने का युवाओं ने संकल्प लिया।इस दौरान मौजूद लोगों ने राष्टरत्न महाराणा प्रताप की तरह स्वाधीनता और सम्मान के लिए जीवन भर लड़ने की प्रतिज्ञा की। इस

मौके पर मौजूद गणमान्यों ने अपने संबोधन में एक स्वर से कहा कि महाराणा प्रताप राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक हैं सर्वसमाज उनके प्रति आस्थावान है।देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने उन्होंने अंतिम क्षण तक लड़ाई लड़ी जो समस्त भारतवासियों के लिए प्रेरणा है।महान पराक्रम और स्वाभिमान के प्रतीक वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गणमान्यों ने उनके अदम्य साहस और मातृभूमि के प्रति अटूट समर्पण से सदैव प्रेरणा लेने की बात कही। उपस्थित लोगों ने राष्टरत्न महाराणा प्रताप के विचारों पर चलने का संकल्प लिया और उनकी वीरगाथा को घर घर तक पहुचाने का निर्णय लिया एवं देश पर संकट के समय सभी को एकजुट होकर राष्ट की अखंडता के लिए समर्पित होने का आह्वान किया।

रांची से प्रयागराज महाकुंभ के लिए स्पेशल ट्रेन शुरू, रक्षा राज्य मंत्री ने दिखाई हरी झंडी

बिभास संवाददाता

रांची। रेलवे ने रांची से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज महाकुंभ जाने के लिए रविवार से स्पेशल ट्रेन संख्या 08067 की शुरूआत की है। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने रांची रेलवे स्टेशन से टूंडला के लिए महाकुंभ स्पेशल ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

महाकुंभ स्पेशल ट्रेन को हरी झंडी दिखाने से पहले रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने प्रयागराज जाने वाले श्रद्धालुओं का तिलक लगाकर स्वागत किया। उन्होंने उनसे झारखंड की सुख-समृद्धि के लिए भगवान से आशीर्वाद मांगने का भी आग्रह किया। साथ ही श्रद्धालुओं से अपील की कि महाकुंभ में डुबकी लगाने के बाद वे मां गंगा से राज्य के विकास के साथ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के और अधिक शक्तिशाली और दीर्घायु होने का आशीर्वाद मांगें। उन्होंने महाकुंभ के सुखद संयोग और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व की भी सराहना की। राज्यसभा सदस्य दीपक प्रकाश ने महाकुंभ के लिए रांची से स्पेशल ट्रेन चलाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया।

इस दौरान राज्यसभा सदस्य महुआ माजी, रांची विधानसभा क्षेत्र के विधायक सीपी सिंह और हटिया डीआरएम जसमीत बिंद्रारांची सहित कई अन्य लोग मौजूद थे।

उल्लेखनीय है रांची के सांसद और रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने प्रयागराज महाकुंभ मेले के लिए रांची रेल मंडल से ट्रेन का परिचालन करने को लेकर केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात कर उनसे चर्चा की थी। साथ ही उनसे आग्रह किया था कि कुंभ ट्रेनों का परिचालन रांची के रूट से किया जाए। इससे रांची, रामगढ़, खूंटी, हजारीबाग, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, कोडरमा, चतरा, लातेहार, पुरुलिया, जमशेदपुर और सरायकेला-खरसावां सहित कई जिलों के लोग कुंभ की यात्रा कर सकेंगे।

इसके बाद प्रयागराज में 28 फरवरी तक होने वाले महाकुंभ में रांची से जाने वाली सभी ट्रेनों में नो रूम होने के कारण श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए रेलवे प्रशासन ने रांची से 10 महाकुंभ स्पेशल ट्रेनों का परिचालन शुरू करने का निर्णय लिया था। इसी के तहत टूंडला एक्सप्रेस को रांची होते हुए प्रयागराज के लिए रवाना किया गया।

इन ट्रेनों का होगा परिचालन

भुवनेश्वर से टूंडला (08425) कुंभ मेला स्पेशल 22 जनवरी, 5 फरवरी, 19 फरवरी और 25 फरवरी। टूंडला से भुनेश्वर (08426) कुंभ मेला स्पेशल 24 जनवरी, 7 फरवरी, 21 फरवरी और 28 फरवरी। टिटिलागढ़ से टूंडला (08314) कुंभ मेला स्पेशल 16 जनवरी, 23 जनवरी, 6 फरवरी, 20 फरवरी और 25 फरवरी। टूंडला से तितलागढ़ (08313) कुंभ मेला स्पेशल 18 जनवरी, 25 जनवरी, 8 फरवरी, 22 फरवरी और 1 मार्च। तिरुपति से बनारस (07107) कुंभ मेला स्पेशल 18 जनवरी, 8 फरवरी, 15 फरवरी और 22 फरवरी। बनारस से विजयवाड़ा (07108) कुंभ मेला स्पेशल 20 जनवरी, 10 फरवरी, 17 फरवरी और 24 फरवरी। नरसापुर से बनारस (07109) कुंभ मेला स्पेशल 26 जनवरी, 2 फरवरी। बनारस से नरसापुर (07110) कुंभ मेला स्पेशल 27 जनवरी और 3 फरवरी। इन ट्रेनों का कुल परिचालन 38 बार होगा। यह सभी ट्रेनें रांची से होकर गुजरेगी।

रक्षा राज्य मंत्री ने सफाई कर्मियों के साथ सुनी प्रधानमंत्री के मन की बात

रांची। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात के 118वें एपिसोड को रविवार को रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने अपने आवास पर सैकड़ों सफाई कर्मचारियों के साथ सुनी। इसके बाद उन्होंने विभिन्न वार्डों के सफाई कर्मियों के बीच कंबल का वितरण किया। सेठ ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणादायक बातें सुनकर हम सब को एक ऊर्जा प्राप्त होती है और उसी ऊर्जा के साथ हम लोग आगे काम कर पाते हैं। हमारे देश के ऐसे होनहार जो अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करते हैं उसे जानने का मौका मिलता है। देश में कुंभ का आयोजन हो रहा है। इस कुंभ की व्यवस्था की पूरे विश्व में सराहना हो रही है। इसे जानने का मौका मिल रहा है। सेठ ने कहा कि स्टार्टअप और भारतीय स्पेस डॉकिंग ऐसे कई उत्कृष्ट कार्य, जो आज भारत विश्व के चौथे नंबर पर है, ऐसी गाथाओं को सुनकर पूरा देश गौरवान्वित महसूस करता है। रेडियो के मन की बात के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों को भारत की गाथा को जानने का अवसर मिलता है।

संक्षिप्त खबरें

तीन दिवसीय डॉक्टरों का आवासीय प्रशिक्षण संपन्न

रांची(बिभा): स्वास्थ्य विभाग और हंस फाउंडेशन के सहयोग से 17 से 19 जनवरी तक चलने वाला राज्य के 12 बिभिन्न जिलों के 50 प्रखंडों से आए हुए डॉक्टरों का तीन दिवसीय आवासिय प्रशिक्षण राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर के जाने- माने कई प्रसिक्षकों द्वारा सफलतापूर्वक रांची के होटल एवीएन ग्रैंड में संपन्न हुआ । विदित हो कि कार्यक्रम का सुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर बिधिवत उद्घाटन स्वास्थ विभाग के क्षेत्रीय उपनिदेशक सह सिविल सर्जन, रांची के डॉ. प्रभात कुमार ने 17 जनवरी को किया था । आज उन्होंने समापन के दौरान हंस फाउंडेशन की प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह पहल स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने में एक मील का पत्थर साबित होगी और साथ हीं उनके द्वारा सभी डॉक्टरों का मनोबल बढ़ाते हुए सरकार द्वारा चलाई जा रही अन्य रास्ट्रीय कार्यकर्मों से जुड़ाव करने हेतु सुझाव दिया गया ।

तीसरे दिन के प्रशिक्षण में रिम्स के डॉक्टर देवेश कुमार ने "NCDs के प्रबंधन में निवारक और उपचारात्मक पहलुओं के समेकित दृष्टिकोण और पुराने मस्कुलोस्केलेटल विकारों में दर्द प्रबंधन पर जानकारी प्रदान की। वहीं, डॉक्टर दिलीप कुमार ने संक्रामक रोगों के लिए निवारक चिकित्सा और होम-बेस्ड उपचार तथा गैर-संक्रामक रोगों के मरीजों तक पहुंचने के तरीकों पर प्रशिक्षण दिया। इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से चिकित्सा अधिकारियों को स्वास्थ्य सेवाओं के व्यापक दृष्टिकोण और समाधान के प्रति प्रशिक्षित किया गया । यह प्रशिक्षण न केवल स्वास्थ्य प्रणाली को सुदृढ़ करेगा, बल्कि स्वास्थ्यकर्मियों को प्रेरित करेगा कि वे सुदूर ग्रामीण इलाकों में और भी बेहतर सेवाएं प्रदान कर सकें। हंस फाउंडेशन के प्रबंधक एवं क्षेत्रीय उपनिदेशक सह सिविल सर्जन, रांची के डॉ. प्रभात कुमार के द्वारा प्रसिक्षकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया ।

आरपीएफ हटिया की तत्परता से एक लड़की को बचाया गया

रांची(बिभा) : रांची रेल मंडल के आरपीएफ कमांडेंट पवन कुमार को गिरिडीह पुलिस ने सूचना दी कि गिरिडीह कांड संख्या-04/2025 के आरोपी विवेक कुमार महतो नाबालिग पीड़िता रानी कुमारी को ट्रेन संख्या 12836 से लेकर हटिया रेलवे स्टेशन भाग रहा है। तुरंत कमांडेंट के आदेश से आरपीएफ हटिया की टीम उसके धरपकड़ के लिए गठित की गई तथा ट्रेन संख्या 12836 के हटिया रेलवे स्टेशन पहुंचने पर आरपीएफ पोस्ट हटिया के एसआई दीपक कुमार, एएसआई सुबोध कुमार सिंह, स्टाफ कृष्ण कुमार शर्मा, सरिता, प्रीति खलखो तथा रीना यादव ने तुरंत ट्रेन की तलाशी ली। तलाशी के दौरान आरोपी विवेक कुमार महतो को हिरासत में लिया गया और नाबालिग पीड़िता रानी कुमारी को ट्रेन के जनरल डिब्बे से मुक्त कराया गया' आरोपी विवेक कुमार महतो, आयु-18 वर्ष, निवासी जेनामोरे, थाना जरीडीह, जिला बोकारो (झारखंड) का रहनेवाला था और पीड़िता रानी कुमारी, आयु-17 वर्ष, निवासी पूर्णा नगर, थाना गिरिडीह मुफ्फसिल, जिला गिरिडीह (झारखंड) की रहनेवाली थी' दोनों की पहचान गिरिडीह पुलिस द्वारा उपलब्ध कराई गई तस्वीरों से सुनिश्चित की गई। इसके बाद आरोपी और पीड़िता को सभी कानूनी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद गिरिडीह पुलिस को सौंप दिया गया।

विभिन्न महाविद्यालय के कई छात्रों ने एनएसयूआइ की सदस्यता ग्रहण की

छात्रहितों के लिए एकजुट होकर संघर्ष करें : केशव

रांची(बिभा) : एनएसयूआइ रांची जिला प्रभारी मुशर्रफ हुसैन के नेतृत्व में रांची के विभिन्न महाविद्यालय से कई छात्र एनएसयूआई में शामिल हुए और सदस्यता ग्रहण की, आर्यन सिंह और आर्यन कुमार का स्वागत माला एवं एनएसयूआई पट्टा पहना कर किया । मौके पर उपस्थित कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने सभी को सदस्यता देते हुए कहा कि आज देश में लड़ाई विचारधारा की है, और अब इस देश का छात्र युवा ही तय करेगा कि वो किसके साथ है। छात्रहितों के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने की बात कही । वहीं, छात्रों को संबोधित करते हुए पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, वरिष्ठ कांग्रेसी आलोक दुबे ने कहा कि छात्र युवा इस देश की नींव है, एनएसयूआइ का उद्देश्य है छात्र छात्राओं को छात्र सेवा में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना । प्रदेश उपाध्यक्ष अमन अहमद ने कहा कि छात्र संगठनों में शामिल होने से छात्रों को नेतृत्व क्षमता विकसित करने, समूह चर्चा करने, और सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर बातचीत करने का मौका मिलता है । छात्र संगठनों में शामिल होने से छात्रों को अपने शैक्षणिक अनुभवों को बेहतर बनाने में भी मदद मिलती है और छात्रों को अन्य छात्रों की मदद करने का मौका मिलता है । मंच का संचालन एनएसयूआई प्रदेश कार्यालय प्रभारी सह प्रदेश सचिव हुसैन जी ने किया और कहा कि आप सभी नए साथीयों का एनएसयूआई परिवार में हार्दिक हार्दिक स्वागत है अभिनंदन है । मौके पर मुख्य रूप से उपस्थित कांग्रेस प्रदेश कार्यालय प्रभारी अभिलाष साहू जी एवं रांची महानगर कांग्रेस अध्यक्ष अल्पसंख्यक हुसैन खान जी, प्रदेश सचिव पवन कुमार, सरफराज अहमद थे । सदस्यता ग्रहण करने वालों में आर्यन सिंह, आर्यन कुमार, सम्राट कुमार झा, दिव्यांग तिर्की, दिव्यंग गौरव, प्रियांशु शेखर, विक्की प्रताप, आदिल खान, राज खान, सुमन कुमार, आदित्य प्रभात, रौनक सिंह, आयुष विश्वकर्मा, सोपनिल सूरज, आदित सोनी, मयंक राज, सुभरकर राज, धीरज, अंकित, ह्रितिक आदि छात्र शामिल थे ।

झारखंड आंदोलनकारी प्रवीण प्रभाकर ने आजसू का दामन थामा

प्रवीण प्रभाकर के आने से आजसू पार्टी मजबूत होगा : सुदेश महतो

बिभास संवाददाता

रांची: झारखंड आंदोलनकारी प्रवीण प्रभाकर आज आजसू पार्टी में शामिल हो गए। पार्टी सुप्रीमो एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश कुमार महतो उन्हें हरमू स्थित केंद्रीय कार्यालय में आयोजित मिलन समारोह में श्री प्रभाकर को सदस्यता ग्रहण करवाई। समारोह समाप्ति के तुरंत बाद मांडू विधायक तिवारी महतो और पूर्व गोमिया विधायक लम्बोदर महतो भी पहुंचे।

श्री प्रभाकर को मोराबादी स्थित आवास से विशाल मोटर साइकिल जुलूस की शक्ल में कार्यकर्ता केंद्रीय कार्यालय लेकर आए। इस मौके पर संथाल परगना, पलामू तथा कोयलांचल से भी कार्यकर्ता मिलन समारोह में भाग लेने पहुंचे। श्री

प्रभाकर की घरवापसी को लेकर खास उत्साह देखने को मिला और कार्यकताओं ने उन्हें फूलझमालाओं से लाद दिया।

इस अवसर पर सुदेश महतो ने पार्टी का पट्टा पहना कर श्री प्रभाकर को सदस्यता दिलाई। श्री महतो ने कहा कि प्रवीण प्रभाकर आजसू के पुराने स्तंभ रहे हैं और उनके आने पर पार्टी मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि श्री प्रभाकर ने आंदोलन को वैचारिक दिशा दी थी और अब मिलकर झारखंड के नवनिर्माण के संघर्ष को आगे बढ़ाएंगे।

श्री प्रभाकर ने कहा कि आजसू कार्यकताओं ने विगत 11 वर्षों में उन्हें कभी भी अलग नहीं समझा और हमेशा मान-सम्मान देते रहे। आजसू का झारखंड आंदोलन में ऐतिहासिक योगदान है क्योंकि आजसू के उग्र आंदोलन के कारण ही 1989 में केंद्र सरकार को झुकना पड़ा था और पहली झारखंड वार्ता आजसू के साथ हुई। इसके बाद झारखंड विषयक समिति बनी थी। 1999 में राजग में शामिल होकर आजसू ने अलग झारखंड राज्य का निर्माण करवाया।

इस अवसर पर डॉ देवशरण भगत, राजेंद्र मेहता, राधेश्याम गोस्वामी, पंकज श्रीवास्तव, सुबोध प्रसाद, सुधीर यादव, मुकुंद मेहता, परवाज खान, जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती .निर्मला भगत, हाकिम अंसारी, मनोज कुमार महतो, ओम वर्मा, हरीश कुमार, रमेश गुप्ता, बींरेंद्र प्रसाद, बबलू कुमार महतो उपस्थित थे।

सुपरवाइजर गंगाधर राव हत्याकांड का किया खुलासा, तीन आरोपी गिरफ्तार

बिभा संवाददाता

रांची : रांची पुलिस ने तमाड़ थाना क्षेत्र में हुई एक हत्याकांड का पदार्फाश करते हुए तीन अपराधियों को गिरफ्तार किया है। रविवार को ग्रामीण एसपी सुमित अग्रवाल ने प्रेस वार्ता कर घटना की पूरी जानकरी दी। ग्रामीण एसपी ने बताया कि मधुकम प्लांट के सुपरवाइजर की हत्या की गई थी। सुपरवाइजर गंगाधर राव की हत्या 7 दिसंबर कर दी गई थी। हत्या के बाद को शव को कुएं से बरामद किया गया था। बता दें कि गंगाधर राव पिछले वर्ष 7 दिसंबर से लापता थे।

ग्रामीण एसपी ने बताया कि पुलिस ने हत्यारों की पहचान और गिरफ्तारी में टेक्निकल सेल की मदद ली। गिरफ्तार आरोपियों में विवेक सिंह मुंडा, बिजय लोहार और सचिन मुंडा शामिल हैं। प्रारंभिक जांच में पता चला कि गंगाधर राव की हत्या पैसे लूटने के विवाद में की गई थी। अपराधियों ने हत्या के बाद मृतक के अळट से डेढ़ लाख रुपये निकाले थे। इसके बाद, उन्होंने मृतक के भाई से 20 लाख रुपये की फिरौती की मांग करने के लिए मैसेज भेजे थे। इस घटना के खुलासे से यह स्पष्ट हुआ कि अपराधियों ने पूरी वारदात को बहुत योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया। पुलिस की ओर से आगे की जांच जारी है।

जेसीआई रांची का 65वां शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

बिभा संवाददाता

रांची : जेसीआई रांची ने 65वें शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया। इस भव्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी थे, और विशिष्ट अतिथि के रूप में जेसीआई इंडिया की पूर्व नेशनल प्रेसिडेंट जेसी राखी जैन उपस्थित रहीं।

समारोह में संस्था के नवनिर्वाचित अध्यक्ष जेसी प्रतीक जैन ने अपनी ऊजार्वान टीम के साथ शपथ ग्रहण किया। मुख्य अतिथि बाबूलाल मरांडी ने अध्यक्ष प्रतीक जैन और उनकी टीम को शुभकामनाएँ देते हुए जेसीआई को जूनियर चैंबर इंटरनेशनल के बजाय यूथ चैंबर इंटरनेशनल के रूप में संबोधित किया, जो युवाओं के नेतृत्व और समाज में सकारात्मक बदलाव का प्रतीक है।

विशिष्ट अतिथि जेसी राखी जैन ने जेसीआई रांची को मिनी जेसीआई जोन के रूप में सराहा और इसकी

उपलब्धियों के लिए बधाई दी। उन्होंने नई टीम को समाजसेवा और विकास के लिए प्रेरित करते हुए उनकी योजनाओं की प्रशंसा की।

अध्यक्ष जेसी प्रतीक जैन का विजनः नवनिर्वाचित अध्यक्ष जेसी प्रतीक जैन ने अपनी टीम को संबोधित करते हुए लीडिंग द चेंज थीम पर जोर दिया। उन्होंने इस साल समाज के विकास के लिए कई योजनाओं की घोषणा की, जिनमें 50 जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप प्रदान करने की योजना प्रमुख है।

नई कार्यकारिणी की टीम में सचिवः जेसी सनी केडिया, उपाध्यक्षः जेसी अभिषेक जैन, जेसी निशांत मोदी, जेसी निखिल अग्रवाल, जेसी मयंक अग्रवाल, जेसी साकेत अग्रवाल, जेसी तरुण अग्रवाल कोषाध्यक्षः जेसी कौशल मुरारका संयुक्त सचिवः जेसी सौरभ जालान प्रवक्ताः जेसी आदित्य जालान निर्देशकः जेसी अभिषेक नारनौली, जेसी अक्षत अग्रवाल, जेसी अमन सिंघानिया, जेसी अनीश जैन, जेसी अंकित अग्रवाल, जेसी अनुभव अग्रवाल, जेसी किशन अग्रवाल, जेसी मंदीप सिंह, जेसी मोहित बागला, जेसी निखिल मोदी, जेसी नितिन पोद्दार, जेसी प्रवीण अग्रवाल, जेसी ऋषभ छापरिया, जेसी ऋषभ जैन, जेसी ऋषभ जालान, जेसी ऋषभ सिंघानिया, जेसी ऋषि मुरारका, जेसी संदीप खेमका, जेसी संकेत सरावगी, जेसी सौरव नरेडी, जेसी सृजन हेतमसरिया।

प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम एक भारत-श्रेष्ठ भारत की गाथा है : बाबूलाल

बिभा संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने रविवार को प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर कार्यकताओं और आम लोगों के साथ बूथ स्तर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात को सुनी। प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने रांची महानगर के बरियातू मंडल में कार्यकताओं के साथ पीएम के मन की बात सुनी।

इस मौके पर बाबूलाल मरांडी ने कहा कि मन की बात कार्यक्रम एक राजनीतिक संबोधन नहीं, बल्कि यह एक भारत-श्रेष्ठ भारत की गाथा है। विविध क्षेत्रों की महत्वपूर्ण जानकारियों से परिपूर्ण यह संविधान आमजन को प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि आज के संबोधन में भारत की सांस्कृतिक विरासत और विकास की चर्चा हुई

है। साथ ही कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकास की गाड़ी अपनी विरासत को सहेजते और संवारते हुए आगे बढ़ रही है। मरांडी ने कहा कि संविधान सभा में दिए गए देश के महापुरुषों के संबोधन ने आमजन को संविधान की मूल भावनाओं से परिचित कराया। विरासत पर गर्व करने के अवसर दिए। स्टार्टअप की चर्चा ने युवाओं को नए-नए क्षेत्र से अवगत कराया।संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह एवं सांसद दीपक प्रकाश ने हरमू मंडल में कार्यक्रम को सुना। प्रदेश के अलग-अलग स्थानों पर पार्टी के प्रदेश, जिला मंडल के पदाधिकारियों, सांसदों, विधायकों एवं कार्यकताओं ने एक साथ मन की बात कार्यक्रम को सुना।

कार्यक्रम सुनने वालों में कार्यकारी अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार राय, प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, डॉ प्रदीप वर्मा और मनोज कुमार सिंह आदि शामिल रहे।

मीडिया कप बैडमिंटन टूर्नामेंट एकल मुकाबले में आदिल और डबल्स में आनंद और आदिल बनें चैंपियन

बिभा संवाददाता

रांची: जेएससीआई के स्टेडियम में बने रैकेट्स कैम्पस में आयोजित दो दिवसीय मीडिया कप बैडमिंटन टूर्नामेंट संपन्न हो गया। टूर्नामेंट में बैडमिंटन के प्रति पत्रकारों की दीवानगी देखने को मिली, जब खिलाड़ी बन कर प्रेस क्लब के पत्रकार सदस्य कोर्ट में पसीना बहाते नजर आये। प्रतियोगिता के पहले दिन के हुए मैच में मुख्य अतिथि के रूप में समाजसेवी स्वामी देवेंद्र प्रकाश, विनय कुमार और रांची प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष राजेश सिंह ने खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त कर टूनामेंट का शुभारंभ किया वहीं फाइनल मैच के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में समाजसेवी अजय नाथ शाहदेव उपस्थित थे। दूसरे दिन फाइनल मैच में वरिष्ठ पत्रकार

विनय कुमार द्वारा खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया गया।

वहीं कड़े एकल मुकाबले के फाइनल मैच में आदिल हसन ने लगातार दो मैच जीत कर अभिषेक सिन्हा को शिकस्त दी और ट्रॉफी पर अपना कब्जा जमा लिया। वहीं डबल्स के खेले गए संघर्षपूर्ण मैच में आदिल हसन और आनंद मोहन की जोड़ी ने अभिषेक सिन्हा और मोनू कुमार की जोड़ी को दो एक से पराजित कर ट्रॉफी पर अपना कब्जा जमा लिया। एकल्स और डबल्स के दोनों ही फाइनल मैच रोमांचक रहे। फाईनल मैच के सभी विजेताओं को मुख्य अतिथि अजय नाथ शाहदेव ने ट्रॉफी और विनय वर्मा ने ईयर बड्स दे कर पुरस्कृत किया। साथ ही सभी रनर अप को भी पुरस्कार के रूप में ईयर बड्स दिए गए। तत्पश्चातअपने सम्बोधन में अजय नाथ शाहदेव ने प्रेस क्लब को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि खेल से तन मन दोनों स्वस्थ्य रहता है, इसलिए अपने जीवन में सभी लोगों को एक खेल जरूर शामिल रखना चाहिए। वहीं वरिष्ठ पत्रकार विनय कुमार ने खिलाड़ियों का हौसला अफजाई करते हुए कहा कि राँची प्रेस क्लब के द्वारा शुरू की गई यह परम्परा कायम रहे। श्री वर्मा ने सभी फाइनलिस्ट को प्राइज के रूप में एक एक ईयर बड्स दे कर पुरस्कृत भी किया।

वहीं प्रेस क्लब के अध्यक्ष ने सफल आयोजन में अपनी भूमिका निभाने के लिए कमेटी और सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया और उन्हें शुभकामनाएं दी। टूनामेंट को सफल बनाने में क्लब के अध्यक्ष सुरेन्द्र लाल सोरेन, सचिव अमरकान्त, कोषाध्यक्ष कुबेर सिंह, सह सचिव रतनलाल, स्पोर्ट्स कमेटी के कन्वेनर मोनू कुमार, कार्यसमिति सदस्य आलोक सिन्हा, विजय मिश्र, आरजे अरविन्द, चन्दन भट्टाचार्य, संजय सुमन, सौरभ शुक्ला सहित सभी सदस्यों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

दी इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया की कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव संपन्न

बिभा संवाददाता

रांची : दी इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया, रांची शाखा के वर्ष 2025-29 के कार्यकारिणी सदस्यों के लिए चार वर्षीय चुनाव 17.01.2025 को संपन्न हुई। इस चुनाव में मतदान सुबह 08.00 बजे से लेकर शाम 06.00 बजे तक हुई जिसमे कुल 1264 चार्टर्ड अकाउंटेंट में से 560 चार्टर्ड अकाउंटेंट ने वोट देकर अपना मताधिकार का प्रयोग किया। वोटों की गिनती 18 जनवरी को हेड ऑफिस द्वारा नामित अधिकारीयों के द्वारा देर शाम तक गिनिती किया गया। इंस्टिट्यूट के रांची शाखा के कार्यकारिणी सदस्यों के इस चार वर्षीय चुनाव में कुल 10 प्रत्याशी थे, जिनमे सात प्रत्याशी निर्वाचित घोषित किये गए:

सीए. निशांत मोदी, सीए. अभिषेक केडिया, सीए विवेक खोवाल, सीए अनीश जैन, सीए

भुवनेश कुमार ठाकुर, सीए दिलीप कुमार, सीए. हरेन्दर भारती

यह चुनाव दी इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली के दिशानिदेर्शानुसार इस चुनाव के चुनाव पदाधिकारी और रीजनल कौंसिल सदस्य सीए मनीषा बियानी के देख रेख में संपन्न हुई।

इस चुनाव में निर्वाचित सभी नए कार्यकारिणी सदस्यों को इंस्टिट्यूट के रांची शाखा के चेयरपर्सन सीए श्रद्धा बगला ने हार्दिक बधाई देते हुए आशा व्यक्त किया है की इंस्टिट्यूट की रांची शाखा नयी कार्यकारिणी सदस्यों की निर्देशन में चार्टर्ड अकाउंटेंट, सीए के विधार्थियों के उत्तरोत्तर विकास और सामाजिक कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण आने वाले वर्षों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

आरपीएफ ने अवैध रेलवे ई-टिकट कारोबार का करने वाले का किया पर्दाफाश, टिकट व नगद जब्त

बिभा संवाददाता

बोकारो। ऑपरेशन उपलब्ध के तहत बोकारो आफ ने अवैध तरीके से रेलवे ई टिकट की खरीद और आपूर्ति का कारोबार चल रहा था। सूचना के आधार पर जब बोकारो आरपीएफ ने सेक्टर 9 बी रोड स्थित सिम ब्रदर्स कैफे नाम के दुकान पर जब तलाशी ली गई तो पता चल वहां पर कुल 13 ई टिकट दो लाइव ई टिकट और 11 पुरानी ई टिकट मिला जिसका मूल्य लगभग 32,230.05/ रूपया है एवं उसे जगह पर से ई टिकट में उपयोग होने वाली उपकरण को भी जप्त की गई बताते चले की आद्रा कार्यालय से डी एस सी आरपीएफ द्वारा पेबल डाटा और आरोपी राकेश कुमार रोशन के खिलाफ मामला 86/ 25 यू एस 143 रेलवे अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया। ऑपरेशन उपलब्ध के तहत बोकारो आईपीएफ संतोष कुमार की अगुवाई में बोकारो आरपीएफ द्वारा सेक्टर 9 बी रोड स्थित सिंह ब्रदर्स कैफे नाम की दुकान पर 12:30 बजे छापा मारा गया। जहां मौके पर से बहुत सारे रेलवे का ई-टिकट बरामद की गई । छानबीन पर राकेश कुमार रोशन के नाम से एक एजेंट आईडी भी पेश किया गया । इसके बावजूद वह अपने निजी लाभ के लिए व्यक्तिगत यूजर आईडी के माध्यम से अवैध रूप से रेलवे की ई टिकट की खरीद और आपूर्ति करते पकड़ा गया। उपयोग में आने वाले उपकरण एक मॉनिटर एक कीबोर्ड एक माउस कैनन का प्रिंटर एक एचपी का सीपीयू एक डायरी और वीवो कंपनी का एक मोबाइल फोन बरामद की गई। वाहन मौके पर मौजूद अन्य लोगों से पूछताछ की गई तो पता चला किआरोपी अवैध रूप से रेलवे की टिकट का कारोबार चल रहा था। जिओ द्वारा आगे की पुस्तक के दौरान आरोपी ने अपने सिस्टम से 10 पुराने ई टिकट भी प्रस्तुत किया और उसका प्रिंट आउट भी लिया गया तथा सभी प्रयुक्त टिकटों को जप्त कर लिया गया। लगभग सभी टिकटों की कीमत 32,230 बताया गया है। आरिफ आरोपी को गिरफ्तार कर एलडी एआरजेएम कोर्ट धनबाद के समक्ष भेजा जाएगा।

आरपीएफ ने बोकारो स्टेशन में नाबालिक लड़की का किया बचाव

बोकारो। एसआई अरुणा उरांव ने आरपीएफ पोस्ट बीकेएससी, मेरी सहेली टीम, सीपीडीएस टीम बीकेएससी के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बोकारो स्टील सिटी रेलवे स्टेशन की जांच के दौरान लगभग 4 :30 बजे एक 15 वर्ष की नाबालिग लड़की को देखा, जो बोकारो स्टील सिटी रेलवे स्टेशन के पुराने एफओबी के पास प्लेटफॉर्म नंबर 2 पर संदिग्ध और लक्ष्यहीन तरीके से घूम रही थी। पूछने पर उसने अपना नाम और पता निवासी- बोडो मेटला, पुंडाग, बुंदिया हिल, पी.एस. - जॉयपुर, जिला- पुरुलिया (पश्चिम बंगाल) की रहने वाली बताया। इसके अलावा, उसने बताया कि वह अपने माता-पिता/अभिभावक को बताए बिना ही घर से चली गई थी और उसके पास कोई यात्रा टिकट प्राधिकार भी नहीं है। सभी कानूनी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद बचाई गई नाबालिग लड़की को सुरक्षित अभिरक्षा और आगे की आवश्यक कार्रवाई के लिए चाइल्ड हेल्प लाइन,बोकारो को सौंप दिया गया। बचाव में शामिल कर्मचारी एसआई अरुणा उरांव, एसआई मीना कुमारी, एएसआई पवन कुमार झा, सीटी देवेंद्र कुमार, एलएचसी केएम अंजू महतो, एलसी किमी शीला देवी और सीपीडीएस टीम/बोकारो के एएसआई प्रभात कुमार शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

सीटू और किसान सभा ने मोदी सरकार की नीतियों के खिलाफ विरोध दिवस मनाया

बोकारो/बिभा संवाददाता। सेंटर ऑफ़ इंडियन ट्रेड यूनियन (सीटू) एवं अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त बैनर पर अखिल भारतीय कार्यक्रम के तहत आज किसान मजदूर एकता दिवस स्थानीय सीटू कार्यालय सेक्टर 9 में मनाया गया। उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए किसान नेता विश्वनाथ बनर्जी ने कहा कि देश के लोगों को हिंदू मुस्लिम के नाम पर बांटकर वर्तमान की मोदी सरकार देश के पूंजीपतियों को आगे बढ़ाना चाह रही है। आम मजदूरों के अधिकारों को बड़े पूंजीपतियों के फायदे के लिए छीनना चाह रही है। सीटू और किसान सभा मोदी सरकार की इस नीति के खिलाफ सड़क पर उतरने जा रही है। उन्होंने कहा एक तरफ चार लेबर कोड लाकर मजदूरों के अधिकार पर हमले करने की तैयारी भारत सरकार की है, वहीं दूसरे तरफ एलएंडटी के मालिक एस. एन. सुब्रमण्यम के द्वारा सप्ताह में काम के घंटे को बढ़ाकर 90 घंटे करने की मांग गैर संवैधानिक एवं आमानवीय है ।एक तरफ जब औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों की तरफ से काम के घंटे को 6 घंटा करने की मांग की जा रही है वहीं दूसरे तरफ एलएंडटी के मालिक सुब्रमण्यम ने भारत सरकार से मांग किया है कि काम के घंटे को सप्ताह में 48 घंटे से बढ़कर 90 घंटा किया जाना चाहिए। सीटू इसका पुरजोर विरोध करती है। क्योंकि एस. एन. सुब्रमण्यम का यह सोच देश के मजदूरों के अधिकारों को कुचलना का संकेत है। उन्होंने कहा आज पूरे देश में चार लेबर कोरड के खिलाफ, काम के घंटे को सप्ताह में 90 दिन करने की मांग के खिलाफ एवं मजदूरों के अधिकारों की रक्षा के लिए सीटू और किसान सभा के संयुक्त बैनर पर विरोध दिवस का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा आने वाले दिनों में हमारी यह लड़ाई और भी तीखी होगी हम मजदूरों और किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए हम सड़क से संसद तक संघर्ष को तैयार हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की नीतियां देश के संपूर्ण कृषि क्षेत्र को पूंजी पत्तियों के हाथों में सौंपने की तैयारी को प्रदर्शित करती है। उन्होंने कहा देश के कृषि को बचाने के लिए हम किसान फिर से सड़क में उतरने को तैयार है। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीटू नेता के एन सिंह ने किया।कार्यक्रम को सत्यनारायण महतो,आर एन सिंह, शशि कांत सिन्हा, खेमलाल महतो,राम सागर दास, शेखर बनर्जी, धनेश्वर महतो, ज्योति टूडू ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

12 फरवरी को होग युवा लायंस फोर्स का वन भोज सह मिलन समारोह : देव शर्मा

बोकारो/बिभा संवाददाता। युवा लायंस फोर्स की बैठक आवासीय कार्यालय बोदरो में हुई , जिसकी अध्यक्षता बिजय दास और संचालन संजय शर्मा ने किया , जिसमें मुख्य रूप से युवा कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष सह युवा लायंस फ़ोर्स के केंद्रीय अध्यक्ष देव शर्मा शामिल हुए , सैकड़ो युवाओं , मजदूरों, समाजसेवियो, एवं युवा लायंस फोर्स के नेता और कार्यकर्ताओं के सर्वसम्मति से 12 फरवरी दिन बुधवार को बोदरो मे युवा लायंस फोर्स का वनभोज सह मिलन समारोह निर्धारित किया गया , और इसी दिन के साथ युवा लायंस फोर्स का सदस्यता अभियान का भी शुरूआत किया जायेगा , देव शर्मा ने कहा कि युवा लायंस फोर्स एक सामाजिक संगठन है जिसमें बोकारो जिला शहरी, ग्रामीण, सेक्टर , चास चंदनक्यारी समेत ज़िले के सभी विधानसभा में सक्रिय सदस्य हैं , यह संगठन बेरोजगार एवं मजदूर वर्ग के लोगों के साथ हमेशा खड़ी रहती है साथ ही समय-समय पर धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करती है जिसमें हजारों के तादाद में मजदूर , युवा, एवं समाजसेवी शामिल होते हैं। आज बैठक में युवा नेता देव शर्मा ने कहा कि मैं दिन-रात दबे कुचले एवं मजदूर वर्ग के लोगों के लिए खड़ा रहता हूं और आगे भी रहूंगा, हमारे संगठन 15 वर्षों से हर क्षेत्र में सक्रिय रहा है इसी का परिणाम है कि आज हजारों बेरोजगार युवाओं को युवा लाइंस फोर्स ने रोजगार दिलाने का काम किया है, राज्य में इंडिया गठबंधन की सरकार बनी है , मजदूर एवं बेरोजगार लोगों के लिए एक बड़ा ही अवसर का वर्ष होगा 2025 , श्री शर्मा ने कहा मजदूर को न्याय एवं बेरोजगारों को रोजगार दिलाने के लिए, इस वर्ष में सुनियोजित ढंग से आंदोलन करूंगा एवं हजारों युवाओं को रोजगार दिलाने का हर संभव प्रयास करूंगा , मौके पर सैकड़ो युवा लायंस फोर्स के नेता और कार्यकर्ता मौजूद थे!

चन्दनकियारी क्षेत्र के आन्दोलनकारीयों को गुमनाम करने में लगी है आयोग : जगन्नाथ

बोकारो/बिभा संवाददाता। चन्दनकियारी क्षेत्र के पुर्व प्रत्याशी जगन्नाथ रजवार ने संवाददाता से बात करते कहा कि झारखण्ड अलग राज्य आन्दोलन की एक बड़ी हिस्सा चन्दनकियारी विधानसभा क्षेत्र की रही. जहाँ से एक बड़ी आबादी के कई शहादत दिये. तथा आन्दोलन के दौरान सैंकड़ों आन्दोनकारीयों की गिरफ्तारी हुई. लगातार झारखण्ड अलग राज्य गठन के लिए आन्दोनकारीयों ने अपने सर्वश्र न्यौछावर कर दिय. जब आन्दोलनकारियों कि सम्मान की बात आई. तो वैसे आन्दोनकारीयों को एक साजिश के तहत चिन्हित करने से वंचित किया जा रहा है. जबकि स्थानीय विधायक एक चिन्हित आन्दोलनकारी है. वे क्षेत्र के आन्दोनकारियों की शहादतें की जानकारी व आन्दोलनकारियों की गिरफ्तारी को करीब से देखें हैं. इसके बावजूद भी लगातार क्षेत्र के आन्दोलनकारियों को चिन्हित करने व सम्मान देने से वंचित किया जा रहा है. श्री रजवार ने सरकार से मांग किया कि आन्दोलनकारियों को सरल सहज से चिन्हित कर सम्मान लाभ दी जाय.

झामुमो का बोकारो में सदस्यता अभियान की शुरुआत, 300 से अधिक लोगों ने ली सदस्यता

बिभा संवाददाता

बोकारो। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने बोकारो जिले में सदस्यता अभियान की शुरुआत की। अभियान का उद्घाटन नयामोड़ स्थित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा स्थल पर नमन करके किया गया। पहले दिन ही तीन सौ से अधिक लोगों ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। डा. रतनलाल मांझी ने कहा कि झारखंड के सभी आंदोलनकारी नेताओं और पूर्व नेताओं का सम्मान किया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि पार्टी का उद्देश्य जिले में झामुमो के पचास हजार सदस्य बनाने का है, और इसके लिए गांव-गांव में सदस्यता अभियान चलाया जाएगा। प्रत्येक गांव से 100-100 सदस्यों को जोड़ा जाएगा। झारखंड में सबसे अधिक सदस्य बोकारो जिले से बनाया जाएगा।डॉ. रतनलाल मांझी ने बताया कि यह अभियान पार्टी को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने और आम जनता तक पार्टी की विचारधारा पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण कदम होगा। सदस्यता अभियान में सभी पुराने नेता एवं आंदोलनकारियों को शामिल किया जाएगा।कार्यक्रम में मुख्य रूप से बी के चौधरी, मंटू कुमार यादव, मोहन मुर्मू, हसन अंसारी, मुक्तेश्वर महतो, विजय रजवार, प्रमोद तापड़िया, पानबाबू केवट, दीपक महतो, मनोहर मुर्मू,पंकज मरांडी, भागीरथ शर्मा, बालवीर मिश्रा, फ़िरदौस अंसारी, शांति सोरेन, आलोक सिंह, कन्हैया सिंह, रंजीत महतो, महानंद मुर्मू, अरविंद मुर्मू ,बबीता देवी, कुंती देवी, बसंती देवी, श्री राम हेंब्रम, मिथुन मंडल, अशोक हेंब्रम, अजय हेंब्रम, लुकमान अंसारी, अशोक दसंदी, बलराम महतो, संपूर्ण सोरेन, खुदीराम दास, सदानंद गोप, गयाराम महतो, झारी हसदा, दिलीप मुर्मू, प्रदीप मंडल, संजय मुर्मू, आकाश टुडू, ओपन मुर्मू, मोहम्मद हारुन रशीद, संतोष हेंब्रम, लालजी मांझी, विकास महतो, दिनेश यादव, दिलीप ठाकुर, सोहराय हसदा, धर्मवीर गुप्ता, सुरेंद्र कुमार, अजय किस्कू, अर्जुन महतो, धनश्वर तुरी, सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

बोकारो चिकित्सा प्रमुख से 20 लाख रुपये की ठगी, पुलिस जांच में जुटी

बिभा संवाददाता

बोकारो। बोकारो जनरल अस्पताल के चिकित्सा प्रमुख डॉ. विभूति भूषण करुणामय साइबर जालसाजों ने झूठे आरोप और धमकी का सहारा लेकर डॉक्टर से 20 लाख 86 हजार 947 रुपये ठग लिए। साइबर अपराधियों ने उन्हें फर्जी मनी लॉन्ड्रिंग केस में फंसाने की धमकी देकर यह रकम ऐंठ ली। डॉक्टर की शिकायत पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। यह घटना डिजिटल ठगी के बढ़ते खतरों को उजागर करती है और सतर्कता की जरूरत पर बल देती है। इसके पहले भी साइबर अपराधियों ने बीजीएच के डॉक्टरों को निशाना बनाया है डॉ द्वारा दी गई जानकारी पर साइबर थाना पुलिस ने FIR दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। डॉक्टर ने पुलिस को विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि घटना 15 जनवरी की है, जब वह अस्पताल के इकोकार्डियोग्राफी रूम में मरीज की जांच कर रहे थे। डॉक्टर विभूति को एक फोन कॉल आया, जिसमें कॉलर ने खुद को टेलीफोन विभाग का कर्मचारी बताया। कॉलर ने कहा कि डॉक्टर के नाम से जारी एक मोबाइल नंबर से अवैध फोटो और वीडियो वायरल हुए हैं, और उनका नंबर दो घंटे में बंद हो सकता है। इसके समाधान के लिए कॉलर ने उन्हें कीपैड पर ₹9₹ दबाने को कहा। डॉक्टर ने निर्देशों का पालन किया, जिसके बाद किसी ने खुद को पुलिस अधिकारी बताकर कहा कि उनके नाम से मुंबई के नासिक एक मोबाइल नंबर रजिस्टर किया गया है। व्हाट्सएप वीडियो कॉल से बढ़ी संदिग्ध गतिविधियां अपराधी ने डॉक्टर से व्हाट्सएप वीडियो कॉल पर एकांत कमरे में बात करने को कहा। ढाई घंटे तक बातचीत में अपराधी ने डॉक्टर को नासिक जाकर एफआईआर दर्ज कराने या ऑनलाइन काउंटर एफआईआर का सुझाव दिया। डॉक्टर ने नासिक जाने में असमर्थता जताई, जिसके बाद अपराधी ने उन्हें ऑनलाइन एफआईआर का विकल्प दिया।
इसके बाद शातिर ने चिकित्सक को झांसे में लेने के लिए स्पीकर पर फोन रखकर किसी और से बात कराई। 'उधर से जवाब आया कि इस नंबर से पांच प्रदेशों में अवैधानिक कृत्य चल रहा है। अपराधी ने डॉक्टर को फर्जी बैंक खाता खोलने और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों का डर दिखाया।

बोकारो विधानसभा में भाजपा के सदस्यता अभियान की शुरुआत

बोकारो। विधानसभा में भाजपा के जिला अध्यक्ष जयदेव राय और जिला सदस्यता प्रभारी संजय सिन्हा की उपस्थिति में बोकारो के निवर्तमान विधायक बिरंची नारायण ने विधानसभा प्रथम सक्रिय सदस्य आवेदन पत्र भरकर सक्रिय सदस्यता अभियान का शुभारंभ किए उक्त आवास पर बिरंची नारायण ने कहा कि भाजपा का सदस्य बनना गर्व की बात है ये एक ऐसा आंदोलन है जो जमीनी स्तर भाजपा को और मजबूत करेगा. इसके साथ ही राष्ट्रीय प्रगति के लिए भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं का प्रभावी योगदान सुनिश्चित करेगा। उक्त अवसर पर शशि भूषण ओझा मुकुल, संजय त्यागी, अनिल स्वर्णकार, मुकेश राय, गौर रजवार, दिलीप श्रीवास्तव, मनोज सिंह, हरीश चंद्र सिंह, अनिल सिंह, विक्की राय, हरिपद गोप, सुभाष सिंह, सुनील गोस्वामी पन्नालाल कांदू हाराधन झरियात, जितेन्द्र गोस्वामी, अजय महतो, रंजीत बरनवाल, शिबू राय, पहलू महतो, विकाश कुमार, श्यामनाथ मंडल, के के बोराल, अभय कुमार गोलू, निर्मल धीवर, बुद्धेश्वर घोषाल, नीरज कुमार गगन दास आदि उपस्थित थे।

वाहन जांच अभियान चलाकर मोटरयान निरीक्षक ने वसूला 03.25 लाख जुर्माना

बोकारो। राष्ट्रीय राजमार्ग पर पिंड्राजोरा थाना क्षेत्र अंतर्गत पिंड्राजोरा चेकपोस्ट पर परिवहन विभाग द्वारा आज दिनांक 19 जनवरी, 2025 दिन रविवार को चलाएं गए सघन वाहन जांच अभियान के दौरान 24 वाहनों से 03.25 लाख का जूर्माना वसूल किया गया। उपायुक्त विजया जाधव के निर्देश पर जिला परिवहन पदाधिकारी वंदना सेजवलकर एवं मोटरयान निरीक्षक कमल किशोर द्वारा संयुक्त जांच अभियान चलाकर मोटरवाहन अधिनियम के विभिन्न नियमों के उल्लंघन में कुल 24 वाहन से 03.25 लाख रुपए जुर्माना वसूला गया। डीटीओ एवं एमवीआई के संयुक्त नेतृत्व में अभियान के तहत कुल 76 वाहनों की जांच की गई, जिसमें रिफ्लेक्टिव टेप, ओवर लोडिंग एवं टैक्स फेल होने को लेकर 24 वाहनों पर कार्रवाई करते हुए जुर्माना वसूला गया।

पत्रकार निर्मल महाराज के पिताजी पंचतत्व में विलीन

बिभा संवाददाता

बोकारो। बोकारो जिला के राष्टीय अखबार पंजाब केसरी अखबार के बोकारो जिला प्रभारी निर्मल महाराज के 75 वर्षीय पिताजी निवारण चंद्र महाराज विगत 18 जनवरी शनिवार को अपने गांव कसमार में अंतिम सांस लिए। उनका सुबह 5:45 बजे निधन हो गया उनके निधन होने से बोकारो सहित कसमार ग्रामवासी ने शोक संवेदना प्रकट किया है। बताते चले की निवारण महाराज के निधन होने से कसमार महाराज टोला में एक अध्याय का अंत हुआ , ये अपने जीवन काल में कही महत्वपूर्ण और सामाजिक कार्य करते थे। गरीबों को आगे बढ़कर काफी सहयोग करते थे। इन्हीं का देन है कि कसमार महाराज टोला से कसमार चौक तक के सड़क का निर्माण इन्होंने ही अपने निजी खर्च से करवाया था। जिस कारण लोग उनके कार्यों की सराहनीय करते थे। यह अपने जीवन काल में कई अखबारों में लेखन भी किए हैं साथ ही हवाई जहाज पायलट में भी नौकरी लगा था , बीएसएल प्लांट में भी नौकरी लगा । सभी नौकरी को इन्होंने सामाजिक कार्य करने हेतु त्याग देकर सामाजिक कार्य में लग गए और निरंतर सामाजिक कार्य ही करते रहे उनकी स्वाभाविक व मिलनसार स्वभावी के कारण हमेशा ग्रामीणों के दिल में बसे रहते थे। यह अपने पीछे पूरा परिवार छोड़कर चले गए । जिनमे इनके दो पुत्र पोता पोती नाती नतीनी भरा पूरा परिवार को छोड़कर चले गए। इनके निधन होने से बोकारो सहित पूरे कसमार प्रखंड में शोक की लहर है।

बालीडीह थाना क्षेत्र में महिला की हत्या मृतक की पहचान अभी तक नहीं हुई है

बिभा संवाददाता

बोकारो। बोकारो में महिला की हत्या कर शव को फेका गया था। गला घोटकर किया गया है हत्या। बालीडीह थाना क्षेत्र के रेलवे स्टेशन के समीप रेलवे के खंडहर नुमा आवास के पास शव को फेका गया था। मौके पर पहुंची पुलिस और जांच में जुटी। मृतक महिला का उम्र लगभग 25 वर्ष बताई जा रही और अभी पहचान नहीं हो पाई है। बालीडीह थाना क्षेत्र का है मामला।
बताते चले की बोकारो के बालीडीह थाना क्षेत्र में एक शव मिलने से इलाके में सनसनी फ़ैल गई है। महिला की अपराधियों ने गला घोटकर हत्या कर दिया है। घटना की सूचना पाकर मुख्यालय डीएसपी पुलिस दलबल के साथ पहुंची जहां हत्या के कारणों का पता लगाने में जुटी हुई है साथ ही मृतिका की पहचान भी की जा रही है। हत्या किन कारणों से हुआ और कौन कौन लोग इसमें शामिल है पुलिस वैज्ञानिक अनुसंधान के जरिए पता लगाने में जुटी हुई है और इसके लिए फिंगर एक्सपर्ट के साथ-साथ एफएसएल की टीम को भी बुलाया गया है। डीएसपी ने कहा कि घटनास्थल को सील कर दिया गया है और पूरे मामले की तहकीकात की जा रही है अपराधी जल्द ही सलाखों के पीछे होगा।

साइबर अपराध से सबसे ज्यादा महिलाएं हो रही है प्रभावित

बिभा संवाददाता

बोकारो। ऑनलाइन माध्यम में बढ़ते महिला हिंसा पर आज सहयोगिनी संस्था द्वारा कसमार के टांगटोना पंचायत भवन में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सहयोगिनी की सचिव कल्याणी सागर ने बताया कि तकनीक का दुरुपयोग कर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में लड़कियों तथा महिलाओं पर हिंसा की संख्या बढ़ती जा रही है। जिसे जन जागरूकता के माध्यम से रोका जा सकता है। उन्होंने कहा डिजिटल प्लेटफार्म में महिलाओं पर ज्यादा प्रहार हो रहा है। साइबर अपराधी महिला को टारगेट कर परेशान कर रहे है। जिस पर अंकुश लगाना जरूरी है । रिसोर्स पर्सन संगीता देवी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि लड़कियों को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का सबसे आसान तरीका मोबाइल हो गया है। जिससे हमें सचेत रहने की जरूरत है ।सोशल मीडिया के माध्यम से लड़कियों तथा महिलाओं को सबसे ज्यादा हिंसा का शिकार होना पड़ रहा है। इस संबंध में गांव या जमीनी स्तर पर महिलाओं एवं लड़कियों को प्रशिक्षित करने का कार्य सहयोगिनी के द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि कसमार प्रखंड के बगदा, दुर्गापुर, टांगटोना, तथा खैराचातर पंचायत के 19 गांव में इससे संबंधित जागरूकता का कार्य किया जा रहा है। सहयोगिनी की उत्प्रेरक रेखा देवी कहा कि साइबर हिंसा, महिलाओं के ख़िलाफ़ होने वाला एक गंभीर अपराध है. यह कई रूपों में होती है, जैसे कि साइबर उत्पीड़न, बदला लेने वाला पोर्न, बलात्कार की धमकियां,यौन उत्पीड़न, हत्या, साइबर बुलीइंग, साइबर स्टॉकिंग प्रमुख है। साइबर हिंसा में अपराधी साथी या पूर्व साथी, सहकर्मी, सहपाठी या अज्ञात व्यक्ति हो सकता है , जिससे हमें सावधान रहना है। साइबर हिंसा से निपटने के लिए, भारतीय दंड संहिता, 2000 का आई टी क़ानून और 2021 के आई टी रूल्स जैसे क़ानून हैं।साइबर क्राइम की शिकायत के लिए टोल फ्री नंबर 1930 पर कॉल किया जा सकता है। कार्यक्रम को सहयोगिनी किशोरी क्लब की खुशबू कुमारी, उर्मिला कुमारी, सोनिया कुमारी, पूजा कुमारी आदि उपस्थित थी।

विकास परिषद के तत्वावधान में यदुवंशी समाज का वार्षिक सम्मेलन आयोजित

बिभा संवाददाता

बोकारो। विकास परिषद बोकारो द्वारा रविवार को यदुवंशी समाज का वार्षिक सम्मेलन सह वनभोज का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विकास परिषद के तत्वावधान में हुआ, हालांकि अघोषित रूप से यह यदुवंशी समाज का सबसे पुराना संगठन है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंटू यादव उपस्थित थे, जिन्होंने समाज के लोगों को शिक्षा के महत्व और समाज में व्याप्त कुरीतियों, विशेषकर दहेज प्रथा, से मुक्त होने की सलाह दी। मंटू यादव ने कहा कि समाज को प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए सभी को मिलकर दहेज प्रथा का विरोध करना चाहिए और दहेज लेने व देने वाले दोनों को सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए। विकास परिषद के अध्यक्ष एस यादव ने अपने संबोधन में कहा कि समाज की उन्नति के लिए शिक्षा और संस्कार सबसे जरूरी हैं। उन्होंने समाज के सभी लोगों से अपील की कि वे सामाजिक सुधार के लिए एकजुट होकर काम करें। इसके साथ ही उन्होंने यदुवंशी समाज के प्रत्येक सदस्य से यह उम्मीद जताई कि वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने के साथ-साथ संस्कारों से भी समृद्ध करें। कार्यक्रम में आर टी सिंह, जितेंद्र यादव, सत्येंद्र यादव, भागीरथ यादव, अशोक यादव, सदानंद गोप, आरएस चौधरी, आरएस यादव, डॉ. करुणा, गंगासागर यादव, हीरालाल सिंह, विजय यादव, गुलाब सिंह, डॉ. एसपी सिंह, दिनेश यादव, राम चौधरी, दयानंद यादव, अरुण कुमार, आरके यादव, पारसनाथ यादव, दलों यादव और अन्य प्रमुख लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

सांसद सुखदेव भगत तुरिया उरांव के पार्थिव शरीर को नमन कर उन्हें दी श्रद्धांजलि

लोहरदगा/बिभा संवाददाता। आदिवासी कर्मचारी समिति लोहरदगा के अध्यक्ष किशोर उरांव के पिता एवं सेवानिवृत शिक्षक एवं पूर्व पंचायत कांग्रेस अध्यक्ष तुरिया उरांव का शनिवार की रात्रि 10:00 बजे हृदय गति रुकने से निधन हो गया था। इस बात की जानकारी मिलते ही रविवार को लोहरदगा लोकसभा के सांसद सुखदेव भगत हरमू गांव पहुंचकर तुरिया उरांव के पार्थिव शरीर को नमन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किये। इस दौरान वे शोकाकुल परिवारों से मुलाकात कर अपनी ओर से गहरी संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि दिवंगत तुरिया उरांव के द्वारा समाज में किए गए कार्यों को लोग हमेशा याद रखेंगे। मौके पर शोक व्यक्त करने वालों में कांग्रेस नेता आलोक कुमार साहू , फूलदेव उरांव, मनोज सोन तिर्की भी शामिल थे।

राष्ट्रहित के लिए भारतीय जनता पार्टी तात्पर्य: सचिन कुमार

लोहरदगा/बिभा संवाददाता। भारतीय जनता पार्टी के द्वारा रविवार को कुम्बा टोली में सदस्यता अभियान चलाया गया। अभियान का मकसद ज्यादा से ज्यादा लोगों को भारतीय जनता पार्टी में जोड़कर देश हित के कार्य के लिए प्रेरित करना भारतीय जनता पार्टी का लक्ष्य रहा है उक्त बातें भारतीय जनता पार्टी के नगर अध्यक्ष सचिन कुमार साहू ने कहा है साथ ही कहा कि सदस्यता अभियान एक महा अभियान की तरह लोहरदगा जिला में मनाया जा रहा है इस अभियान के अवसर पर पार्टी हित के लिए लोग हजारों की संख्या में लोग जुड़ रहे हैं। और जिले के विभिन्न क्षेत्रों में या अभियान प्रतिदिन लोगों के बीच चलाया जा रहा है। मौके पर उपस्थित, चंदू राम, विजय राम, चंदेश्वर राम, मुकेश राम, सूरज राम, करपु उरांव, भवानी साहू,रावराजा राम, संतोष राम, मोतीराम, प्रमोद राम, नीरज राम, विक्की कुमार साहू, प्रेम राम, दीपक साहू, इत्यादि लोग शामिल थे।

राज्य रक्षा मंत्री के निर्देश पर कंबल का किया गया वितरण

सोनाहातू/बिभा संवाददाता। राज्य रक्षा मंत्री सह सांसद संजय सेठ के निर्देश पर भाजपा नेता दिलेश्वर कोईरी के नेतृत्व में सोनाहातू प्रखंड के जामुदाग कांशीडीह, गलऊ, इड़कु आदि गांव के 41 जरूरतमंद वृद्ध लोगो के बीच कंबल का वितरण किया गया। मौके पर कई लोग मौजूद थे। इधर प्रदीप वर्मा फाउंडेशन के द्वारा सोनाहातू मंडल और कुकडु मंडल के कई गांवों में जरूरतमंद लोगों के बीच कंबल वितरण का कार्य किया गया। मौके पर कुकडु मंडल अध्यक्ष भरत चन्द्र महतो, जिला सह सोशल मीडिया प्रभारी सुमन मुखर्जी, पुर्व मुखिया मनोरंजन सिंह, उपमुखिया महेन्द्र नाथ महतो, बुथ अध्यक्ष राकेश कुमार महतो एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता मौजूद थे।

नापड़ा में अवैध पांच एकड़ में लगे पोस्ते की खेती को किया नष्ट

सोनाहातू/बिभा संवाददाता। रांची के एसएसपी और ग्रामीण एसपी के निर्देशानुसार बुंडू डीएसपी द्वारा गठित टीम में सोनाहातू थाना प्रभारी चंदन कुमार के नेतृत्व में रविवार को थाना क्षेत्र के बारेंदा पंचायत अंतर्गत नापड़ा गांव के जंगल के बीच पांच एकड़ में लगे पोस्ते के पौधे को नष्ट किया। थाना प्रभारी चंदन कुमार ने कहा कि अवैध खेती और मादक पदार्थों के व्यापार में संलिप्त पाए जाने वालों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। किसी भी संदिग्ध गतिविधि में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। जिसने भी पोस्ते की खेती किया है पहचान किया जा रहा है। जल्द करवाई होगी।

मुड़मा पंचायत के ग्राम मेशाल में उप प्रमुख ने किया कंबल वितरण

मांडर/बिभा संवाददाता। मुड़मा पंचायत के ग्राम मेशाल में बढ़ते ठंड के प्रकोप से बचने के लिए गरीबों, असहायों, वृद्धों व जरूरतमंदो के बिच कंबल का वितरण किया ताकि, ठंड से अपनी बचाव कर पाएं।कंबल पाकर लोगों के चेहरे पर खुशियां देखी गई और सभी लोगों ने उप प्रमुख अमानत अंसारी का आभार व्यक्त किया और दुवाएं भी दिए। साथ ही लम्बे समय से बीमार चल रहे मेशाल निवासी मुस्तकीम अंसारी से मुलाकात कर हर संभव मदद का आश्वाशन दिए *उप प्रमुख अमानत अंसारी ने कहा कि गरीब और जरूरतमंदों की मदद करना ही सबसे बड़ा धर्म है। तेज हवा चलने के बाद ठंड का प्रकोप और अधिक बढ़ गया है इस सर्दी में गरीबों की मदद बहुत जरूरी है। मौके पर आदम अंसारी, तबरेज अंसारी, कुर्बान अंसारी, और अन्य लोग मौजूद थे।

विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर कार्यक्रम में प्रधान जज ने किया करोड़ों की परिसम्पतियों का वितरण

बिभा संवाददाता

खूँटी। कर्रा प्रखंड कार्यालय में रविवार को विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर कार्यक्रम के दौरान एक करोड़ अठारह लाख अठाईस हजार पांच सौ (11828500) रूपया कि परिसंपति का वितरण किया गया. कार्यक्रम के दौरान बतौर मुख्य अतिथि खूंटी सिविल कोर्ट के माननीय प्रधान जिला जज श्रृषिकेष कुमार उपस्थित होकर ग्रामीण जनता के बीच परिसंपति का वितरण किया. जिसमें सामाजिक सुरक्षा कोषांग के पांच लाभुक , स्वस्थ्य विभाग से पांच लाभुकों के बीच आयुष्मान कार्ड का वितरण, जेएस एलपीएस के 6 लाभूकों को 7900000 राशि कि परिसंपति, कल्याण विभाग से आठ छात्रों के बीच साइकिल का वितरण, आपूर्ति विभाग से पांच लाभुको के बीच राशन कार्ड का वितरण, कृषि विभाग से पांच किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड, छह किसानों के बीच बीज का वितरण, बाल विकास परियोजना की ओर से दो विकलांग को व्हील चेयर, पांच लाभुकों के बीच सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना, मनरेगा से छह किसानों के बीच जॉब कार्ड का वितरण, प्रधानमंत्री आवास ग्रामीण के पांच लाभुकों को छह लाख एवं अबुआ आवास के पांच लाभुकों को एक लाख रूपया का वितरण किया गया. विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर कार्यक्रम के दौरान माननीय प्रधान जिला जज श्रृषिकेष कुमार ने जनता से अपील करते हुए कहा की खूंटी जिला को अफीम खेती मुक्त जिला बनाने में महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित करें और भटके हुए किसानों कृषि के आयाम से जोड़ा जाए और अफीम के बदले दूसरे वैकल्पिक खेती करने के लिए किसानों कों बीज खाद्य एवं अन्य कृषि उपकरण मुहैया कराने कि बात कही गयी.

कार्यक्रम के दौरान बीडीओ स्मिता नगेशिया, सीओ वंदना भारती, कर्रा थाना प्रभारी मनीष कुमार, डीएचओ डॉ सौरभ आनंद, मनरेगा बीपीओ प्रेम सुजीत कुजूर,अंचल सीआई सुकेश रंजन, बीटीएम स्नेहलता तिग्गा सहित प्रखंड व अंचल के कर्मी सहित सैकड़ो ग्रामीण मौजूद रहे।

मुरहू प्रखण्ड में अपर जिला जज ने किया विधिक जागरूकता कार्यक्रम

बिभा संवाददाता

खूँटी। मुरहू प्रखण्ड में अपर जिला जज के द्वारा प्रखण्ड में विधिक जागरूकता कार्यक्रम के तहत लाभुकों के बीच परिसम्पतियों का वितरण किया गया। जिसमें प्रखण्ड के अबुआ आवास , किशोरी समृद्धि के तहत लाभुकों के बीच उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी, किसान क्रेडिट कार्ड ऋण के लाभुक, दिव्यांगों को ह्वील चेयर, कान का मशीन अपर जिला जज के द्वारा बाँटा गया। अपर जिला जज महोदया ने कहा कि जन समस्या के तहत लोगों को किसी प्रकार की जानकारी कोर्ट दे सम्बंधित लेने में हम आपकी मदद करेंगे। मानव तस्करी को रोकने में उन्होंने ऊना सुझाव दिया साथ ही उपप्रमुख द्वारा कहा गया डायन प्रथा के सजा का प्रावधान का जानकारी उन्होंने लोगों को दिया।

इस कार्यक्रम में उप प्रमुख अरुण साबू ने लोगों को बताया कि गाँव में डायन प्रथा या जमीनी विवाद के तहत या अन्य किसी कुप्रथा के कारण कोई घटना घट जाती है तो सजा का प्रावधान है। साथ ही, ग्रामीणों को अपनी समस्या कोर्ट के तहत समाधान लेने में क्या सहायता मिलेगी इस बारे में बताया। प्रखण्ड बिकास पदाधिकारी ने कहा कि गाँव में लोग यदि न्याय से वंचित रहते हैं या कोई गाँव की महिलाओं की सुविधा में बाधक बनते है तो आप न्याय का सहारा लेने के लिए कोर्ट के सरल नियमावली की जानकारी या मदद डालसा में जाकर ले सकते है। अंचलाधिकारी ने बताया कि जमीन विवाद या आपके जमीन पर कोई अवैध खेती करते है आप नही फंसे आप इसकी सूचना अंचल और थाना को दे साथ ही आप कोर्ट की प्रकिया में सहायता की आवश्यकता महसूस करते है तो डालसा के तहत आप मदद ले। मुरहू थाना प्रभारी ने कहा कि अफीम लगाने वाले यदि आपकी जमीन में जबरन अफीम लगाते है तो आप इसके लिए आकर मिले साथ ही आने गाव में नशा के इस साधन का साथ नही दे। अन्यथा कानूनी कार्रवाई में आप को भी समस्या होगी जिसमें दंड का प्रावधान है।

अर्जुन मुण्डा ने शालिग्राम साव के परिवार से मुलाकात कर उन्हें शोक व्यक्त किया

बिभा संवाददाता

खूँटी। जनजातीय मंत्रालय के पूर्व केंद्रीय मंत्री और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा रविवार को मुरहू पहुँच पूर्व जिला सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार के पिता वयोवृद्ध समाजसेवी रहे शालिग्राम साव के ब्राह्मण भोज में शामिल हुए। वहीं उन्होंने स्व. शालिग्राम साव के चित्र पर पुष्पांजली अर्पित कर नमन किया। इस दौरान अर्जुन मुंडा ने मनोज कुमार की माँ से मुलाकात की तथा संवेदना व्यक्त किये। इसी क्रम में उन्होंने समाज के लोगों से मुलाकात की और हालचाल प्राप्त किया।

इधर, खूँटी सांसद कालीचरण मुण्डा, खूँटी विधायक राम सूर्या मुण्डा, तोरपा विधायक सुदीप गुड़िया, भाजपा नेता विनय जायसवाल, अरुण चन्द्र गुप्ता, दुर्गावती ओड़ेया, महेंद्र भगत, रमेश मांझी, परिमल घोष, महेश प्रसाद चौधरी, नईमुद्दीन खान, सुरेश जायसवाल आदि काफी संख्या में लोगों ने भी इस शोक की घड़ी में मनोज कुमार के आवास पहुँच ब्रह्मभोज में शामिल हुए।

ब्रह्मभोज कार्यक्रम में कई लोग हुए शामिल

खूँटी। बाबा आम्रेश्वर धाम के महामंत्री व पूर्व जिला सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार के पितृ शोक पर खूंटी सांसद कालीचरण मुण्डा मुरहू स्थित उनके आवास पहुँचे। दिवंगत शालिग्राम साव कालीचरण मुण्डा के पिता स्व की मुचिराय के साथ कार्य करनेवाले कांग्रेस के सक्रीय कार्यकर्ताओं में से एक थे। इस मौके पर कालीचरण मुण्डा ने दिवंगत शालिग्राम साव के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। वहीं परिवार से मुलाकात कर उनके पिताजी के समय की वस्तु स्थिति को स्मरण कर बातें साझा की। वहीं खूँटी विधायक राम सूर्य मुण्डा व तोरपा विधायक सुदीप गुड़िया ब्रह्मभोज में शामिल हुए तथा स्व शालिग्राम साव के चित्र पर पुष्प अर्पित किया।

हाथियों के झुंड ने 10 एकड़ में लगे फसल को किया बर्बाद

सोनाहातू। प्रखंड क्षेत्र में इन दिनों लगातार हाथियों द्वारा सब्जी के फसल को नष्ट किये जाने से किसान काफी मायूस है। हाथियों का एक झुंड सेरेंगहातू और हितजारा के सामने बांस वन में जमे है। एक झुंड बारेंदा पहाड़ी के जंगल में जमे है। एक झुंड हेसाडीह ऊपर जंगल में जमे है। सोनाहातू चारों ओर से जंगली हाथियों से घिरा है। शाम होते ही गांव की सड़के सुनसान हो जा रही है। हाथियों के झुंड कब कहां निकले किसी को अंदाजा नहीं है। ग्रामीण भगवान भरोसे है। वन विभाग मौन है। विभाग को फसल नुकसान या हाथियों के गतिविधियों से कोई सरोकार नहीं है। शनिवार रात जामुदाग पंचायत के चोगा गांव ओर बारेंदा पंचायत के कई गांव के 10 एकड़ में लगे सब्जी फसल नष्ट हुए है। किसान बासुदेव भगत, सुरेश भगत, संशोधर कोइरी, रामप्रिया देवी, विपिन बिहारी कोइरी, कुंजलाल कोइरी आदि के फसल नुकसान हुए है। गांव में हाथियों द्वारा नुकसान की सूचना पर पंचायत समिति सदस्य रूप कुमार साहू ने गांव जाकर किसानों से नुकसान की जानकारी लिया और वन विभाग से मुआवजा देने की मांग किया।

सब जूनियर रग्बी चैंपियनशिप के दोनों वर्गों में खूंटी चैम्पियन

बिभा संवाददाता

खूँटी। स्थानीय लोयोला उच्च विद्यालय प्रांगण में रविवार को झारखंड स्टेट सब जूनियर रग्बी चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। जिसमें बालक व बालिका के दोनों वर्गों में खूँटी की टीम लगातार तीसरी बार विजेता बनी। बालक वर्ग के फाइनल मैच में खूँटी की टीम ने पश्चिम सिंहभूम को कड़े संघर्ष के बाद 5-0 से तथा बालिका वर्ग में गोड्डा की टीम को 30-0 से हराकर खूँटी की टीम ने विजेता का खिताब अपने नाम किया। बालिका वर्ग में तीसरा स्थान बोकारो तथा बालक वर्ग में तीसरा स्थान गुमला को मिला। मैच का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर मुख्य अतिथि सह झारखंड रग्बी फुटबाल एसोसिएशन के अध्यक्ष विष्णु कुमार जालान, विशिष्ठ अतिथि फादर अमृत लकड़ा, फादर बिमल मिंज, झारखंड रग्बी फुटबाल एसोसिएशन के महासचिव हेजाज असदक, मनोज सिंह के द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभिन्न जिला संघ के पदाधिकारी उपस्थित थे। यह जानकारी एसोसिएशन के महासचिव हेजाज असदक ने दी।

पत्नी ने लिया था कर्ज, तगादा से परेशान पति ने किया आत्महत्या का प्रयास

लोहरदगा। सदर थाना क्षेत्र के जूरिया करमटोली में एक ग्रामीण ने आत्महत्या का प्रयास किया है उसे परिजनों द्वारा इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी अनुसार जूरिया करमटोली निवासी शनिया उरांव का पुत्र रामा उरांव की पत्नी ने महिला मंडल से 40 हजार रुपया कर्ज के रूप में ले रखा था, रामा कर्ज नही चुका पा रहा था औऱ महिला मंडल द्वारा पैसा वापसी का दबाव बनाया जा रहा था इससे तंग आकर रामा ने कीटनाशक खा कर आत्महत्या का प्रयास क्या परंतु परिजनों की तत्परता से उसकी जान बच गई। परिजनों ने बताया कि रामा उरांव कमाने दूसरे प्रदेश गया हुआ था, इधर उसका बेटा बीमार पड़ गया, बेटे के इलाज के लिए रामा की पत्नी द्वारा महिला मंडल से 40,000 रुपये कर्ज लिया था।

विधायक ने जिलिंगसेरेंग और दुलमी में लगाया जनता दरबार

बिभा संवाददाता

सोनाहातू। सिल्ली विधायक अमित कुमार महतो ने रविवार को सोनाहातू प्रखंड के दुलमी और जिलिंगसेरेंग पंचायत में जनता दरबार लगाया। इस दौरान ग्रामीणों ने अबुआ आवास, वृद्धा पेंशन, मइया सम्मान योजना, विधवा पेंशन आदि से संबंधित आवेदन प्रपत्र जमा किए। विधायक अमित ने कहा कि हमें जनता ने विश्वास कर बेहतर तरीके से कार्य करने के लिए चुना है। इसलिए हमें भी जनता के प्रति खरा उतरकर बेहतर तरीके से कार्य करना होगा। इसलिए अधिकारी व कर्मचारी नये तरीके से काम को करना प्रारंभ करें। पहले जो भी सिस्टम था, उसको बिल्कुल भुला जाएं। क्योंकि, हमारे क्षेत्र के लोगों को प्रखंड व अंचल के कार्यों में तनिक भी चक्कर लगाना न पड़े, नहीं तो बक्शे नहीं जाऐंगे। विधायक ने कहा कि दुलमी पंचायत में एक भी काम ग्राम प्रधान व मुंडा कृष्ण कुमार सिंह की अनुमति के बिना नहीं करेंगे। मौके पर बीडीओ खगेश कुमार, सीओ मनोज महथा, थाना प्रभारी चंदन कुमार, ग्राम प्रधान मुंडा कृष्ण कुमार सिंह, मुखिया लतिका देवी, अवनी सिंह मुंडा, भोलेशवर सिंह मुंडा, पूर्व मुखिया तपन सिंह मुंडा, पंचायत सचिव अनंत हजाम, सुरेश चंद्र महतो सीआइ बंकिमचंद्र गांगुली, झामुमो के कामेशवर महतो, दीनबंधु महतो, लालू पुरान, पशु मित्र हाराधन लोहरा, रोजगार सेवक भगीरथ हजाम, प्रदीप महतो, रविंद्र कोइरी समेत कई कर्मचारी प्रखंड व अंचल के उपस्थित थे।

डालसा के शिविर में 489 लाभार्थियों के बीच परिसंपत्तियों का हुआ वितरण

बिभा संवाददाता

खूँटी। जिले के सभी प्रखंडों में रविवार को प्रखंड स्तरीय विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में ग्रामीणों को उनके निकटवर्ती प्रखंड कार्यालय में ही विभिन्न योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया गया। इस विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर में लाभार्थियों को 3,53,72,300 की परिसंपत्तियों का वितरण किया गया। कुल 489 लाभुकों ने शिविर में भाग लेकर इन योजनाओं का लाभ प्राप्त किया। उक्त शिविर में सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे कंबल वितरण, ट्राई साइकिल वितरण, धोती-साड़ी योजना, कृषि एवं वानिकी योजनाएं, बकरी पालन, पशुधन गाय पालन, मातृत्व वंदना योजना, सावित्रीबाई फुले योजना, किशोरी समृद्धि योजना, सर्वजन पेंशन योजना, मुख्यमंत्री मैया सम्मान योजना और केसीसी योजना आदि के लाभ प्रदान किए गए।

शिविर में प्रमुख रूप से प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह डालसा अध्यक्ष रसिकेश कुमार, जिला जज प्रथम संजय कुमार, जिला जज द्वितीय राकेश कुमार मिश्रा, जिला जज तृतीय प्राची मिश्रा, डालसा सचिव राजश्री अपर्णा कुजूर, अनुमंडलीय न्यायिक दंडाधिकारी कुमारी विद्यावती, उपप्रमुख अरुण साबू और अन्य गणमान्य अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रखंड के बीडीओ, सीडीपीओ, बीपीओ, बीटीएम, जेएसएलपीएस अधिकारी, महिला समूह लाभार्थी और बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया।

एथलेटिक एसोसिएशन का तीन दिवसीय राज्य स्तरीय खेलकूद का समापन

बिभा संवाददाता

लोहरदगा। तीन दिवसीय 67वीं राज्यस्तरीय एथेलेटिक्स मीट का रविवार को समापन हो गया। ललित नारायण स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में समापन समारोह में सूबे के वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। आगत अतिथियों का स्वागत उर्सुलाइन शिक्षिका प्रशिक्षण महाविद्यालय की छात्राओं तथा आदिवासी नृत्य के साथ कला उत्सव कमिटी द्वारा पारंपरिक रीति रिवाज के साथ की गई। मौके पर मंत्री द्वारा स्वर्गीय शिव प्रसाद साहू के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने खिलाड़िओं को संबोधित करते हुए कहा कि खेल में अनुशासन होना आवश्यक है। धीरज प्रसाद साहू और इनका परिवार द्वारा झारखण्ड के सबसे पुराना एथलेटिक मीट का आयोजन का गवाह बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मैं लोहरदगा जिला के तमाम लोगों को आश्वास्त करना चाहता हुँ की लोहरदगा की कोई भी समस्या होगी मैं उसे पूर्ण कराने की गारंटी लेता हुं। उन्होंने कहा कि एथलेटिक के आयोजन को के ग्राउंड बनाने को ले सहयोग करूंगा। उन्होंने खिलाड़ियों को अनुशासन में रहने की प्रेरणा देते हुए कहा की खेल और खिलाडी अनुशासन से ही आगे बढ़ सकते हैं। मौके पर पूर्व राज्यसभा सांसद सह जिला एथलेटिक एसोसिएशन के अध्यक्ष धीरज प्रसाद साहू ने कहा की मेरा जन्म और कर्म भूमि लोहरदगा है, मैं लोहरदगा को खेल हब बनाना चाहता हूं। उन्होंने वित्त मंत्री से ललित नारायण स्टेडियम का जीर्णोद्धार कराने और स्टेडियम का कायाकल्प कराने का आग्रह किया। उन्होंने कहा की खेल और शिक्षा से सबकुछ हासिल किया जा सकता है। आयोजन का धन्यवाद ज्ञापन सचिव संजय कुमार साहू द्वारा किया गया। खेल कूद आयोजन को सफल बनाने में संजय साहू, सैफाली साहू, सबिता साहू, साईमा साहू, भावना साहू, दुर्गेश साहू, सौरभ साहू, जिप अध्यक्ष रीना कुमारी, सेन्हा प्रमुख फुलझरी देवी, निशीथ जायसवाल, संजय बर्मन, राजकिशोर महतो, ऑफिशल अरुण राम, रश्मि खेस, संध्या सिंह, जोहरा जमाल, मुमताज अहमद, मुरारी गोस्वाम, नसीम अख्तर, नईम खलीफा, दिनेश साहू, साबिर हुसैन, तकनीकी पदाधिकारी अनवर हुसैन आदि मौजूद थे।

प्रतियोगिता में ये रहे विजय

प्रतियोगिता के 3000 मीटर रेस के जूनियर बालक वर्ग में प्रथम सोनू मिंज नवांटांड़, द्वितीय रोहित कच्छप धुर्वा, मुकेश कुमार जमशेदपुर, जूनियर बालिका क्रांति कुमारी लोहरदगा, द्वितीय अनीशा बागे गुमला, तृतीय वर्षा रवाणी धनबाद, पुरुष वर्ग प्रथम रामविलास पासवान गुमला, द्वितीय आकाश उरांव धुर्वा, तृतीया रोशन कुमार रविदास रांची, महिला वर्ग प्रथम आयशा कुमारी भुरकुंडा, द्वितीय शालिनी लकड़ा सिसई, तृतीय अंतरा कुमारी बोकारो, 200 मीटर पुरुष वर्ग में प्रथम विवेक कुमार महतो लोहरदगा, द्वितीय विक्की लोहरा रांची, तृतीय अरुण कुमार रांची, महिला वर्ग में प्रथम रूपाली यादव पलामू, द्वितीय सीमा कुमारी लोहरदगा, तृतीय पायल बाउरी धनबाद, 15000 मीटर रोड रेस पुरुष वर्ग प्रथम अनूप उरांव गुमला, द्वितीय सुदर्शन उरांव गुमला, अभिमन्यु उरांव लोहरदगा विजय रहे।

मेधा डेयरी किसानों की राज्य स्तरीय बैठक मांडर में सम्पन्न

बिभा संवाददाता

मांडर। रविवार को झारखंड राज्य दुग्ध उत्पादक मेधा डेयरी के किसानों की राज्य स्तरीय बैठक मांडर प्रखंड स्थित सोसई आश्रम मैदान में विशेश्वर शाही की अध्यक्षता में हुई। जिसमें झारखंड के विभिन्न जिलों से आए किसान दुग्ध मित्रों ने वेरिएशन के नाम पर प्रबंधन द्वारा पैसा काटा जा रहा है, जिससे किसानों में आक्रोशित देखे जा सकते थे। बैठक में निर्णय लिया गया 21 जनवरी को एक प्रतिनिधिमंडल मेधा प्रबंधक से मिलकर समस्याओं से अवगत कराएंगे और वेरिएशन के नाम पर पैसा काटा जा रहा है वह पैसा काटना बंद करें। बैठक में पलामू लोहरदगा देवघर गुमला गढ़वा हजारीबाग गोड्डा रामगढ़ दुमका के किसान प्रतिनिधि शामिल हुए संचालन सुजीत शाही धन्यवाद ज्ञापन जावेद अंसारी के द्वारा किया गया। मौके पर विनोद सिंह भानु महतो इंद्रदेव महतो सहित लगभग 500 प्रतिनिधि शामिल हुए।

संपादकीय

महिला कानून में बदलाव की जरुरत

भारत में वर्तमान समय में महिलाएं प्रगति के पथ पर पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलकर निरंतर जमीन से लेकर आसमान तक अपनी सफलता की कहानी लिख रही है । यह स्थिति हमारे समाज में बदलाव का सबसे बड़ा प्रमाण है। इसके पश्चात भी देश में महिला शिक्षा की स्थिति कमजोर है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं आज भी अत्याचार शोषण और रूढिवादी परम्पराओं में जकड़ी हुई है। शहर में यह स्थिति ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्ष कम है। भारतीय संविधान में महिलाओं की सुरक्षा के लिये अनेक प्रकार के कानून बने है किंतु महिला उत्पीडन और उसमें बने आरोपी की स्थिति को देखते हुए लगता है कि यह कानून उतने कारगर नहीं है जितने समझा जाता है। दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, रेप के मामलों में अनेक बार आरोपी आसानी से बच निकलत है। इन्ही सब विषमताओं पर वरिष्ठ अधिवक्ता दीप्ती पौरिया से जब चर्चा की गई तो उनका कहना था कि माना हमारे देश में महिलाओं के लिए नैतिक रूप से वृहद कानून बनाये गये है लेकिन इन कानूनों का व्यवहारिक स्वरूप प्रभावी नहीं है। कानून प्रक्रिया का मोहताज है जो कि ऐसा होना चाहिए जिसमें दूरगामी विचारों की कार्यवाहियों हो और जो प्रभावितों को बिना किसी मनोवैज्ञानिक दवाब भय के अपना पक्ष रखने को उत्साहित करें । गौर तलब बात यह है कि वर्तमान महिला संबंधी कानून से कमोवेश समस्या अत्याचार कुछ दब सकते है लेकिन उनका निदान कम नहीं हो सकता। समुचित और प्रभावी कानून न होने के कारण महिलाएं न्याया पाने में खुद को असहाय पाती है, कुछ ही केस को छोड़कर। उच्चतम न्यायालय द्वारा इस संबंध में दिशा निर्देश दिये जाते है कुछ कदम उठाये जाते है पर वह पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता है महिलाओं के प्रति सिर्फ नैतिकता ही नहीं सवेदनशीलता अपनाकर सभी कानून का गंभीर तरह से विश्लेषण कर इसे व्यापक ही नहीं व्यवहारिक भी बनाया जाय। समस्त पहलुओं को उजागर कर एक प्रभावी कानून का निर्माण किया जाय। चूंकि तमाम अत्याचारों अपराधों का समाधान न्याय व्यवस्था के द्वारा ही हो सकता है। कानून को सरकारी राजपत्र कागजों से बाहर निकलकर हर एक के पहुंच में लाना जरूरी है। भारत में महिलाओं के प्रति अत्याचार और उनके कानूनी उपचार की बात जानना चाहते है तो सबसे पहले हमें हमारे देश में महिलाओं की स्थिति का ज्ञान होना अति आवश्यक है और वह भी प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक के संदर्भ में। क्योंकि महिलाओं संबंधी कोई भी बात ये जाने और समझे बिना नहीं की जा सकती कि उनकी भूमिका और स्थिति समाज में कैसी है।

बीते जमाने की बात होती सोशियोट्रॉपी

लेखक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

> दरअसल, हमारी परंपरा व्यष्टि का ना होकर समष्टि की रही है। बच्चों को पहले सामाजिकता का पाठ पढ़ाया जाता था। बच्चे मोहल्ले के सभी घरों को अपना ही घर मानकर चलते थे तो मोहल्ले में रहने वाले किसी का भी बच्चा हो उसे अपने बच्चे जितना ही प्यार और दुलार देते थे। दुख-दर्द में पूरा मोहल्ला साथ हो जाता था। मोहल्ले में किसी घर में मौत हो जाती थी तो पड़ोसी उस परिवार को संभालने और देखभाल की जिम्मेदारी स्वयं अपने हाथ में ले लेते थे। शादी-विवाह में काम बंट जाता था, आज तो कैटरिंग का जमाना आ गया नहीं तो सैकड़ों लोगों को परिवार और मोहल्ले के युवा ही भोजन कराने की जिम्मेदारी निभा लेते थे।

सामाजिक ताने-बाने में बदलाव को इस तरह से आसानी से समझा जा सकता है कि सोशियोट्रॉपी आज बीते जमाने की बात होती जा रही है। कोरोना के बाद तो हालात में और भी अधिक बदलाव आया है। आज की पीढ़ी में सामाजिकता का स्थान वैयक्तिकता लेती जा रही है। एक समय था जब सामाजिकता को वैयक्तिकता के स्थान पर अधिक तरजीह दी जाती थी। परिवार, मोहल्लों और आसपास कोई ना कोई ऐसे अवश्य मिल जाते थे जो जगत मामा तो कोई जगत काका तो कोई जगत दादा होते थे। छोटा हो या बड़ा, दादी हो या पोती, सास हो या बहू सब उन्हें प्रसिद्ध नाम से ही पुकारते थे। यह था एक तरह का अपनत्व। इस तरह के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सभी के चहेते होते थे तो जान-पहचान हो या ना हो, वे जरूरत के समय पहुंच जाते थे। सुख-दुख खासतौर से मुसीबत के समय ऐसे व्यक्ति आगे रहते थे। हालांकि आज इस तरह के व्यक्तित्व को ढूंढना लगभग असंभव सा है।

दरअसल, हमारी परंपरा व्यष्टि का ना होकर समष्टि की रही है। बच्चों को पहले सामाजिकता का पाठ पढ़ाया जाता था। बच्चे मोहल्ले के सभी घरों को अपना ही घर मानकर चलते थे तो मोहल्ले में रहने वाले किसी का भी बच्चा हो उसे अपने बच्चे जितना ही प्यार और दुलार देते थे। दुख-दर्द में पूरा मोहल्ला साथ हो जाता था। मोहल्ले में किसी घर में मौत हो जाती थी तो पड़ोसी उस परिवार को संभालने और देखभाल की जिम्मेदारी स्वयं अपने हाथ में ले लेते थे। शादी-विवाह में काम बंट जाता था, आज तो कैटरिंग का जमाना आ गया नहीं तो सैकड़ों लोगों को परिवार और मोहल्ले के युवा ही भोजन कराने की जिम्मेदारी निभा लेते थे। हलवाई के काम शुरू करते ही मोहल्ले के लोग बारी-बारी से देखरेख व सहयोग के लिए तैयार रहते थे। आज यह सब बदल गया है। गगनचुंबी इमारतों में कई परिवार रहते हैं और हालात यहां तक हो गए हैं कि एक ही कॉम्पलेक्स या अपार्टमेंट में रहने वाले एक-दूसरे को पहचानते नहीं। ऐसे में आपसी सहयोग और मेल-मिलाप की बात करना बेमानी होगा।

सोशियोट्रापी मनोविज्ञान में प्रयोग होता है। इसे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही अर्थों में लिया जाता है। दूसरों को खुश रखने की खुशी में अपने खुशी को भूल जाना वाली मनोस्थिति को भी सोशियोट्रापी के रूप में देखा जाता है। यही कारण है कि इस एकांगिग अर्थ को लेने के चक्कर में सोशियोट्रोपी मानसिकता वाले लोगों के अवसादग्रस्त, तनाव पीड़ित और हमेशा चिंतित रहने की मनोदशा को साइड इफेक्ट के रूप में देखा जाता है। जबकि सोशियोट्रापी यहीं तक सीमित नहीं है। दूसरे के दुख-दर्द में भागीदार होना, आवश्यकता के समय निःस्वार्थ सहयोग व सहायता करना, दूसरे की परेशानी को समझना और उसे दूर करने में यथासंभव सहयोग करना यह सोशियोट्रापी का ही एक रूप है। हमारी परंपरा में जो व्यक्ति केवल अपने आप के बारे में सोचता है उसे एकलखोर या स्वार्थी कहा जाता रहा है। हमारी परंपरा वसुधैव कुटुम्बकम की रही है। हमारी परंपरा में दूसरे की उन्नति देखकर प्रसन्न होने की भावना रही है। खुशी के मौके पर मिठाई बांटना खुशी में सभी को भागीदार बनाना है। इसी तरह से जरूरत के समय खड़े हो जाना जरूरतमंद के लिए संबल होता है।

देखा जाए तो बदलते सामाजिक ताना-बाना से सबकुछ बदल कर रख दिया है। एकल परिवार की संस्कृति समाज में अपना प्रभुत्व जमा चुकी है। परिवार पति-पत्नी और बच्चों तक सीमित होता जा रहा है। जो भावनात्मकता संबंधों को तरोताजा रखती थी वह भावनात्मकता कहीं खो गई है। अवकाश के दिनों का उपयोग दादा-दादी या नाना-नानी के पास गुजारने के स्थान पर कहीं घूमने में जाया होने लगा है। एक समय था जब गांव से यात्रा पर भी जाते थे तो गांव के कई परिवार के लोग उस भ्रमण दल में होते थे। हालात तो यहां तक होने लगे हैं कि घर के बुजुर्ग सदस्य को जिसे साथ की अधिक आवश्यकता है, घर की देखभाल के लिए छोड़ना आज आम होता जा रहा है। खुशी के पल को साझा करने का तरीका भी बदल गया है। जिस तरह की प्राथमिकताएं बदली हैं वह पीपल प्लीजर के स्थान पर सेल्फ प्लेजर होती जा रही है।

दरअसल सामाजिकता के जो मायने एक समय होते थे उसमें कोई क्या कहेगा महत्वपूर्ण होता था, सामाजिक प्रतिक्रिया का बड़ा भय होता था, आज हालात यह है कि मां-बाप क्या कहेंगे इसकी भी परवाह नहीं रही है। दरअसल न्यूक्लियर फैमेली के यह साइड इफैक्ट है जो लोगों को सोशियोट्रापी से दूर ले जाते हैं। पाश्चात्य देशों द्वारा अब इसकी अहमियत सामने आने लगी है। ब्रिटेन में पिछले दिनों एक अध्ययन में सामने आया है कि अब बच्चों का जब भी मौका मिलता है परिवार यानी दादा-दादी या नाना-नानी का साथ जरूरी माना जाने लगा है। क्योंकि सामाजिक ताना-बाना में बिखराव के कारण ही आज की पीढ़ी रिश्तों की अहमियत भूलती जा रही है।

असली इमरजेंसी और नकली इमरजेंसी

लेखक

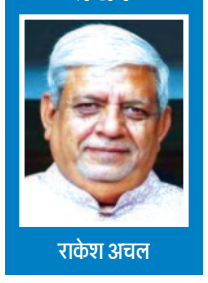

राकेश अचल

कंगना रनौत की बहुचर्चित फिल्म इमरजेंसी बॉक्स आफिस पर हिट होती है या फ्लाफ ये कहना अभी कठिन है क्योंकि ; इमरजेंसी की ओपनिंग से कोई भी अनुमान लगना कठिन है। इमरजेंसी ने दर्शकों को फिलहाल दो दिन तो अपनी और आकर्षित कर ये संकेत दिए हैं कि इमरजेंसी आज भी कौतूहल का विषय है और किंचित लोकप्रिय भी। सिनेप्लेक्स में फिल्म देखने वाली आज की पीढ़ी ने सचमुच की इमरजेंसी नहीं देखी, इसलिए उसे भाजपा संसद कंगना रनौत की इमरजेंसी में स्वाभाविक दिलचस्पी है। देश में आजादी के बाद पहली और फिलहाल अंतिम बार इमरजेंसी यानि आपातकाल 50 साल पहले लगा था। उस समय कांग्रेस का शासन था और प्रधानमंत्री के पद पर श्रीमती इंद्रा गाँधी आसीन थीं। इमरजेंसी लागू होने के बाद विपक्षी नेताओं को चुन-चुन कर गिरफ्तार किया गया और उन्हें जेल में डाल दिया गया था। आज की इमरजेंसी रजतपट की इमरजेंसी है। इसके जरिये तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को एक खलनायिका के रूप में प्रस्तुत करना और इसके जरिये दिल्ली जीतने की एक अतृप्त अभिलाषा को पूरा करना है। चुनाव जितने के लिए इमरजेंसी की तर्ज पर पहले भी अनेक फ़िल्में बन चुकीं हैं। असली इमरजेंसी 25 जून, 1975 को घोषित की गयी थी, इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार की सिफारिश पर तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने आपातकाल लगाए जाने पर अपनी मुहर लगाई थी। ये इमरजेंसी 21 मार्च, 1977 तक देशभर में लागू रही। स्वतंत्र भारत के इतिहास में ये 21 महीने काफी विवादास्पद रहे। इन 21 महीनों में जो कुछ भी हुआ। सत्ता दल अभी भी कांग्रेस को समय-समय पर कोसते रहते हैं। संयोग से इन पंक्तियों का लेखक यानि मै समझदार हो चुका था, लेकिन क़ानून की दृष्टि में नाबालिग था इसलिए औरों की तरह जेल नहीं गया।उन दिनों दूरदर्शन नहीं था केवल रेडियो था इसलिए देश में इमरजेंसी लगाए जाने की घोषणा तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने रेडियो के माध्यम से की थी। 26 जून, 1975 की सुबह इंदिरा गांधी ने ऑल इंडिया रेडियो पर कहा, राष्ट्रपति ने देश में इमरजेंसी की घोषणा कर दी है। इसमें घबराने की कोई बात नहीं है।

मुझे अच्छी तरह से याद है कि आपातकाल की घोषणा किए जाने के कुछ ही समय पहले ही सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस फैसले पर सशर्त रोक लगा दी, जिसमें लोकसभा के लिए उनके चुनाव को अमान्य घोषित किया गया था। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को संसदीय कार्यवाही से दूर रहने को भी कहा था। वैसे इमरजेंसी से पहले इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस ने 1971 के लोकसभा चुनावों में शानदार जीत हासिल की थी। तत्कालीन 521 सदस्यीय संसद में कांग्रेस ने 352 सीटें जीती थीं। दिसंबर 1971 में बांग्लादेश को पाकिस्तान के युद्ध से आजाद कराकर इंदिरा गांधी आयरन लेडी के नाम से जानी जा रही थीं। इसके कुछ सालों बाद ही देश में इमरजेंसी की घोषणा ने आयरन लेडी के कामों पर ही सवाल खड़े कर दिए थे।

जिन परिस्थितियों में देश में पहली बार इमरजेंसी लगाईं गयी थी उन दिनों के हालात आज के हालत जैसे ही थे। जैसे आज नरेंद्र मोदी की सरकार पर आरोप लगाए जा रहे हैं ठीक वैसे ही आरोप इंदिरा गांधी की सरकार पर लगाए जा रहे थे। गुजरात में सरकार के खिलाफ छात्रों का नवनिर्माण आंदोलन चल रहा था। बिहार में जयप्रकाश नारायण का आंदोलन चल रहा था। 1974 में जॉर्ज फर्नांडिस के नेतृत्व में रेलवे हड़ताल चल रही थी। 12 जून, 1975 का इलाहाबाद हाई कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जिसमें रायबरेली से इंदिरा गांधी के लोकसभा के लिए चुनाव को अमान्य घोषित कर दिया गया था। गुजरात चुनावों में पांच दलों के गठबंधन से कांग्रेस की हार और 26 जून 1975 को दिल्ली के रामलीला मैदान में विपक्ष की रैली ने इंदिरा गांधी की सरकार को मुश्किल में डाल दिया था। हलनिक आज का विपक्ष का गठबंधन मोदी जी कि लिए उतना खतरनाक नहीं बन पाया है।

देश में यदि इमरजेंसी न लगती तो देश को भाजपा न मिलती। देश में नफरत की वो आंधी न चलती जो आज चल रही है। इंदिरा गाँधी की इमरजेंसी में तमाम ज्यादतियां भी हुईं, लोगों की जबरन नसबंदी कराई गयी, अतिक्रमण विरोधी अभियान चलाये गए। लेकिन इमरजेंसी में नागरिक बोध भी बढ़ा। सरकारी दफ्तरों में अधिकारी कर्मचारी ही नहीं बल्कि रेलें ,बसें भी समय से चलने लगीं। लेकिन इमरजेंसी एक काला अध्याय बनी सो बनी। इस इमरजेंसी के लिए बाद में कांग्रेस और इंदिरा गाँधी परिवार के अनेक सदस्य सदन के भीतर और सदन के बाहर देश से माफ़ी भी मांग चुके हैं ,लेकिन भाजपा ने कांग्रेस को कभी माफ़ नहीं किया, और आज तो इमरजेंसी पर फिल्म ही बना दी। देश में इमरजेंसी पर पहले भी अनेक फ़िल्में बनी। किस्सा कुर्सी का और आंधी जैसी फ़िल्में भी बनीं, लेकिन वे भी कांग्रेस के खिलाफ वातावरण पैदा नहीं कर पायी। पीछे वर्षों में कांग्रेस को खलनायक साबित करने के लिए दी कश्मीर फाइल बनी,केरल फाइल बनी। फिल्मों के जरिये राजनेताओं को नायक और खलनायक बनाने की मुहीम जारी है। सरकार खुद इन फिल्मों का प्रमोशन करती है। हाल ही में दी साबरमती बनी। खुद प्रधानमंत्री जी ने इनका प्रमोशन किया। इमरजेंसी फिल्म के लिए भाजपा की वे संसद कंगना रनौत काम आयीं जो देश की आजादी का दिन 15 अगस्त 1947 नहीं 5 अगस्त 2014 मानतीं हैं। कंगना ने श्रीमती इंदिरा गाँधी की भूमिका में जान डालने की बहुत कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं हुईं।कंगना से पहले सुचित्रा सेन ने फिल्म आंधी में इंदिरा गाँधी बनने की कोशीश कीथी इमरजेंसी देखकर लौटे हमरे मित्र बता रहे हैं कि कंगना की इमरजेंसी इंदिरा गाँधी को खलनायक भी ढंग से नहीं बना पायी ,कोशिश जरूर की। बेहतर होता की फिल्म के लिए कंगना की जगह प्रियंका वाड्रा को चुना जाता । एक तो कंगना के मेकअप का खर्च बचता ,दूसरे अभिनय में जान भी आती। दरअसल इंदिरा गाँधी की नकल करना आसान नहीं है। इंदिरा गाँधी को उनके अपराध के लिए देश की जनता ने असली इमरजेंसी के ढाई साल बाद ही माफ़ कर दिया था और प्रचंड बहुमत से जीतकर वापस सत्ता सौंपी थी।

राशिफल

मेष महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे।

वृष स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी।

मिथुन संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है।

कर्क व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। सच्चाई का सहारा लें कार्यसिद्धि होगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। समय आपके पक्ष का बना रहेगा।

सिंह कार्यक्षेत्र में आगे बढने में रुकावट का एहसास होगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें।

कन्या मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निपटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी।

तुला जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए।

वृश्चिक मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी।

धनु व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा। माता पक्ष से विशेष लाभ होगा।

मकर शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार मिलेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी।

कुंभ किसी से कहा सुनी न हो यही ध्यान रहे। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती हैं। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी।

मीन संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। सब्र का फल मीठा होता है। अतः धैर्य रखें व अच्छे समय इन्तजार करें। कर्म प्रधान विचार धारा बनाये रखें। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। मनोबल ऊंचा रखें काम में लगे रहें लाभ होगा।

युद्ध विराम समझौते का ईमानदारी से पालन करना है जरूरी

लेखक

ललित गर्ग

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार हैं।)

> अक्तूबर, 2023 में हमास के हमले से आहत इस्राइल कई मोर्चों पर लगातार युद्ध से थक चुका है, लेकिन अभी भी अरब जगत उसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठा रहा है। ऐसी आशंका इसीलिए भी है कि कई बार बातचीत अंतिम दौर पर पहुंचते-पहुंचते पटरी से उतरती गई है। बात और घात लगातार चलते रहे हैं। अब भविष्य में देखना होगा कि दोनों पक्ष समझौते के अमल के प्रति कितनी ईमानदारी से प्रतिबद्ध नजर आते हैं। हालांकि, अपने बंधकों की जल्द रिहाई को लेकर इस्राइल के विपक्षी राजनीतिक दलों व मंत्रिमंडल में भी मतभेद उभर रहे हैं।

यह शांतिपूर्ण विश्व संरचना के लिये सुखद ही है कि करीब डेढ़ वर्ष से जारी इस्राइल-हमास संघर्ष खत्म करने के लिये युद्धविराम पर सहमति बन गई है। लेकिन इस एवं ऐसे युद्धों ने ऐसे अनेक ज्वलंत प्रश्न खड़े किये हैं कि जब युद्ध की अन्तिम निष्पत्ति टेबल पर बैठकर समझौता करना ही है तो यह युद्ध के प्रारंभ में ही क्यों नहीं हो जाता? युद्ध भीषणतम तबाही, असंख्य लोगों की जनहानि एवं सर्वनाश का कारण बनता है तो ऐसी तबाही होने ही क्यों दी जाये? खेर देर आये दुरस्त आये, इजराइल और हमास ने बुधवार को युद्ध विराम समझौते के पहले मसौदे पर सहमति जताई, जो संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में अब तक का सबसे बड़ा एवं अहम कदम है। अन्य बातों के अलावा, 60-दिवसीय युद्ध विराम प्रक्रिया में दोनों पक्षों के बंधकों को रिहा करना, सहायता बढ़ाना, नष्ट हो चुके फिलिस्तीन का पुनर्निर्माण करना और हमलों को रोकना शामिल होगा। डेढ़ साल से अधिक समय के युद्ध के बाद, युद्ध विराम फिलिस्तीन के लोगों तथा हमास द्वारा बंधक बनाए गए लोगों के लिए बहुत जरूरी राहत है। इसी तरह रूस एवं यूक्रेन के बीच लम्बे समय से चल रहा युद्ध भी समाप्त हो, यह शांतिपूर्ण उन्नत विश्व संरचना के लिये नितांत अपेक्षित है। क्योंकि ऐसे युद्धों से युद्धरत देश ही नहीं, समूची दुनिया पीड़ित, परेशान एवं प्रभावित होती है। इस तरह युद्धरत बने रहना खुद में एक असाधारण और अति-

संवेदनशील मामला है, जो समूची दुनिया को विनाश एवं विध्वंस की ओर धकेलने देता है। ऐसे युद्धों में वैसे तो जीत किसी की भी नहीं होती, फिर भी इन युद्धों का होना विजेता एवं विजित दोनों ही राष्ट्रों को सदियों तक पीछे धकेल देता, इससे भौतिक हानि के अतिरिक्त मानवता के अपाहिज और विकलांग होने के साथ बड़ी जनहानि का भी बड़ा कारण बनता है।

इस्राइल-हमास में पिछले डेढ़ साल से चल रहे युद्ध के विराम को एक अहम कामयाबी माना जा रहा है। भले ही इस समझौते के लिये अमेरिका में सत्ता परिवर्तन के बीच संघर्ष समाप्ति का श्रेय लेने की होड़ हो, लेकिन गाजा के लोग जिस मानवीय त्रासदी से जूझ रहे थे, उन्हें जरूर इससे बड़ी राहत मिलेगी। संयुक्त राष्ट्र के तमाम प्रयासों व मध्यपूर्व के इस्लामिक देशों एवं भारत की बार-बार की गई पहल के बावजूद अब तक शांति वार्ता सिरे न चढ़ सकी थी। जिसकी कीमत करीब पचास हजार लोगों ने अपनी जान देकर चुकायी। इस युद्ध से गाजा के विभिन्न क्षेत्रों में जो तबाही हुई है, उससे उबरने में दशकों लग सकते हैं। निस्संदेह, इस्राइल व हमास के बीच युद्ध विराम पर सहमति होना महत्वपूर्ण है, लेकिन जब तक समझौता यथार्थ में लागू होता न नजर आए, तब कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। संघर्ष में वास्तव में हमास के कितने लड़ाके मारे गए यह कहना कठिन है, लेकिन बड़ी संख्या में बच्चों-महिलाओं ने युद्ध में जान गवांई। एक अनुमान के अनुसार गाजा संघर्ष में उपजी मानवीय त्रासदी में करीब बीस लाख लोग विस्थापित हुए हैं। इस्राइली हमलों में अस्पताल-स्कूल भी निशाना बने, जिन्हें शरणार्थियों की सुरक्षित पनाहगाह माना जाता है। इस्राइल पर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में युद्ध अपराध तक के आरोप लगाए गए। बहरहाल, जब लंबे समय के बाद शांति की स्थितियां बन रही हैं तो विश्व समुदाय, शक्तिशाली राष्ट्रों व संयुक्त राष्ट्र का दायित्व बनता है कि समझौते की शर्तों को साफ नियत एवं नीति से क्रियान्वित किया जाये। ताकि मध्यपूर्व में स्थायी शांति एवं अमनचैन की राह मजबूत हो सके। निश्चित रूप से युद्ध शांति का विकल्प नहीं हो सकता। इस संघर्ष की शुरुआत भले हमास ने की हो, लेकिन इसकी सबसे बड़ी कीमत उन लोगों ने चुकाई, जो इसके लिये जिम्मेदार नहीं थे।

युद्ध के आघात से युद्धरत देशों के साथ समूची दुनिया प्रभावित हुई है। युद्ध के आघात से तात्पर्य युद्ध के दौरान होने वाली दर्दनाक घटनाओं के परिणामस्वरूप व्यक्तियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले मनोवैज्ञानिक संकट और शारीरिक-भावनात्मक पीड़ा से है, जैसे कि हिंसा का शिकार होना, दूसरों को नुकसान पहुंचाना, या संघर्ष के कारण प्रियजनों को खोना। युद्ध सामाजिक विश्वास को तोड़ता है, सामाजिक सामंजस्य को कम करता है और सामाजिक एवं राष्ट्रीय पूंजी को नुकसान पहुंचाता है। सशस्त्र संघर्ष के बाद, समाज उपसमूहों में गहराई से विभाजित हो जाता है जो युद्ध विराम के समझौते के बावजूद बाद के दौर में एक दूसरे से डरते हैं और नफरत करते हैं और लड़ाई जारी रखने के लिए तैयार रहते हैं। युद्ध के आघात से पीड़ित लोगों में अक्सर दूसरे पक्ष के साथ मेल-मिलाप करने और शांतिपूर्ण समाधान खोजने की इच्छा कम हो जाती है। कमजोर नागरिक समाज और कम सरकारी क्षमताएं लोगों को बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ बना सकती हैं और राज्य के बिगाड़ने वालों या राजनीतिक विरोधियों द्वारा आसानी से हेरफेर किया जा सकता है। यह स्थिति अक्सर हिंसा के निरंतर चक्रों के लिए मंच तैयार करती है। हालांकि, अक्तूबर, 2023 में हमास के हमले से आहत इस्राइल कई मोर्चों पर लगातार युद्ध से थक चुका है, लेकिन अभी भी अरब जगत उसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठा रहा है। ऐसी आशंका इसीलिए भी है कि कई बार बातचीत अंतिम दौर पर पहुंचते-पहुंचते पटरी से उतरती गई है। बात और घात लगातार चलते रहे हैं। अब भविष्य में देखना होगा कि दोनों पक्ष समझौते के अमल के प्रति कितनी ईमानदारी से प्रतिबद्ध नजर आते हैं। हालांकि, अपने बंधकों की जल्द रिहाई को लेकर इस्राइल के विपक्षी राजनीतिक दलों व मंत्रिमंडल में भी मतभेद उभर रहे हैं, लेकिन इतनी लंबी लड़ाई के बाद थक चुकी इस्राइली सेना को भी राहत देने की मांग की जाती रही है। बहरहाल, युद्ध विराम के प्रश्न पर इस्राइल व हमास के बीच सहमति से शांति की उम्मीदें प्रबल हुई हैं। जहां एक ओर अमेरिका में वर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडेन व नव निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप समझौते के लिए श्रेय ले रहे हैं, वहीं ईरान इसे फलस्तीनी प्रतिरोध की जीत बता रहा है। अभी गाजा में मानवीय सहायता पहुंचाने के मार्ग में आने वाली बाधाओं को भी दूर किया जाना है। दरअसल, सात अक्तूबर 2023 को हमास के क्रूर हमलों में इस्राइल के बारह सौ लोग मारे गए थे और करीब ढाई सौ लोगों को हमास के लड़ाके सौदेबाजी के लिये बंधक बनाकर ले गए थे।

विघ्नहर्ता गणेश को ऐसे मनाएं

विघ्नहर्ता विनायक भगवान गणेश की पूजा यदि सच्चे मन से की जाए तो हर समस्या का समाधान संभव है। बुधवार भगवान गणेश का दिन होता है। बुधवार को गणेश की पूजा करें तो संतान, शिक्षा और भाग्य समृद्ध होता है। गणपति की उपासना से कुंडली के अशुभ योग भी खत्म हो जाते हैं। इसीलिए कलयुग में उन्हें विघ्नविनाशक के रूप में पूजा जाता है। श्रीगणेश जी की बुधवार को पूजा करने का विधान हमारे धर्मग्रंथों में मौजूद है।

बुधवार को प्रातःकाल में स्नानादि से निवृत होकर ताम्र पत्र के श्री गणेश यन्त्र को नमक, नींबू से अच्छे से साफ करें। यंत्र को शुद्ध जल से धोने के बाद पूजा स्थल पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर के आसान पर विराजमान हो कर सामने श्री गणेश यन्त्र की स्थापना करें। आसान पर बैठने के बाद दांयी हथेली में जल ले कर आसान व भूमि पर जल छिड़कते हुए नीचे लिखे मंत्र को पढ़ें....

ऊं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः।।

अब गणेश यंत्र को शुद्ध जल चढ़ाते हुए मंत्र बोले

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

यदि आप इस मंत्र की आराधना सच्चे मन से करते हैं तो आपकी मनोकामना जरूर पूरी होती है।

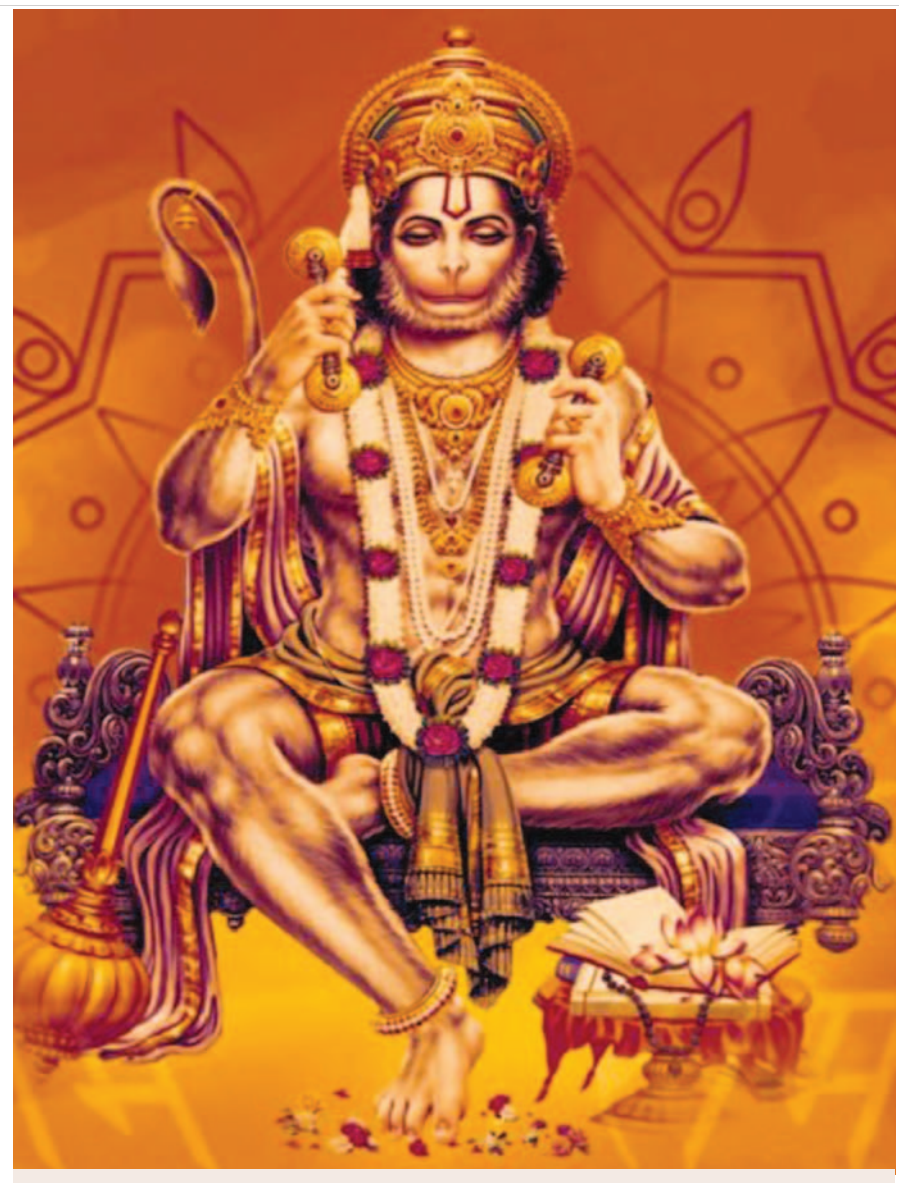

जैन मुनि को केश-लोचन करना अनिवार्य होता है

हाल ही में गुजरात 12वीं बोर्ड में 99.99 प्रतिशत हासिल करने वाले वर्शिल शाह जैन, जैन संत बन गए हैं। वर्शिल महज 17 साल के हैं और गुजरात के ही पालड़ी के रहने वाले हैं। दर्शिल अब जैन मुनि सुवीर्य रत्न विजयजी महाराज के नाम से जाने जाएंगे। पिछले वर्षों में गौर किया जाए तो युवाओं द्वारा संन्यास लेने की सिलसिला काफी बड़ा है। जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भले ही यह पूरा घटनाक्रम सकारात्मक हो, लेकिन जैन धर्म के इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे कि जैन धर्म में संन्यास लेने वाले अनुयायी को मुनि की उपाधि दी जाती है। संन्यास लेने के बाद जैन मुनि को निर्ग्रन्थ भी कहा जाता है। मुनि शब्द पुरुषों के लिए तो आर्यिका शब्द स्त्री संन्यासियों को संबोधित किया जाता है। प्रत्येक जैन मुनि को केश-लोच करना अनिवार्य होता है।

तो क्या इतना प्राचीन है जैन धर्म

जैन धर्म ग्रंथों के अनुसार यह धर्म अनादि और सनातन है। यदि आर्यों के भारत आने के बाद से भी देखा जाये तो ऋषभदेव और अरिष्टनेमि को लेकर जैन धर्म की परंपरा वेदों तक पहुंचती है। पुराणों में वर्णित है महाभारत के युद्ध के समय इस संप्रदाय के प्रमुख नेमिनाथ थे, जो जैन धर्म में मान्य तीर्थंकर हैं। आठवीं सदी में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ हुए, जिनका जन्म काशी में हुआ था। काशी के पास ही 11वें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्म हुआ था। इन्हीं के नाम पर सारनाथ का नाम प्रचलित है। जैन धर्म में श्रमण संप्रदाय का पहला संगठन पार्श्वनाथ ने किया था। ये श्रमण वैदिक परंपरा के विरुद्ध थे। महावीर तथा बुद्ध के काल में ये श्रमण कुछ बौद्ध तथा कुछ जैन हो गए थे। इन दोनों ने अलग-अलग अपनी शाखाएं बना लीं। भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे, जिनका जन्म लगभग ई.पू. 599 में हुआ और जिन्होंने 72 वर्ष की आयु में देहत्यागी। महावीर स्वामी ने शरीर त्यागने से पहले जैन धर्म की नींव काफी मजबूत कर दी थी। अहिंसा को उन्होंने जैन धर्म में अच्छी तरह स्थापित कर दिया था। सांसारिकता पर विजयी होने के कारण वे जिन (जयी) कहलाए। उन्हीं के समय से इस संप्रदाय का नाम जैन हो गया।

क्या आप भी भगवान को फूल चढ़ाते हैं

राजा राम मोहन राय के बगीचे में बड़े ही सुंदर फूलों के पेड़ लगे थे। एक व्यक्ति था जो हर रोज वहां आता और उनसे पूछे बिना ही पूजा के लिए फूल तोड़ कर ले जाता। यह सिलसिला लगातार कई दिनों तक चलता रहा। रोज की तरह ही एक दिन उस व्यक्ति ने फूल तोड़ने के लिए अपनी चादर उतारी और पेड़ पर लटका कर फूल तोड़ने लगा। उसी समय राजा राम मोहन राय के आदेशानुसार एक सेवक ने उस व्यक्ति की वह चादर उठा ली और राजा राम मोहन राय को दे दी।

फूल तोड़ने के बाद जब वह व्यक्ति अपनी चादर लेने के लिए उस पेड़ के पास गया, जहां उसने उसे लटकाई थी, तो वहां चादर न देख वह हैरान रह गया और सोचने लगा कि आखिर उसकी चादर गई कहां? वह गुस्से से आग-बबूला हो गया। कुछ देर बाद राजा राम मोहन राय आए और उन्होंने उस व्यक्ति को उसकी चादर लौटाते हुए कहा, 'अब तो खुश हैं आप, आपको आपकी चादर वापस मिल गई।

उस व्यक्ति ने गुस्से में ही जवाब दिया, खुश? इसमें खुश होने वाली कौन-सी बात है, मुझे अपनी ही वस्तु मिली है।''

राजा राम मोहन राय ने उस व्यक्ति से पूछा, आप रोज फूल तोड़कर कहां ले जाते हैं?

उस व्यक्ति ने जवाब दिया, मैं ये फूल तोड़कर मंदिर में ले जाता हूं। भगवान को खुश करने के लिए उनको ये फूल अर्पित करता हूं।

राजा राम मोहन राय ने उस व्यक्ति का यह जवाब सुनकर कहा, पहली बात तो यह कि आप बिना पूछे ही फूल तोड़कर ले जाते हैं। चलो कोई बात नहीं, लेकिन आप भगवान की दी हुई वस्तु भगवान को अर्पित करते हैं, तो इससे भगवान खुश होते हैं क्या?

उस व्यक्ति ने कहा, क्यों नहीं, भगवान को फूल ही तो पसंद हैं, भगवान को फूलों से खुशी मिलती है।

राजा राम मोहन राय ने उस व्यक्ति से कहा, तो आपको चादर मिलने पर खुशी क्यों नहीं हुई?

राजा राम मोहन राय की यह बात सुनकर वह व्यक्ति सोच में पड़ गया और राजा राम मोहन राय बिना कुछ और कहे लौट गए।

फलदायी होती हैं हनुमान चालीसा की ये चौपाइयां

हनुमानजी की स्तुति हनुमान चालीसा से हम सभी परिचित हैं। हनुमान चालीसा की रचना गोस्वामी तुलसीदास जी ने की थी। हिंदू धर्म ग्रंथों में उल्लेखित है कि बाल्यकाल में जब हनुमानजी ने सूर्य को मुंह में रख लिया तब सूर्य को मुक्त कराने के लिए देवराज इंद्र ने हनुमानजी पर शस्त्र से प्रहार किया। इसके बाद हनुमान जी मूर्छित हो गए। हनुमानजी के मूर्छित होने की बात जब वायु देव को पता चली तो काफी नाराज हुए। लेकिन जब सभी देवताओं को पता चला कि हनुमानजी भगवान शिव के रुद्र अवतार हैं, तब सभी देवताओं ने हनुमानजी को कई शक्तियां दीं। देवताओं ने जिन मंत्रों और हनुमानजी की विशेषताओं को बताते हुए उन्हें शक्ति प्रदान की थी, उन्हीं मंत्रों के सार को गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान चालीसा में वर्णित किया है। हनुमान चालीसा में मंत्र नहीं हैं लेकिन हनुमानजी की पराक्रम की विशेषताएं बताई गईं हैं। हनुमान चालीसा में ही ऐसी 5 चौपाईयां हैं, जिनका यदि नियमित सच्चे मन से वाचन किया जाए तो यह परम फलदायी सिद्ध होती हैं। हनुमान चालीसा का वाचन मंगलवार या शनिवार करना शुभ होता है। ध्यान रखें हनुमान चालीसा की इन चौपाइयों को पढ़ते समय उच्चारण की त्रुटि न करें।

भूत-पिशाच निकट नहीं आवे। महावीर जब नाम सुनावे।।

उपाय- यदि व्यक्ति को किसी भी प्रकार का भय सताता है तो नित्य रोज प्रातः और सायंकाल में 108 बार इस चौपाई का जाप किया जाये तो सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बल बीरा।।

उपाय- यदि व्यक्ति बीमारियों से घिरा रहता है तो निरंतर सुबह-शाम 108 बार जप करके तथा मंगलवार को हनुमान जी की मूर्ति के सामने पूरी हनुमान चालीसा के पाठ से रोगों की पीड़ा खत्म हो जाती है।

अष्ट-सिद्धि नवनिधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।

उपाय- यदि जीवन में व्यक्ति को शक्तियों की प्राप्ति करनी है ताकि जीवन निर्वाह में मुश्किलों का कम सामना करना पड़े तो नित्य रोज, ब्रह्म मुहूर्त में आधा घंटा इन पंक्तियों के जप से लाभ प्राप्त हो सकता है।

विद्यावान गुनी अति चातुर। रामकाज करीबे को आतुर।।

उपाय- यदि किसी व्यक्ति को विद्या और धन चाहिए तो इन पंक्तियों के जप से हनुमान जी का आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है। प्रतिदिन 108 बार ध्यानपूर्वक जप करने से व्यक्ति के धन सम्बंधित दुःख दूर हो जाते हैं।

भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचंद्रजी के काज संवारे।।

उपाय- यदि कोई व्यक्ति शत्रुओं से परेशान हैं या व्यक्ति के कार्य नहीं बन पा रहे हैं तो हनुमान चालीसा की इस चौपाई का कम से कम 108 बार जप करना चाहिए।

संसार का हर धर्म शुभ-अशुभ और पाप-पुण्य के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। अच्छे-बुरे या पाप-कर्म और पुण्य कर्म का चयन मनुष्य स्वयं करता है। यदि हम हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार विचार करें तो सगुण ईश्वर का अवतार अशुभ के विनाश के लिए ही होता है। जैसा कि गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं जब-जम अधर्म का विस्तार होता है मैं धर्म की स्थापना के लिए अवतार ग्रहण करता हूं।

पाप-कर्म और पुण्य-कर्म का चयन मनुष्य स्वयं करता है

शुभ और अशुभ व पुण्य और पाप की समस्या कर्म-फल-सिध्दांत पर आधारित हैं। जीव यदि अशुभ कर्मों की ओर प्रेरित होता है तो इसके पीछे उसकी अल्पज्ञता, अज्ञान होता है। संसार का हर धर्म शुभ-अशुभ और पाप-पुण्य के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। ईसाई धर्म में ईश-चिंतन के संदर्भ में उक्त विचारधारा प्राप्त होती है। ईश्वर परम शुभ है। अतः उस पर पाप या अशुभ का आरोपण नहीं किया जा सकता। बाइबिल में काम-वासना को पाप या अशुभ की संज्ञा दी गई है और उसका शैतान कहा गया है। ईसाई नीतिशास्त्र में पाप या अशुभ पर विचार करते हुए कतिपय महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए हैं। इस संसार का निर्माण परमेश्वर ने किया, किन्तु संसार में सर्वत्र पाप ही पाप है। यदि ईश्वर ने सृष्टि की रचना की और ईश्वर शुभ और सर्वशक्तिमान है तो सृष्टि में शुभ ही शुभ होना चाहिए। ईसाई धर्म के अनुसार ईश्वर ने मनुष्य को कर्म की स्वतंत्रता प्रदान की है। अतः अच्छे-बुरे या पाप-कर्म और पुण्य कर्म का चयन मनुष्य स्वयं करता है। यदि हम हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार विचार करें तो सगुण ईश्वर का अवतार अशुभ के विनाश के लिए ही होता है। जैसा कि गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं जब-जम अधर्म का विस्तार होता है मैं धर्म की स्थापना के लिए अवतार ग्रहण करता हूं। बाइबिल में ईसा मसीह को पुत्रेश्वर कहा गया है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में ईसा मसीह संसार के पापों को दूर करने के लिये-ही धरती पर आए थे।

मालवा की वैष्णो देवी नीमच की भादवा माता

गुप्त नवरात्र शुरू हो गए हैं। इस मौके पर हम आपको एक ऐसे शक्तिपीठ के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि उनकी कृपा से शहर में कोई भूखा नहीं सोता। किसी के पास पैसे की तंगी नहीं रहती है। लोक कथाओं के अनुसार, हरसिद्धि मंदिर में उज्जैन के राजा रहे विक्रमादित्य की आराध्य देवी का वास है। शिवपुराण के अनुसार दक्ष प्रजापति के हवन कुंड में माता के सती हो जाने के बाद भगवान भोलेनाथ सती को उठाकर ब्रह्मांड में ले गए थे। इस दौरान माता सती के अंग जिन स्थानों पर गिरे, वहां शक्तिपीठ स्थापित हो गए। कहा जाता है इस स्थान पर माता के दाहिने हाथ की कोहनी गिरी थी और इसी कारण से यह स्थान भी एक शक्तिपीठ बन गया है। स्कंद पुराण के अनुसार, देवी को चंड एवं मुंड नामक राक्षस के वध के लिए भगवान शिव से सिद्धि मिली थी, इसीलिए वह हरसिद्धि कहलाईं। गर्भगृह में एक शिला पर श्रीयंत्र उत्कीर्ण है, जो शक्ति का प्रतीक है। यहां माता लक्ष्मी, महासरस्वती के साथ ही अन्नपूर्णा माता विराजमान हैं। यह स्थान उज्जैन के प्राचीन देवी स्थानों में अपना विशेष महत्व रखता है। वर्तमान में मंदिर के पुनर्निर्माण का श्रेय मराठों को जाता है। मंदिर के सामने मराठा वास्तुकला के अनुसार दीप स्तंभ स्थापित किए गए हैं, जिनमें 1001 दिये बने हुए हैं। दक्षिण में बनी एक बावड़ी पर 1447 संवत का एक शिलालेख भी उत्कीर्ण है। मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित शेषनारायण गोस्वामी ने बताया कि गर्भगृह में सबसे ऊपर विराजमान हैं मां अन्नपूर्णा, जिनकी वजह से उज्जैनी में हमेशा भंडारे चलते रहते हैं। कहा जाता है कि उनकी कृपा से उज्जैन में कोई भूखा नहीं सोता है। बीच में मां लक्ष्मी के स्वरुप में है, जिनकी वजह से किसी को भी लक्ष्मी की कमी नहीं आती। सबसे नीचे विराजित हैं महाकाली।

हाइवे पर छाया घना कोहरा, आपस में टकराए कई वाहन, मची चीख-पुकार

-वाहनों की लग गई लंबी लाईन, पुलिस ने क्रेन से हटवाए क्षतिग्रस्त वाहन

करनाल। हरियाणा के करनाल में नेशनल हाइवे पर कोहरे के कारण कई वाहन आपस में टकरा गए। हाइवे पर विजिबिलिटी काफी कम थी जिस वजह से यह घटना हुई। सूचना के बाद पुलिस टीमें मौके पर पहुंचीं और क्रेन की मदद से वाहनों को साइड में किया। इसके बाद यातायात शुरु हो सका। गनीमत रही कि हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ। हालांकि कई वाहन बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए हैं। जानकारी के मुताबिक यह हादसा नेशनल हाइवे झंझाडी फ्लाईओवर पर हुआ। घने कोहरे की वजह से विजिबिलिटी काफी कम थी। इसी वजह से करनाल नेशनल हाइवे पर एक-एक कर 8 से 10 वाहन आपस में टकरा गए। इससे वाहनों में सवार लोगों में चीख-पुकार मच गई। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने मौके पर पहुंचकर मदद की। इस घटना के बाद हाइवे पर कुछ देर के लिए जाम की स्थिति बन गई। लोगों ने घटना के बारे में पुलिस को सूचना दी। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और जायजा लिया। पुलिस ने क्रेन की मदद से हादसे में क्षतिग्रस्त वाहनों को सड़क से हटवाया और यातायात बहाल करवाया। वहीं स्थानीय लोगों का कहना है कि कोहरा काफी घना था। इस दौरान सड़क पर आगे चल रहे वाहन का अचानक ब्रेक लगा, जिससे पीछे चल रहे वाहनों को संभलने का मौका नहीं मिला और कई वाहन आपस में टकरा गए। हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ। हादसे में हुए नुकसान का आकलन किया जा रहा है।

सीसीटीवी में कैद हुई शिक्षक और शिक्षिका की अश्लील हरकतें, दोनों निलंबित

-जांच के लिए तीन सदस्यीय टीम गठित, रिपोर्ट आने के बाद होगी कार्रवाई

चित्तौड़गढ़। राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में एक स्कूल का वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें एक शिक्षक और शिक्षिका अश्लील हरकतें करते दिख रहे हैं। वीडियो वायरल होने के बाद दोनों को शिक्षकों को निलंबित कर दिया गया है। मामले की जांच के लिए तीन सदस्यों की टीम गठित की गई है। टीम की रिपोर्ट के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि दोनों ही शिक्षकों को निलंबित कर दिया है। दोनों अलग-अलग जगह उपस्थिति देने को कहा गया है। जानकारी के मुताबिक शनिवार को गंगरार थाना क्षेत्र के एक गांव के स्कूल में शिक्षक और शिक्षिका का आपत्तिजनक हालत में वीडियो सामने आया था। ग्रामीणों के मुताबिक शिक्षक करीब 14 साल से उस स्कूल में कार्यरत है। शिक्षिका के साथ उसके संबंधों को लेकर लंबे समय से गांव में चर्चाएं हो रही थीं। स्कूल मैनेजमेंट कमेटी के पदाधिकारी ने भी इस पर आपत्ति जताई थी। दोनों पर आरोप हैं कि शिक्षक ग्रामीणों को सरकारी काम में बाधा डालने की शिकायत पुलिस से करने की धमकी देता था। इस कारण ग्रामीण भी उसके खिलाफ शिकायत नहीं कर पाते थे। समझाइश के बाद भी संस्था प्रधान अपनी हरकत से बाज नहीं आया। ऐसे में ग्रामीणों ने स्कूल में सीसीटीवी कैमरे लगवाए, जिसमें दोनों की हरकत कैद हो गई। पुख्ता सबूत हाथ लगने के बाद ग्रामीणों ने इसकी शिकायत पुलिस से की। उन्होंने शिक्षक-शिक्षिका को तत्काल प्रभाव से हटाने और मामले की उच्च स्तरीय जांच करवाने की मांग की।

युवक की हत्या कर शव बोरे में भरकर कचरे में फेंका, इलाके में फैली सनसनी

पटना। पटना के बेगमपुर में नीतीश कुमार की गोली मारकर हत्या कर दी गई। आरोपियों ने हत्या के बाद शव को बोरे में भरकर कचरे के ढेर में फेंक दिया। पुलिस को सूचना मिली की बेगमपुर पार पोखरा के नजदीक एक बोरे में शव पड़ा है। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की पहचान नीतीश कुमार के रूप में की। शुरुआती जांच में यह मामला गोली मारकर की हत्या करने का लग रहा है। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए एफएसएल टीम और डॉग स्क्वॉड को मौके पर बुलाया। घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है और स्थानीय लोगों से पूछताछ की जा रही है। हत्या के कारणों का पता लगाने के लिए गहन जांच जारी है। घटना की जानकारी मिलते ही इलाके में सनसनी फैल गई है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही हत्यारों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

राहुल गांधी पर लगातार हो रही एफआईआर, अब गुवाहाटी में दर्ज हुआ प्रकरण

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर एक के बाद एक एफआईआर हो रहीं हैं। अब नया मामला गुवाहाटी में दर्ज हुआ है। हाल ही में राहुल गांधी ने भाजपा और आरएसएस द्वारा संस्थाओं पर कब्ज़ा करने के का आरोप लगाया था। इसी दौरान उनका यह इंडियन स्टेट वाला बयान भी सामने आया था। असम में इस वक्त हेमंत बिस्वा सरमा के नेतृत्व वाली बीजेपी की सरकार है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत द्वारा कुछ वक्त पहले अयोध्या में राम मंदिर के शिलान्यास की तारीख को भारत की सच्ची आज़ादी के रूप में मनाए जाने की बात कही थी। इस पर रिएक्ट करते हुए राहुल गांधी ने कहा था कि बीजेपी और आरएसएस ने हर एक संस्था पर कब्ज़ा कर लिया है और अब हम भाजपा, आरएसएस और इंडियन इस्टेट से ही ही लड़ रहे हैं। यह एफआईआर गुवाहाटी के पान बाज़ार पुलिस स्टेशन में बीएनएस की धारा 152 और 197(1)डी के तहत दर्ज की गई है। जिसका मतलब है भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालने वाले कृत्य करना यह एक गैर-जमानती अपराध है। राहुल गांधी द्वारा भारतीय राज्य के साथ लड़ाई का जिक्र करने के बाद भाजपा ने उन पर भारत को तोड़ने और हमारे समाज को विभाजित करने की दिशा में काम करने का आरोप लगाया है। अपनी शिकायत में चेतिया ने लिखा है कि एक ऐसे व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक मंच पर दिया गया बयान जो वर्तमान में विपक्ष के नेता का पद संभाल रहा है। कहा गया कि यह कोई साधारण राजनीतिक टिप्पणी नहीं है।

राहुल गांधी को हर चीज फर्जी नजर आती है, वह खुद फर्जीवाड़े के सरदार

जातीय गणना और पेपर लीक मामले वाले बयान पर जेडीयू ने किया पलटवार

पटना (एजेंसी)। राहुल गांधी द्वारा जातीय गणना पर उठाए गए सवाल और पेपर लीक मामले पर केंद्रीय मंत्री और जेडीयू नेता ललन सिंह ने कहा है कि कांग्रेस ने देश में संविधान की धज्जियां उड़ाई हैं। पेपर लीक मामले पर उन्होंने कहा कि सभी के तार झारखंड से जुड़ रहे हैं। ललन सिंह के बयान का बीजेपी ने भी समर्थन किया है। बीजेपी प्रवक्ता आसितनाथ तिवारी ने कहा कि राहुल गांधी बिहार में जातीय आग से खेल रहे हैं। वहीं कांग्रेस ने भी केंद्रीय मंत्री ललन सिंह पर निशाना साधा है। कांग्रेस प्रवक्ता ज्ञान रंजन ने कहा है कि यह लोग राहुल गांधी से डरे हुए हैं।

ललन सिंह ने कहा कि राहुल गांधी को हर चीज फर्जी नजर आती है। वह खुद ही फर्जीवाड़े के सरदार हैं। बिहार में जो जाति आधारित सर्वे कराया गया, उसके आधार पर जातीय जनगणना की मांग कर रहे थे। तब वह लोग मुंह में टेप लगाए हुए थे? किसके दबाव में आकर कुछ नहीं बोल रहे थे? वह संविधान की बात करते हैं, उनको संविधान के बारे में पता है कि कितने शेड्यूल है, कितनी धाराएं हैं।

ललन सिंह ने आगे कहा कि अगर इस देश में किसी ने संविधान की धज्जियां उड़ाई तो वह कांग्रेस है। देश में आपातकाल लाकर देश की जनता को अपमानित करने का काम किया। पेपर लीक मामले में ललन सिंह ने कहा कि जब उनकी सरकार राजस्थान में थी तब वह बताएं कि कितना पेपर लीक हुआ है। जो पेपर लीक हो रहे हैं सबके तार झारखंड से जुड़ है, जहां उनकी सरकार है।

ललन सिंह के बयान पर कांग्रेस प्रवक्ता ज्ञान रंजन ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह लोग राहुल गांधी से डरे हुए हैं। उन्हें लगता है कि अति पिछड़ों और पिछड़ों को राहुल गांधी न्याय दिलाकर ही मानेंगे। ज्ञान रंजन ने कहा इनका सिंहासन डोलता नजर आ रहा है इसलिए कुछ भी अनर्गल बयानबाजी कर रहे हैं। रंजन ने कहा कि बिहार में एक साल में 10 बार पेपर लीक हुआ है और अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है, अगर कोई गिरफ्तारी हुई है तो आंकड़ा जारी करें। बीजेपी प्रवक्ता आसितनाथ तिवारी ने कहा कि बिहार ने जातीय हिंसा का बड़ा दौर देखा है। बिहार में कई नरसंहार हुए, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए। ऐसी घटनाएं राजद और कांग्रेस के काल में हुई। राहुल गांधी इस गुट के सरदार हैं, जिनके दौर में ऐसी घटनाएं हुई। राहुल गांधी को यह अंदाजा नहीं है कि वह एक बार फिर से जातीय आग से खेल रहे हैं। बिहार को जातीय आग में झोंकना चाहते हैं। उन्हें पता नहीं है कि यह आग एक दिन उन्हें भी जला देगी।

बता दें पटना में शनिवार को कांग्रेस के संविधान सुरक्षा सम्मेलन में राहुल गांधी ने कहा था कि बिहार पेपर लीक का सेंटर बन चुका है।

युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है। मंहगाई बढ़ रही है। देश की वास्तविक स्थिति को समझने के लिए जाति जनगणना होनी चाहिए। यह बिहार में की गई फर्जी जाति जनगणना की तरह नहीं होगी। जाति जनगणना के आधार पर नीति बनाई जानी चाहिए। कांग्रेस जाति जनगणना को लोकसभा और राज्यसभा में पारित करेगी। हम 50 फीसदी आरक्षण की बाधा को ध्वस्त कर देंगे।

मनीष सिसोदिया ने लिया निजी लोगों से 1.50 करोड़ का ऋण, बीजेपी ने मांगा जवाब

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने आम आदमी पार्टी (आप) के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया से निजी लोगों से 1.50 करोड़ रुपए के शिक्षा ऋण के मामले में जवाब मांगा है। बीजेपी ने आरोप लगाया है कि यह ऋण सिसोदिया के बेटे की विदेश में शिक्षा की पढ़ाई के लिए लिया गया था। बीजेपी पर पलटवार करते हुए आप ने बीजेपी से उसके नई दिल्ली के उम्मीदवार प्रवेश वर्मा की संपत्ति के बारे में सवाल किया है। आप ने एक बयान में कहा कि मनीष सिसोदिया ने बेटे की पढ़ाई के लिए ऋण लिया तो बीजेपी में हड़कंप मच गया, जबकि प्रवेश वर्मा ने 55 करोड़ रुपए निजी ऋण समेत 63 करोड़ रुपए की देनदारी घोषित की और बीजेपी इस पर चुप है। सिसोदिया के चुनावी हलफनामे का हवाला देते हुए बीजेपी की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री को मिले 1.50 करोड़ रुपए के शिक्षा ऋण में तीन व्यक्तियों ने योगदान दिया था। उन्होंने कहा कि बीजेपी सिसोदिया को मिले ऋण की जांच के लिए एजेंसियों से संपर्क करेगी।

बीजेपी को दिल्ली चुनाव के बाद मिल सकता है नया अध्यक्ष, संगठन तैयारियो में जुटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीजेपी को जल्द ही नया अध्यक्ष मिल सकता है। संगठन को फरवरी तक चयन प्रक्रिया पूरी होने की उम्मीद है। माना जा रहा है कि दिल्ली विधानसभा चुनाव के बाद बीजेपी के नए अध्यक्ष की घोषणा हो जाएगी। दिल्ली में 5 फरवरी को विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होना है और 8 फरवरी को नतीजे आएंगे। ऐसे में बीजेपी का पूरा फोकस दिल्ली चुनाव पर है और जीत के लिए पूरा जोर भी पार्टी और संगठन लगा रहा है। जेपी नड्डा की अध्यक्षयता में ही ही बीजेपी दिल्ली विधानसभा चुनाव लड़ेगी।

पार्टी सूत्रों का कहना है कि 10 फरवरी से 20 फरवरी के बीच बीजेपी अध्यक्ष का चुनाव हो सकता है। संगठन चुनाव की प्रक्रिया चल रही है। मंडल से लेकर जिला और प्रदेश इकाई के अध्यक्ष चुने जा रहे हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय परिषद और प्रदेश परिषद के सदस्य भी चुने जा रहे हैं, जो राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव में अहम भूमिका निभाएंगे और नए अध्यक्ष का चुनाव करेंगे। अभी तक सिर्फ चार राज्यों के प्रदेश अध्यक्षों का ही चुनाव हुआ है।

बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए कम से कम 50 फीसदी राज्य इकाइयों में संगठन के चुनाव पूरे होने जरूरी हैं। बीजेपी नेताओं की माने तो पहले से तय कार्यक्रम के मुताबिक ही संगठन चुनाव चल रहा है और इसे समय पर पूरा करा लिया जाएगा। संगठन का कहना है कि सिर्फ महाराष्ट्र और हरियाणा में विधानसभा चुनावों के कारण सदस्यता अभियान देर से शुरू हुआ है। फिलहाल, जेपी नड्डा ने अपना तीन साल का कार्यकाल पूरा कर लिया है। बतौर अध्यक्ष नड्डा का कार्यकाल पिछले साल जनवरी में ही खत्म हो गया था, लेकिन लोकसभा चुनाव के चलते उनका कार्यकाल बढ़ा दिया गया था। नड्डा ने फरवरी 2020 में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद संभाला था। वह इस समय मोदी कैबिनेट में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री की जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। नए बीजेपी अध्यक्ष नड्डा की जगह लेंगे।

बांग्लादेश की बढ़ेंगी मुश्किलें, बिहार ने कहा- जहां से गंगा निकलती है वहां पानी में हिस्सेदारी हो

पटना (एजेंसी)। बिहार की नीतीश सरकार ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया है कि गंगा नदी जिन राज्यों से बहती है उन राज्यों को उसके पानी पर हक होना चाहिए। इसके अलावा बांग्लादेश को गंगा का पानी देने पर भी आपत्ति जाहिर की है।बता दें कि बांग्लादेश को गंगा नदी से मिलने वाले पानी का अधिकतर भाग की आपूर्ति बिहार से बिहार के हिस्से से होती है और इस कारण बिहार में ही जल संकट की स्थिति आ जाती है। अब बिहार सरकार में इस ओर ध्यान दिया है और जल संसाधन मंत्री ने कहा है कि इसको लेकर केंद्र सरकार से अनुरोध किया गया है।

बता दें कि भारत बांग्लादेश जल संधि का अगले साल नवीकरण (रीन्यूअल) होना है। वर्ष 1996 में भारत के प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा और बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना के बीच गंगाजल बंटवारे को लेकर समझौता हुआ था। इसके तहत दोनों देशों के बीच गंगाजल का बंटवारा किया गया था। भारत-बांग्लादेश गंगा जल संधि के 30 वर्षों बाद अब समीक्षा होनी है। यह 2026 में पूरी होगी। इस साल समस्या के बिंदुओं पर चर्चा शुरू हो गई है और जल्द ही दोनों देशों में तकनीकी वार्ता प्रारंभ होने वाली है।

बिहार के जल संसाधन मंत्री विजय चौधरी ने कहा कि

हमलोग आरंभ से 1996 के समझौते की समीक्षा की मांग कर रहे हैं। हमारा मानना है कि इस समझौते को अंतिम रूप देने से पहले हमारी राय नहीं ली गई थी। समझौते में बिहार की अपेक्षा की गई विरोध का बड़ा कारण फरक्का बराज भी है। जल संसाधन मंत्री ने कहा कि फरक्का बराज के कारण संपूर्ण बिहार में गाद की समस्या बढ़ती जा रही है। इससे बाढ़ की स्थिति भी विकराल हो रही है। चूंकि समझौते की समीक्षा का समय आ गया है इसलिए हम लोग चाहते हैं कि बिहार की आवश्यकताओं और गाद की समस्या को देखते हुए समझौते पर पुनर्विचार किया जाए।

दरअसल, बिहार का यह भी पक्ष है कि बांग्लादेश को गंगाजल की अधिकांश मात्रा बिहार देता है, जबकि गंगा नदी के किनारे वाले राज्य अपने यहां बेधड़क उसके पानी का उपयोग कर रहे हैं। वहां बिजली परियोजनाएं बनीं हैं, बराज बने हैं। यही नहीं सिंचाई के लिए भी गंगाजल का उपयोग कर रहे हैं, जबकि बिहार को हर कार्य के लिए केंद्र से अनुमति लेनी पड़ती है। बिहार का मानना है कि बांग्लादेश जाने वाले गंगा जल का कोटा बिहार के साथ-साथ यूपी उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल के लिए भी समान रूप से तय हो। बता दें भारत और बांग्लादेश के बीच जो समझौते हुए हैं उसके तहत गंगा के पानी का बंटवारा 70 हजार क्यूसेक पानी में 35 हजार क्यूसेक भारत को रहेगा और 35 हजार क्यूसेक बांग्लादेश को। अगर यह मात्रा 70 से 75 हजार क्यूसेक है तो शेष जो प्रवाह है वह भारत के पास रहेगा। बाकी 35 हजार कि उसे बांग्लादेश के पास 75 हजार क्यूसेक से अधिक होने पर 40 हजार क्यूसेक भारत के पास रहेगा और शेष प्रवाह बांग्लादेश को जाएगा।

सैफ अली खान पर हमले वाले आरोपी के बांग्लादेशी होने पर बीजेपी बोली, महाराष्ट्र सरकार घुसपैठियों का घर-घर जाकर लगाएगी पता और उन्हें वापस भेजेगी

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता सैफ अली खान पर हमले के आरोपी को मुंबई पुलिस ने गिरफ्तार करने पर बीजेपी ने प्रतिक्रिया दी है। बीजेपी प्रवक्ता राम कदम और वरिष्ठ नेता किरीट सोमैया ने मांग की है कि सरकार मुंबई और महाराष्ट्र में रह रहे अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करे। मुंबई पुलिस के डीसीपी जोन-9 ने खुलासा किया है यह आरोपी चोरी के इरादे से उस घर में घुसा था और उस वक्त पर यह घटना हुई। आरोपी बांग्लादेशी मूल का है। उसके पास से पुलिस को कोई भी भारतीय पहचान पत्र नहीं मिला है। राम कदम ने रविवार को मुंबई में कहा कि सैफ अली खान पर हमला करने वाले और चोरी के इरादे से घुसे आरोपी को मुंबई पुलिस ने दबोच लिया है। जांच के बाद क्या कारण था, सभी बातें सामने आएंगी। उन्होंने कहा कि कुछ अहम बातें सामने आई हैं कि मुंबई शहर की बिल्डिंगों में जो सुरक्षाकर्मी तैनात हैं वे 24-24 घंटे ड्यूटी करते हैं। राम कदम ने कहा कि 24 घंटे ड्यूटी करने वाला वॉचमैन सोएगा जरुर। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि सरकार इस दिशा में उचित कदम उठाएगी। उन्होंने कहा कि जहां तब बांग्लादेशी घुसपैठियों की बात है तो महाराष्ट्र सरकार घर-घर जाकर उनका पता लगाएगी और जहां से वे आए हैं उन्हें वापस वहीं पहुंचाएगी।

सैलजा ने साधा निशाना कहा- एचकेआरएन कर्मचारियों के साथ वायदा खिलाफी कर रही है सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा है कि एक ओर जहां मुख्यमंत्री हरियाणा ने एचकेआरएन के तहत कार्यरत कर्मचारियों को नौकरी से न हटाने का वायदा किया था और अधिसूचना जारी कर जॉब सिक्योरिटी दी थी आज वहीं सरकार भर्ती किए गए नए कर्मचारियों को नियुक्त करने के लिए पहले से कार्यरत कर्मचारियों को निकालने में लगी हुई है। उन्होंने कहा कि कर्मचारी संगठन वायदा याद दिलाते हुए न्याय की गुहार कर रहे है पर सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही है, भाजपा को वोट देने वाला युवा आज पछता रहा है।

कुमारी सैलजा ने एक बयान में कहा है कि 19 नवंबर 2024 को हरियाणा में कौशल रोजगार निगम के तहत लगे कर्मचारियों को नायब सिंह सैनी सरकार ने कथित बड़ी सौगात देते हुए हरियाणा विधानसभा में जॉब गारंटी विधेयक पारित करवाया था। जिसे हर भाजपा नेता ने ऐतिहासिक कदम बताया था। सीएम ने भी दावा किया था कि उन्होंने 120000 युवाओं से किया गया वादा पूरा किया। कहा गया कि पहले ठेकेदारों के जरिए लगने पर युवाओं के भविष्य पर तलवार लटकी रहती थी, ठेकेदार बदलने पर उनके भविष्य पर भी खतरा पैदा हो जाता था। कुमारी सैलजा ने कहा कि एचकेआरएन में 37404 यानि 28 प्रतिशत कर्मचारी अनुसूचित जाति के 41376 कर्मचारी यानि 32 प्रतिशत कर्मचारी पिछड़ा वर्ग से हैं। पर सरकार की वायदा खिलाफी के चलते इनकी जॉब पर खतरा मंडरा रहा है।

कुमारी सैलजा ने कहा कि नरवाना, चरखी दादरी, रोहतक सहित कई जिलों में कंप्यूटर ऑपरेटर, चौकीदार और अन्य पदों पर कार्यरत कर्मचारियों को बिना नोटिस के नौकरी से निकल दिया। ये कर्मचारी न्याय की उम्मीद में दफ्तरों के चक्कर लगा रहे है पर अधिकारी तो अधिकारी भाजपा के विधायक, मंत्री तक कोई सुनवाई नहीं कर रहे है और न ही इन कर्मचारियों की सरकार के समक्ष पैरवी कर रहे हैं। कुमारी

सैलजा ने कहा कि अधिकतर कर्मचारी एचकेआरएन के तहत नौकरी पाने पर उनके नाम बीपीएल सूची से कट गए थे, आज वे कहीं दूसरी जगह नौकरी मांगने जाएंगे तो वहां भी नहीं मिलेगी। सैलजा ने कहा कि सरकार को अपना वायदा निभाते हुए किसी भी कर्मचारी को नौकरी से नहीं हटाना चाहिए, जो पद आज भी रिक्त पड़े है उन पर नए भर्ती किए गए युवाओं को नियुक्ति दी जाए।

साइबर अपराधियों से भारत और अमेरिका मिलकर निपटेंगे, दोनों देशों में हुआ समझौता

नई दिल्ली (एजेंसी)। साइबर खतरों और अपराधों की जांच में सहयोग बढ़ाने के लिए भारत और अमेरिका ने वाशिंगटन डीसी में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। देश में इसका क्रियान्वयन गृह मंत्रालय के अधीन आने वाले भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) द्वारा किया जाएगा। जबकि अमेरिका में डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी (डीएचएस) और उससे जुड़ी हुई विभिन्न एजेंसियों जैसे यूएस इमीग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट (आईसीई) और द होमलैंड सिक्योरिटी इन्वेस्टिगेशन साइबर क्राइम सेंटर (सी3) समझौते के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी संभालेंगे। विदेश मंत्रालय ने यह जानकारी दी। यहां बता दें कि बाइडन प्रशासन ने भारत के साथ इस

एमओयू पर अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के 20 जनवरी को होने वाले शपथ ग्रहण से ठीक पहले हस्ताक्षर किए हैं।

मंत्रालय ने बताया कि इस एमओयू पर 17 जनवरी को भारत की तरफ से अमेरिका में भारत के राजदूत विनय क्वात्रा ने हस्ताक्षर किए। अमेरिका से उनके गृह सुरक्षा विभाग की कार्यवाहक उप-सचिव क्रिस्टी कैनेगैलो ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता दोनों देशों की एजेंसियों को आपराधिक मामलों की जांच में साइबर खतरों से जुड़ी खुफिया जानकारी और डिजिटल फॉरेंसिक को लेकर सहयोग और प्रशिक्षण का स्तर बढ़ाने में मददगार साबित होगा। साइबर क्राइम के तार दोनों देशों की साझा सुरक्षा चुनौतियों जैसे आतंकवाद, हिंसक कट्टरता, आतंक को वित्तपोषण, ड्रग ट्रैफिकिंग, संगठित अपराध, मानव तस्करी, अवैध प्रवासन, मनी लॉन्ड्रिंग और यातायात सुरक्षा से जुड़ते हैं। इसलिए यह समझौता इन मामलों में भी अहम साबित होगा। साथ ही इसकी मदद से दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग को और अधिक मजबूती प्रदान करने में मदद मिलेगी। जो भारत की व्यापक और वैश्विक सामरिक भागीदारी का हिस्सा है।

गणतंत्र दिवस: टी-90 टैंक और ब्रह्मोस मिसाइल से सेना दिखाएगी भारत की ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। 26 जनवरी को कर्तव्य पथ पर मनाए जाने वाले 76 वें गणतंत्र दिवस परेड समारोह में भारतीय सेना के मार्चिंग दस्ते में टी-90 भीष्म टैंक, सुपरसोनिक ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम, पिनाका रॉकेट और आकाश एयर डिफेंस सिस्टम जैसे वो बेहद मारक हथियार शामिल होंगे। जिनकी उपस्थिति मात्र से ही देश के दुश्मन थरथर कांपेंगे। इसके अलावा जवानों की मार्चिंग टुकड़ी में ब्रिगेड ऑफ द गार्डस, महार रेजिमेंट, जाट रेजिमेंट, गढ़वाल राइफल्स, जम्मू-कश्मीर राइफल्स और कॉर्प्स ऑफ सिग्नल्स जैसी सेना की 6 रेजिमेंट की प्रमुखता से भागीदारी देखने को मिलेगी। फिलहाल सेना का यह समूचा दस्ता कर्तव्य पथ पर परेड में शामिल होने के लिए अभ्यास में जुटा हुआ है। सेना ने शनिवार को बताया कि गणतंत्र दिवस परेड के लिए हमारी तैयारियां लगभग अंतिम चरण में पहुंच गई हैं। इस बार हम परेड के दौरान सेना की सुव्यवस्थित परंपरा के साथ ही अनुशासन और आधुनिक तकनीक के मिश्रण को देश-दुनिया के सामने बखूबी प्रदर्शित करेंगे। कर्तव्य पथ पर सशस्त्र सेनाओं की सुप्रीम कमांडर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के सामने सेना के मार्चिंग दस्ते के साथ सैन्य बैंड भी देशभक्ति की अपनी मनमोहक धुनों के साथ आगे बढ़ेंगे। इसके अलावा सेना द्वारा परेड के दौरान प्रदर्शित किए जाने वाले सैन्य हथियारों में टी-90 भीष्म टैंक, आईसीवी बीएमपी-2, नाग मिसाइल सिस्टम, क्विक रिएक्शन फाइटिंग व्हीकल (नंदीघोष), पिनाका रॉकेट लॉन्चिंग सिस्टम, शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम, बैटलफील्ड सर्विलांस सिस्टम (संजय), ऑल टेरेन व्हीकल (चेतक), आकाश एयर डिफेंस वेपन सिस्टम, ग्रेड बीएम-21 रॉकेट लांचर, लाइट स्ट्राइक व्हीकल (बजरंग) शामिल होंगे।

आत्मनिर्भर भारत को समर्पित परेड

सेना ने बताया कि इस वर्ष की परेड देश की सुरक्षा और प्रगति को समर्पित रहेगी। जिसमें स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भर भारत अभियान द्वारा प्रदान की गई गति की साफ तौर पर झलक देखने को मिलेगी। गौरतलब है कि इस बार परेड समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो शिरकत करेंगे।

आठ शहरों में घरों की बिक्री में 26 फीसदी की गिरावट: रिपोर्ट

- बिक्री में गिरावट महाराष्ट्र और हरियाणा में चुनाव और संपत्ति की बढ़ी हुई कीमतों से आई

मुंबई ।

मुंबई, अहमदाबाद, बेंगलुरु समेत देश के आठ प्रमुख शहरों में घरों की बिक्री में 2024 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में सालाना आधार पर 26 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। बताया जा रहा है कि बिक्री में गिरावट महाराष्ट्र और हरियाणा में चुनाव और संपत्ति की बढ़ी हुई कीमतों की वजह से आई है। एक रियल एस्टेट परामर्श मंच की हाल ही में जारी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक इस विश्लेषण में शामिल आठ में से तीन शहर महाराष्ट्र और हरियाणा में स्थित हैं जहां पर बीती तिमाही में विधानसभा के चुनाव हुए। हालांकि दिल्ली-एनसीआर को छोड़कर सालाना आधार पर बाकी सभी सात शहरों शहरों में घरों की बिक्री में गिरावट आई है। दिल्ली-एनसीआर में दिसंबर तिमाही में घरों की बिक्री 50 प्रतिशत बढ़कर 9,808 इकाई रही जबकि पिछले साल की समान अवधि में यह आंकड़ा 6,528 था। बीते वर्ष की चौथी तिमाही में नई परियोजनाएं पेश करने में 33 प्रतिशत की गिरावट आई है। आठ में से पांच शहरों में पिछली तिमाही के दौरान पेश नई परियोजनाओं की संख्या घटी है। संपत्तियों की खरीद-बिक्री या किराये पर लेन-देन की जानकारी देने वाले मंच के एक अे धिकारी ने कहा कि अक्टूबर-दिसंबर में त्योहारों के दौरान बिक्री में तिमाही आधार पर वृद्धि हुई। इसके बाद भी अधिकांश क्षेत्रों में बिक्री और नई पेशकश में पिछले साल के मुकाबले गिरावट देखी गई। रिपोर्ट के अनुसार मुंबई क्षेत्र (एमएमआर) में सालाना आधार पर 31 प्रतिशत की गिरावट के साथ 33,617 घरों की बिक्री हुई, जबकि पिछले साल की समान अवधि में 48,553 घरों की बिक्री हुई थी। पुणे में इस दौरान 31 प्रतिशत की गिरावट के साथ 18,240 घरों की बिक्री हुई। वहीं बेंगलुरु में 23 प्रतिशत की गिरावट के साथ 13,236 घरों की बिक्री हुई, हैदराबाद में 36 प्रतिशत की गिरावट के साथ 13,179 घरों की बिक्री हुई और चेन्नई में पांच प्रतिशत की गिरावट के साथ 4,073 घरों की बिक्री हुई।

बाजारों में ब्रांडेड खाद्य तेलों में मिलावट

धड़ल्ले से बिक रहा है मिलावटी खाद्य तेल

बड़ी-बड़ी कंपनियां कर रही हैं करोड़ों की कमाई

मुंबई ।

नामी गिरामी ब्रांडेड कंपनियां खाद्य तेलों में मिलावट करके खुलेआम मिलावटी तेल बेच रही हैं। खाद्य तेलों में बड़े पैमाने पर ब्रान आयल मिलाया जा रहा है। इसे उपभोक्ताओं को महंगे दामों में बेचा जा रहा है। धान की भूसी का तेल सबसे ज्यादा खाद्य तेल में मिलाकर, ब्रांडेड कंपनियों ब्रांड के नाम से महंगे दामों पर बेच रही हैं।

सरसों, सोयाबीन और मूंगफली के तेल से ब्रान ऑयल 40 से लेकर 60 रुपए प्रति लीटर तक सस्ता होता है। सरकार ने ब्लेंडिंग कानून में बड़ी कंपनियों के लिए बदलाव कर दिए हैं। इसका फायदा बड़ी-बड़ी कंपनियां उठा रही हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियां अंग्रेजी में लेवल छपवाती हैं। उसमें बहुत छोटे अक्षरों में मल्टी सोर्स आयल लिखा रहता है।

जो उपभोक्ता ब्रांडेड सोयाबीन, सरसों और मूंगफली का तेल खरीदता है। उसे मालूम ही नहीं होता है, वह मिलावटी तेल खरीद रहा है। वह भी महंगे दामों पर खरीद रहा है।

केंद्र सरकार ने 3 फरवरी 2023 को तेल के ब्लेंडिग कानून में बदलाव किए हैं। नए बदलाव के अनुसार अब कंपनियों को 20 फीसदी तक दूसरे तेल की मिलावट करने की अनुमति दी गई है। ब्रांडेड कंपनियों द्वारा जो सरसों, मूंगफली और सोयाबीन का तेल बेचा जा रहा है। उसमें सबसे सस्ता धान की भूसी का तेल मिलाया जा रहा है। इससे ब्रांडेड कंपनियों को बड़ी कमाई हो रही हैं। वहीं उपभोक्ताओं को खुले आम बड़ी-बड़ी कंपनियों द्वारा लूटा जा रहा है। उपभोक्ता को पता नही होता है। वह मिलावटी तेल खरीद रहा है। बड़ी कंपनियां अपने फायदे के लिए सरकार के नियमों में परिवर्तन कराकर करोड़ों रुपए कमा रही हैं। अन ब्रांडेड तेल बेचने वालों के लिए मिलावट के अलग कानून हैं। सरकार ने ब्रांडेड कंपनियों के लिए अलग कानून बना दिया है। ब्रांडेड कंपनियां तेल में किस तेल की कितनी मिलावट कर रही हैं। इसकी जानकारी उपभोक्ताओं को नहीं देती है। उनके लेवल भी अंग्रेजी भाषा में होते हैं। मल्टी सोर्स ऑयल भी बहुत छोटे अक्षरों में लिखा रहता है। यह लूट पिछले कुछ समय से बढ़ती ही चली जा रही है। सरकार इस लूट पर आंख बंद करके बैठी हुई है।

सेंसेक्स की प्रमुख छह कंपनियों का मार्केट कैप 1.71 लाख करोड़ घटा

सबसे ज्यादा नुकसान इन्फोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज को हुआ

मुंबई ।

पिछले सप्ताह सेंसेक्स की प्रमुख 10 सबसे कीमती कंपनियों में से छह के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 1.71 लाख करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे ज्यादा नुकसान सूचना प्रौद्योगिकी आईटी क्षेत्र की कंपनियों इन्फोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) को हुआ। शीर्ष 10 कंपनियों में से टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर और आईटीसी के बाजार मूल्यांकन में सामूहिक रूप से 1,71,680.42 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। वहीं रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारती एयरटेल, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) और भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) की बाजार हैसियत बढ़ गई। समीक्षाधीन सप्ताह में इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 62,948.4 करोड़ रुपये घटकर 7,53,678.38 करोड़ रुपये रहा गया।

सबसे अधिक नुकसान इन्फोसिस को ही हुआ। तीसरी तिमाही के नतीजों की घोषणा के बाद मुनाफावसूली के बीच शुक्रवार को इन्फोसिस के शेयर में करीब प्रतिशत की गिरावट आई। टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 50,598.95 करोड़ रुपये घटकर 14,92,714.37 करोड़ रुपये, हिंदुस्तान यूनिलीवर का मूल्यांकन 20,605.92 करोड़ रुपये घटकर 5,53,152.52 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक का मूल्यांकन 16,005.84 करोड़ रुपये घटकर 8,65,495.17 करोड़ रुपये, एचडीएफसी बैंक की बाजार हैसियत 15,640.8 करोड़ रुपये घटकर 12,51,799.81 करोड़ रुपये और आईटीसी के मूल्यांकन में 5,880.51 करोड़ रुपये की गिरावट आई और यह 5,50,702.93 करोड़ रुपये रह गया। इस रुख के `` विपरीत रिलायंस इंडस्ट्रीज का मूल्यांकन 79,773.34 करोड़ रुपये बढ़कर 17,60,967.69 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। भारतीय स्टेट बैंक की बाजार हैसियत 18,697.08 करोड़ रुपये बढ़कर 6,81,930.22 करोड़ रुपये, एलआईसी का बाजार पूंजीकरण 9,993.5 करोड़ रुपये बढ़कर 5,40,724.05 करोड़ रुपये और भारती एयरटेल का बाजार पूंजीकरण 7,080.98 करोड़ रुपये बढ़कर 9,27,014.97 करोड़ रुपये हो गया।

आम बजट में आरएंडडी के प्रोत्साहन के लिए नई योजना की घोषणा

नई योजना से विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश के लिए आकर्षित किया जाएगा

नई दिल्ली ।

आम बजट 2025-26 में भारत में शोध एवं विकास (आरएंडडी) को बढ़ावा देने के लिए एक प्रोत्साहन पीएलआई) योजना की घोषणा की गई है। इस नई योजना के माध्यम से विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश के लिए आकर्षित किया जाएगा, जिससे देश को नवोन्मेषण का वैश्विक केंद्र बनाने में मदद मिलेगी। पीएलआई योजना के बारे में बात करते हुए डेलायट इंडिया के एक भागीदार ने इसे एक महत्वपूर्ण कदम बताया है। उन्होंने कहा कि सरकार ऐसी नीति पर काम कर रही है जिसमें कर रियायतें कम हों और उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन योजनाएं हों, जो निवेश और रोजगार को बढ़ावा दें। हमें भारत को अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला के रूप में आगे बढ़ाने की जरूरत है और यदि ऐसी नीति हो सकती है जो इसे प्रोत्साहित करे, जैसे कि विदेशी कंपनियों को शामिल करने वाली पीएलआई योजना, तो यह देश के लिए बड़ा कदम होगा। वित्त वर्ष 2025-26 का बजट संसद में एक फरवरी को पेश किया जाएगा। उन्होंने बताया कि नयी योजना में विदेशी कंपनियों को भारत आने के लिए प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ हो सकती हैं, जो देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा दें। भारत

एक सेवा आधारित अर्थव्यवस्था है और अगर इसे आगे बढ़ाया जाए, तो यह विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। सरकार की इस नई योजना से आर्थिक उत्थान को लेकर नए किरदार की उम्मीदें हैं और देश को नए दिशानिर्देश में ले जाने की उम्मीद है।

विदेशी निवेशकों ने जनवरी में अब तक भारतीय शेयर बाजार से 44,396 करोड़ निकाले

दिसंबर में एफपीआई ने भारतीय शेयर बाजार में 15,446 करोड़ रुपये का निवेश किया था

नई दिल्ली । डॉलर मजबूत होने, अमेरिका में बॉन्ड प्रतिफल बढ़ने और कंपनियों के तिमाही नतीजे कमजोर रहने की आशंका से विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस महीने अब तक भारतीय शेयर बाजार से 44,396 करोड़ रुपये की निकासी की है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। इससे पहले दिसंबर में एफपीआई ने भारतीय शेयर बाजार में 15,446 करोड़ रुपये डाले थे। घरेलू और वैश्विक मोर्चे पर तमाम तरह की अड़चनों की वजह से विदेशी निवेशकों के रुख में बदलाव हुआ है। बाजार के एक विशेषज्ञ ने कहा` कि भारतीय रुपये में लगातार गिरावट ने विदेशी निवेशकों पर काफी दबाव डाला है। यही वजह है कि वे भारतीय बाजार से अपना निवेश निकाल रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसके अलावा हाल की गिरावट के बावजूद भारतीय शेयरों का ऊंचा मूल्यांकन, कमजोर तिमाही नतीजों की संभावना, आर्थिक वृद्धि की रफ्तार को लेकर अनिश्चितता निवेशकों को प्रभावित कर रही है।

आंकड़ों के अनुसार विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने इस महीने 17 जनवरी तक भारतीय शेयरों से 44,396 करोड़ रुपये निकाले हैं। दो जनवरी को छोड़कर इस महीने के सभी दिन एफपीआई बिकवाल रहे हैं। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के एक मुख्य निवेश रणनीतिकार ने कहा कि एफपीआई की लगातार बिकवाली की मुख्य वजह डॉलर की मजबूती और अमेरिका में बॉन्ड प्रतिफल का बढ़ना है। डॉलर सूचकांक 109 से ऊपर है और 10 साल के अमेरिकी बॉन्ड पर प्रतिफल 4.6 प्रतिशत से ज्यादा है। ऐसे में एफपीआई का उभरते बाजारों में बिकवाली करना तर्कसंगत है, खासकर सबसे महंगे उभरते बाजार भारत में।

हेल्थ इंश्योरेंस कितना जरूरी, जानिए इसकी महत्वपूर्णता

- अरबों रुपये के मालिक भी हेल्थ इंश्योरेंस का लाभ उठाते हैं

मुंबई । बॉलीवुड के प्रमुख अभिनेता सैफ अली खान पर हुए हाल हमले के बाद उनकी स्थिति अभी स्टेबिल है। हमले के बाद सैफ अली खान ने तत्काल इंश्योरेंस कवर की जरूरत महसूस की और इंश्योरेंस कंपनी से 36 लाख रुपये का दावा किया। हालांकि, कंपनी ने उन्हें केवल 25 लाख रुपये की मंजूरी दी है। सैफ अली खान की इस घटना से यह साफ हो जाता है कि हेल्थ इंश्योरेंस कितना आवश्यक है। अरबों रुपये के मालिक भी हेल्थ इंश्योरेंस का लाभ उठाते हैं तो आम लोग क्यों न करें? हेल्थ इंश्योरेंस एक सुरक्षा पुस्तिका है जो आपकी सेहत की आमदनी को सुनिश्चित करती है। अस्पताल में भर्ती होने पर बिल का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन हेल्थ इंश्योरेंस इस बोझ से आपको मुक्ति दिलाता है। हेल्थ इंश्योरेंस किसतना कवर चाहिए, यह आपकी उम्र और परिवार के सदस्यों पर निर्भर करता है। फैमिली फ्लोटर प्लान जैसे योजनाएं परिवार के सभी सदस्यों का कवर करने में मदद कर सकती है। हेल्थ इंश्योरेंस की कई निजी और सरकारी कंपनियां हैं जो इस सुरक्षा का संदेश फैला रही हैं।

छह माह की चुनौतियों के बाद रिलायंस ने फिर पकड़ी वृद्धि की राह : ब्रोकरेज कंपनियां

- कंपनी ने दिसंबर तिमाही में उम्मीद से बेहतर नतीजे दिए

नई दिल्ली । देश की प्रमुख कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) छह महीने की चुनौतियों के बाद एक बार फिर वृद्धि के पथ पर लौट आई है। कंपनी ने दिसंबर तिमाही में उम्मीद से बेहतर नतीजे दिए हैं। एक ब्रोकरेज कंपनियों ने यह बात कही है। कच्चे तेल से लेकर दूरसंचार और खुदरा क्षेत्र में कार्यरत समूह ने अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में अपनी सबसे ऊंची 43,800 करोड़ रुपये की कर-पूर्व आय (ईबीआईटीडीए) दर्ज की है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि समूह ने विभिन्न कारोबार क्षेत्रों में मजबूत प्रदर्शन किया है। मुख्य रूप से कंपनी ने तेल-से-रसायन (ओ2सी) क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन किया है। इसके अलावा कंपनी के उपभोक्ता खुदरा कारोबार में भी सुधार हुआ है। कंपनी विनाइल, पॉलिएस्टर श्रृंखला और इथेन आयात लॉजिस्टिक्स में निवेश के साथ घरेलू बाजार पर केंद्रित अपनी रसायन क्षमता का विस्तार करना चाहती है। एक रिसर्च कंपनी ने कहा कि उसे 2025 में समूह के कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए कई उत्प्रेरक दिख रहे हैं। इसमें खुदरा क्षेत्र में बदलाव, नई ऊर्जा की शुरुआत और डिजिटल कारोबार में नई गति शामिल है। इसने कहा` कि हमारा मानना है कि तीसरी तिमाही का नतीजा उम्मीदों के अनुरूप रहा है। यह निकट अवधि में उम्मीद से थोड़ा कमतर नतीजों में आखिरी है। अब हमारा मानना है कि खुदरा क्षेत्र में बदलाव, नए ऊर्जा कारोबार की शुरुआत और डिजिटल कारोबार की रफ्तार समूह के लिए उत्प्रेरक साबित होंगे।

देश की पहली सोलर कार लॉन्च, सिर्फ 80 पैसे में 1 किमी दौड़ेगी

- कीमत 3.25 लाख रुपए

नई दिल्ली । भारतीय ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में नए इनोवेशन की ओर बड़े कदम बढ़ रहे हैं। हाल ही में पुणे की बेस्ड इलेक्ट्रिक व्हीकल स्टार्ट-अप कंपनी वेव मोबिलिटी ने देश की पहली सोलर पावर्ड कार वायवे ईवा को लॉन्च किया है। यह कार केवल 3.25 लाख रुपए में उपलब्ध है और कंपनी का दावा है कि यह 250 किमी की ड्राइविंग रेंज के सिंगल चार्ज पर प्रदर्शन कर सकती है। वायवे ईवा का डिजाइन भी विशेष है, जिसमें सोलर पैनल को सनरूफ पर इस्तेमाल किया गया है। कार में अंदर कंफर्ट और एंटरटेनमेंट के लिए एसी, एपल कारप्ले, और एंड्रॉयड ऑटो कनेक्टिविटी सिस्टम भी शामिल हैं। इसकी टॉप स्पीड 70 प्रति किमी है और फुल चार्ज होने में सिर्फ 45 मिनट लगते हैं। पर्यावरण को देखते हुए सोलर पावरड व्हीकल्स का उपयोग करने में यह कदम बहुत महत्वपूर्ण है। भारत में सोलर कारों की एंट्री से मोटर व्यावसाय में गहरा तबदला देखने के अवसर हैं, जिससे न केवल इंडस्ट्री में विकास होगा बल्कि पर्यावरण की भी ध्यान में रखा जा सकेगा।

कंपनियों के तिमाही परिणाम, एफपीआई के रुख से तय होगी शेयर बाजार की दिशा

- कच्चे तेल के दाम, डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल भी बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण रहेगी

मुंबई ।

इस सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों की दिशा एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक जैसी बड़ी कंपनियों के तिमाही नतीजों, डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण करने के बाद की घोषणाओं और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) की गतिविधियों के रुख से तय होगी। विश्लेषकों ने यह राय जताई है। ट्रंप सोमवार को दूसरे कार्यकाल के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण करेंगे। सप्ताह के दौरान भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल), एचडीएफसी बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, डॉ रेड्डीज, अल्ट्राटेक सीमेंट, जेएसडब्ल्यू स्टील और आईसीआईसीआई बैंक सहित कई बड़ी कंपनियां अपने दिसंबर तिमाही के नतीजे घो षित करेंगी। इसके अलावा विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) और घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) के बीच का संघर्ष भी बाजार की जटिलता को और बढ़ा रहा है। बाजार के एक वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक ने कहा कि जैसे-जैसे तिमाही नतीजों का सीजन आगे बढ़ेगा, निवेशकों का ध्यान आगामी केंद्रीय बजट पर केंद्रित होने की उम्मीद है, जो साल के लिए सरकार के आर्थिक और राजकोषीय रुख की रूपरेखा तैयार करेगा। बाजार प्रतिभागी नीतिगत उपायों, राजकोषीय आवंटन और विकास पहल पर बारीकी से नजर रखेंगे। उन्होंने कहा कि वैश्विक मोर्चे पर सभी की नजरें डोनाल्ड ट्रंप पर हैं। विशेषज्ञों ने कहा कि वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दाम, डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल भी बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण रहेगी। एक बाजार विशेषज्ञ कहते हैं कि तीसरी तिमाही के लिए नतीजों का सिलसिला जारी है। ऐसे में घरेलू शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव रहेगा। कुछ शेयर विशेष गतिविधियां देखने को मिल सकती हैं। निवेशकों की नजरें कंपनियों के तिमाही नतीजों तथा प्रबंधन की टिप्पणियों पर रहेगी। उन्होंने कहा कि ट्रंप के राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने के बाद नीतिगत घोषणाएं वैश्विक स्तर पर बाजार धारणा को काफी प्रभावित करेंगी। बाजार विशेषज्ञों ने कहा कि आगे हम उम्मीद करते हैं कि इस सप्ताह बाजार कई घरेलू और वैश्विक कारकों के कारण सतर्क रुख बनाए रखेगा।

सप्ताह के दौरान दिग्गज कंपनियों के तिमाही नतीजे आ रहे हैं, जिन पर सभी की निगाह रहेगी। इसके अलावा 20 जनवरी को डोनाल्ड ट्रंप के सत्ता संभालने के बाद व्यापार शुल्कों की घोषणा और उसके वैश्विक व्यापार पर असर को लेकर सभी की नजरें रहेंगी।

अगर आपको भी है गेमिंग ऐप की लत तो हो जाएं सावधान

धोखाधड़ी के मामलों में लगभग 7 लाख रुपये की राशि बरामद की गई

जम्मू । जम्मू के साइबर सेल डी.पी.ओ. ने ऑनलाइन और ऑफलाइन धोखाधड़ी और साइबर अपराध के मामलों के खिलाफ लड़ाई में नए कदम उठाए हैं। उनकी टीम ने लगातार काम करके आम जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किया है। इस समय साइबर सेल ने कई मामलों को सुलझाते हुए धोखाधड़ी से बरामद की गई राशि का आंकलन किया है। इन मामलों में लगभग 7 लाख रुपये की राशि बरामद की गई है। शिकायतकर्ताओं ने टेलीग्राम पर ट्रेडिंग और नकली गेमिंग एप के माध्यम से धोखाधड़ी के आरोप में शिकायत दर्ज की थी। साइबर सेल जम्मू के एक प्रतिनिधि ने बताया कि वे उन्हें किस तरह कर्मचारियों और तकनीकी उपकरणों के माध्यम से धोखाधड़ी के मामलों में सफलतापूर्वक इन्वेस्टिगेशन करने में मदद मिल रही है। जम्मू साइबर सेल ने धोखाधड़ी के खिलाफ लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाई है और धोखाधड़ी और साइबर अपराध के मामलों में कार्रवाई कर रही है। जानकारी के अनुसार साइबर सैल ने एक बार फिर अलग-अलग साइबर अपराध शिकायतों में धोखेबाजों से 6,90,460 की राशि सफलतापूर्वक बरामद की है। उक्त राशि ऑनलाइन ट्रेडिंग और इनवैस्ट के बारे में अलग-अलग रणनीति अपनाकर लोगों को धोखा देकर इकट्ठी की गई थी। बता दें कि 2 शिकायतों में शिकायतकर्ताओं ने टेलीग्राम पर ट्रेडिंग में इनवेस्ट किया था और अन्य शिकायतों में शिकायतकर्ताओं ने एक नकली गेमिंग एप (एविएटर) के माध्यम से पैसे गंवाए थे।

इस सप्ताह सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेंगे 5 नए आईपीओ

मेनबोर्ड आईपीओ 22 जनवरी से 24 जनवरी तक खुला रहेगा

मुंबई ।

घरेलू शेयर बाजार में इस सप्ताह 5 कंपनियों के आईपीओ खुलेंगे। इन 5 कंपनियों में 4 एसएमई सेगमेंट और 1 मेनबोर्ड आईपीओ शामिल है। मेनबोर्ड में इस हफ्ते डेंटा वाटर का आईपीओ खुल रहा है। यह मेनबोर्ड आईपीओ 22 जनवरी से 24 जनवरी तक खुला रहेगा। कंपनी ने 279 रुपए से 290 रुपए प्रति शेयर प्राइस बैंड तय किया है। इस आईपीओ के लिए 50 शेयरों का एक लॉट बनाया गया है। जिससे निवेशकों को कम से कम 14,700 रुपए का दांव लगाना होगा। बता दें कंपनी ग्रे मार्केट में 110 रुपए के जीएमपी पर ट्रेड कर रही है। कंपनी के आईपीओ का साइज 169.37 करोड़ रुपए का है। इस आईपीओ के जरिए कंपनी 32.20 लाख फ्रेश शेयर जारी करेगी। वहीं 32.20 लाख शेयर ऑफर फाल सेल के तहत जारी किए जाएंगे। कंपनी के आईपीओ का 20 जनवरी को खुल रहा है। आईपीओ पर निवेशकों के पास 22 जनवरी तक दांव लगाने का मौका रहेगा। इस आईपीओ का प्राइस बैंड 250 रुपए से 263 रुपए तय किया गया है। ग्रे मार्केट में कंपनी 110 रुपए के प्रीमियम पर ट्रेड कर रही है। कंपनी का आईपीओ 22 जनवरी को खुल जाएगा। निवेशकों के पास 24 जनवरी तक दांव लगाने का मौका रहेगा। इस आईपीओ का प्राइस बैंड 145 रुपए है। कंपनी ने 1000 शेयरों का लॉट बनाया है। जिससे निवेशकों को कम से कम 145000 रुपए का दांव लगाना होगा। आईपीओ 23 जनवरी को खुल जाएगा। निवेशक 27 जनवरी तक दांव लगा सकते हैं। कंपनी ने आईपीओ के लिए प्राइस बैंड 235 रुपए से 250 रुपए प्रति शेयर तय किया है। वहीं लॉट साइज 600 शेयरों का है। निवेशकों को एक साल 1.50 लाख रुपए का निवेश करना होगा। यह एसएमई आईपीओ 24 जनवरी को खुलेगा। निवेशक 28 जनवरी तक आईपीओ पर दांव लगा पाएंगे। कंपनी ने अभी प्राइस बैंड की घोषणा नहीं की है। आईपीओ के जरिए 24.58 लाख शेयर जारी किए जा सकते हैं।

दावोस में दिखेगी भारत की विविधता में एकता की झलक

दावोस । विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की शुरुआती बैठक में भारत ने 'विविधता में एकता' का संदेश दिखाया। सोमवार से पांच दिन तक चलने वाली इस महामहिम सभा में भारत ने अपना सबसे बड़ा प्रतिनिधिमंडल भेजा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आर्थिक नीतियों और डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता को दुनिया के सबसे अमीर और ताकतवर नेताओं को दिखाने का भारत का मिशन है। भारतीय प्रतिनिधिमंडल में पांच केंद्रीय मंत्रियों के साथ तीन मुख्यमंत्री, करीब 100 सीईओ, सरकारी अधिकारी और कला-संस्कृति के क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों का समावेश है। भारत के प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव करेंगे। बैठक में महाराष्ट्र ने 7 लाख करोड़ रुपये के समझौता ज्ञापन (एमओयू) करने का लक्ष्य रखा है। तेलंगाना और अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी निवेश के अपने हिस्से की तलाश की है। इस महामहिम सभा के माध्यम से भारत अपनी मजबूत वृद्धि दर्ज करने का मिशन ले रहा है, जब दुनियाभर के अर्थशास्त्रियों के सर्वे अनुसार 2025 में वैश्विक आर्थिक स्थितियों के बारे में कमजोर होने की चिंता है। हालांकि, भारत ने अपने रफ्तार को बनाए रखने की पहल रखी है। इस संगठन के सभी दिग्गज नेता, उन्होंने अपने देशों की बढ़ती वृद्धि दर का हर एक मौका सही दिशा में ले जाने की जिम्मेदारी ली है।

घरेलू क्रिकेट को कोई हल्के में नहीं लेता : रोहित

मुम्बई के खिलाफ रणजी ट्रॉफी में खेलने तैयार हूं

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि वह मुम्बई की ओर से रणजी ट्रॉफी क्रिकेट मैच खेलेंगे। ऑस्ट्रेलिया दौरे में टीम के खराब प्रदर्शन के बाद क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने सभी खिलाड़ियों के लिए घरेलू क्रिकेट खेलना अनिवार्य कर दिया है। वहीं रोहित ने कहा कि कोई भी खिलाड़ी घरेलू प्रतियोगिता को हल्के में नहीं लेता है पर अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर के व्यस्त कार्यक्रम के कारण ही खिलाड़ी घरेलू क्रिकेट नहीं खेल पाते हैं।रणजी ट्रॉफी का दूसरा चरण 23 जनवरी से शुरू हो रहा है। इसमें मुंबई की टीम जम्मू-कश्मीर का मुकाबला करेगी। हाल के दिनों में खराब प्रदर्शन के कारण आलोचना झेल रहे रोहित ने कहा कि

पिछले 6 से 7 साल से अगर आप हमारे कैलेंडर को देखें तो ऐसा कभी नहीं हुआ कि हम 45 दिनों तक घर बैठे रहे हो। ऐसा तभी होता है जब आईपीएल समाप्त होने के तत्काल बाद कोई अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं होता है। भारतीय कप्तान ने कहा कि हमारा घरेलू सत्र अक्टूबर में शुरू होता है और मार्च तक चलता है। वहीं जो खिलाड़ी राष्ट्रीय टीम के लिए सभी प्रारूप नहीं खेल रहे होते हैं तो वह घरेलू क्रिकेट में खेल सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैं अपनी बात करूं तो मैंने 2019 से नियमित रूप से टेस्ट क्रिकेट खेलना शुरू किया दिया है। ऐसे में आपको मुश्किल से ही समय मिलता है।

जब आप नियमित रूप से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलते हैं, तो आपको तरोताजा होने के लिए समय की जरूरत होती है। ऐसा नहीं है कि कोई घरेलू क्रिकेट को हल्के में ले रहा है। उन्होंने टेस्ट में अपनी पिछली 15 पारियों में केवल एक अर्धशतक बनाने के बाद भी इस प्रारूप से संन्यास लेने से मना कर दिया है। रोहित हाल के ऑस्ट्रेलिया दौर में असफल रहे थे और 5 पारियों में सिर्फ 31 रन ही बना सके थे। इससे पहले न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेल सीरीज में भी वह बड़ा स्कोर नहीं बना पाये थे।

बोपन्ना-शुआई की जोड़ी ऑस्ट्रेलियाई ओपन मिश्रित युगल के क्वार्टर फाइनल में पहुंची

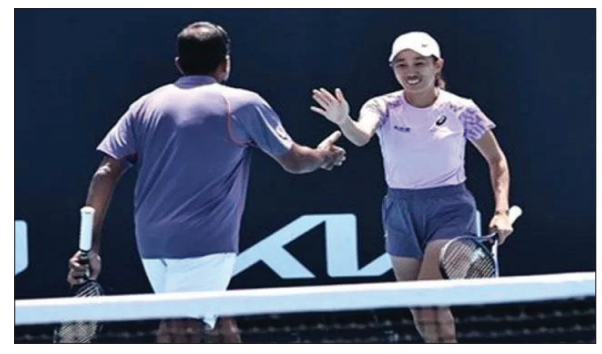

नई दिल्ली (एजेंसी)। मेलबर्न - अनुभवी भारतीय टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना और चीन की उनकी जोड़ीदार झांग शुआई ने रविवार को यहां दूसरे दौर के मैच में वॉकओवर मिलने के बाद ऑस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस टूर्नामेंट के मिश्रित युगल स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

बोपन्ना और शुआई का मुकाबला अमेरिका की टेलर टाउनसेंड और मोनाको के ह्यूगो निस से था, लेकिन यह चौथी वरीयता प्राप्त जोड़ी खेलने के लिए नहीं उतरी। इससे भारतीय-चीनी जोड़ी कोर्ट पर उतरे बिना ही अंतिम आठ में पहुंच गई। बोपन्ना और शुआई का अगला मुकाबला हंगरी की टिमिया बाबोस और अल साल्वाडोर के मार्सेलो अरेवलो तथा ओलिविया गैडेकी और जॉन पीयर्स की ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा।

बोपन्ना और शुआई की जोड़ी ने इससे पहले अपने शुरुआती मैच में फ्रांस की क्रिस्टीना म्लादेनोविच और क्रोएशिया के इवान डोडिक को 6-4, 6-4 से हराया था।

आईपीएल 2025: लखनऊ सुपर जायंट्स की कप्तानी संभाल सकते हैं ऋषभ पंत

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टार भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत को इंडियन प्रीमियर लीग 2025 संस्करण से पहले संजिका गोयनका के स्वामित्व वाली लखनऊ सुपर जायंट्स का कप्तान बनाया जा सकता है। दाएं हाथ के बल्लेबाज केएल राहुल को आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी से पहले लखनऊ फ्रैंचाइजी ने रिटेन नहीं किया जबकि उन्होंने कैश-रिच लीग के अपने पहले दो संस्करणों में टीम को प्लेऑफ में पहुंचाया था। राहुल को रिटेन न करने के बाद LSG टीम के पास पंत और श्रेयस अय्यर के बीच भूमिका के लिए चयन करने के लिए दो विकल्प थे इसलिए फ्रैंचाइजी और प्रबंधन ने पूर्व के साथ जाने का विकल्प चुना।

पंत इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के इतिहास में सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए जिन्हें जेद्दा में आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी के दौरान लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) ने 27 करोड़ रुपए में खरीदा। LSG फ्रैंचाइजी इस टूर्नामेंट में दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) के बाद दूसरी टीम होगी। उन्होंने हमवतन श्रेयस अय्यर को हराया, जो कुछ मिनट पहले ही पंजाब किंग्स द्वारा 26.75 करोड़ रुपए में खरीदे गए लीग के इतिहास में सबसे महंगे खिलाड़ी बने थे। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के मिशेल स्टार्क को पछाड़ा जिन्होंने 24.75 करोड़ रुपए की रिकॉर्ड तोड़ बोली के साथ वर्षों बाद आईपीएल में वापसी की थी।

शुरू में रस्त और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच बोली लगाने की जंग हुई, जिसमें बाद में हार मान ली गई। सनराइजर्स हैदराबाद ने अपने विस्फोटक बल्लेबाजी आक्रमण को मजबूत करने की कोशिश में बोली लगाने की जंग में प्रवेश किया और DC ने 'राइट टू मैच' कार्ड का इस्तेमाल करने की कोशिश की, लेकिन वे पंत के लिए LSG द्वारा लगाई गई कीमत से मेल नहीं खा सके और वे अय्यर से भी आगे निकल गए।

पंत ने 2016 से अपने पूरे आईपीएल करियर में दिल्ली कैपिटल्स का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने 110 मैचों में 35.31 की औसत से 3,284 रन बनाए हैं जिसमें एक शतक और 18 अर्द्धशतक शामिल हैं। उन्हें 2021 में टीम का कप्तान नियुक्त किया गया और उन्होंने उसी सीजन में उन्हें प्लेऑफ में पहुंचाया। आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी से पहले LSG ने अनकैप्ड स्टार मोहसिन खान और आयुष बदोनी के साथ निकोलस पूरन, मयंक यादव और रवि बिश्नोई को रिटेन किया। लखनऊ स्थित फ्रैंचाइजी ने 14 में से सात मैच जीतकर 14 अंकों के साथ स्टैंडिंग में 7वें स्थान पर अपना आईपीएल 2024 का सफर समाप्त किया।

भारतीय महिला टीम ने अंडर-19 टी-20 विश्वकप में वेस्टइंडीज को हराया

क्वालालंपुर (एजेंसी)। पारूनिका सिसोदिया (तीन विकेट), आयुषी शुक्ला और वीजे जोशिता (दो-दो) विकेट की बेहतरीन गेंदबाजी के बाद सनिका चलके (नाबाद 18) और जी कामिलीनी (नाबाद16) शानदार पारियों की बदौलत भारतीय महिला टीम ने रविवार को अंडर-19 टी-20 विश्वकप में वेस्टइंडीज को 9 विकेट से हरा दिया हैं।

आज यहां भारतीय टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की टीम भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे नहीं टिक सकी। भारतीय गेंदबाजों ने महज 13.2 ओवर में वेस्टइंडीज की

टीम को 44 के स्कोर पर समेट दिया। वेस्टइंडीज की ओर से असाबी कॉलेंडर (12) और केनिका कसार (15) के अलावा कोई भी बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक नहीं पहुंच सका।

भारत की ओर से तेज गेंदबाज वीजे जोशिता ने एक ही ओवर में दो विकेट झटके जबकि बाएं हाथ की स्पिन जोड़ी आयुषी शुक्ला और पारुनिका सिसोदिया ने लगातार दो ओवर के अंतराल पर दो विकेट झटकर 5.1 ओवर में वेस्टइंडीज का स्कोर 17 पर चार विकेट कर दिया। इसके बाद भारतीय खिलाड़ियों ने वेस्टइंडीज के तीन खिलाड़ियों को रनआउट किया।

इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम ने जी तृषा (चार) का विकेट गवांने के बाद जी कमालिनी (नाबाद 16) और सनिका चलके(नाबाद 16) ने मिलकर पांचवें ओवर की दूसरी गेंद पर 47 रन बनाकर मुकाबला जीत लिया। वेस्टइंडीज की ओर से जी क्लैसटन को एकमात्र विकेट मिला।

बांग्लादेश के पूर्व कप्तान शाकिब अल हसन फिर मुश्किलों में, गिरफ्तारी वारंट जारी

ढाका । ढाका की एक अदालत ने रविवार को बांग्लादेश के ऑलराउंडर और अवामी लीग के पूर्व सांसद शाकिब अल हसन के खिलाफ दो बैंक चेक बाउंस होने के मामले में गिरफ्तारी वारंट जारी किया। पिछले साल नागरिक अशांति के कारण अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़कर भागने पर मजबूर होना पड़ा था, जिसके बाद से शाकिब अपनी जान को खतरा होने के डर से बांग्लादेश नहीं लौटे हैं। अदालत के एक अधिकारी ने बताया, 'अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट जियादुर रहमान ने गिरफ्तारी वारंट जारी करते हुए पुलिस से 24 मार्च को आदेश के क्रियान्वयन पर रिपोर्ट पेश करने को कहा है।' उन्होंने कहा कि वारंट इसलिए जारी किया गया क्योंकि हसन जो एक कृषि फार्म के अध्यक्ष भी हैं, चेक बाउंस होने से संबंधित एक मामले में पहले दिए गए आदेश के अनुसार अदालत में पेश नहीं हुए। फार्म के प्रबंध निदेशक गाजी शाहगीर हुसैन के खिलाफ भी इसी तरह का एक और वारंट जारी किया गया क्योंकि उन्होंने भी समन का जवाब नहीं दिया। इंटरनेशनल फाइनेंस इन्वेस्टमेंट एंड कॉमर्स (आईएफआईसी) बैंक ने क्रिकेटर के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। आईएफआईसी बैंक ने पिछले साल अक्टूबर में चेक बाउंस होने के मामले में कानूनी नोटिस जारी किया था। इसके बाद 24 दिसंबर को क्रिकेटर से व्यवसायी बने और उनकी कंपनी के तीन अन्य अधिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया। फार्म के दो अधिकारियों ने आज अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण किया और जमानत की गुहार लगाई जिसे अदालत ने सुनवाई के बाद मंजूर कर लिया। बांग्लादेश की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान शाकिब ने 2016 में दक्षिण-पश्चिमी सतखीरा में शाकिब अल हसन एग्रो फार्म नाम से एक केकड़ा फार्म स्थापित किया था। कंपनी कथित तौर पर 2021 से निष्क्रिय है।

श्रीलंका दौरे से पहले ऑस्ट्रेलिया को लगा झटका, बड़े खिलाड़ी को कोहनी में लगी चोट

नई दिल्ली - श्रीलंका के टेस्ट दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया के कप्तान स्टीव स्मिथ की कोहनी में चोट लग गई है, लेकिन उनके इस सप्ताह के अंत में दुबई में प्री-टूर कैंप में शामिल होने की उम्मीद है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने रविवार को यह जानकारी दी। सीए ने कहा कि बाएं हाथ के स्पिनर मैथ्यू कुहनेमन बिग बैश लीग (बीबीएल) में खेलते समय अपने अंगूठे में हुए फ्रैक्चर की सर्जरी से उबर रहे हैं जबकि नियमित कप्तान पैट कमिंस के बाएं टखने के दर्द की रिकवरी पर विशेषज्ञ की सलाह के बाद निगरानी जारी रहेगी। स्मिथ को शुक्रवार को बिग बैश लीग में सिडनी सिक्सर्स के लिए फील्डिंग करते समय दाहिनी कोहनी में चोट लग गई जिसके कारण सिडनी थंडर के खिलाफ मैच बारिश के कारण रद्द करना पड़ा। कुहनेमन के बारे में सीए ने कहा कि वह तब तक ऑस्ट्रेलिया में रहेंगे जब तक उनके फ्रैक्चर वाले अंगूठे पर सर्जरी का घाव ठीक नहीं हो जाता। सीए ने कहा, 'अगर वह अच्छी प्रगति करते रहे तो श्रीलंका में टीम में शामिल होने के उद्देश्य से वह इस सप्ताह गेंदबाजी फिर से शुरू करने की योजना बना रहे हैं।'

इंग्लैंड में काउंटी क्रिकेट खेलें विराट कोहली : संजय मांजरेकर

मुम्बई । पूर्व बल्लेबाज संजय मांजरेकर ने विराट कोहली से कहा है कि वह इंग्लैंड में होने वाली टेस्ट सीरीज से पहले फॉर्म हासिल करने के लिए काउंटी क्रिकेट खेलें। मांजरेकर ने कहा कि इससे विराट वहां के हालातों से भी बेहतर तरीके से तालमेल बैठा सकेंगे। विराट पिछले कुछ समय से फार्म से बाहर हैं। वह न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ रन बनाने में असफल रहे थे। ऐसे में अब उनका लक्ष्य अपना प्रदर्शन बेहतर करना रहेगा। मांजरेकर ने कहा कि कोहली को टेस्ट शुरू होने से पहले इंग्लैड में लाल गेंद क्रिकेट में कुछ अभ्यास हासिल करना चाहिये। मांजरेकर ने कहा कि कोहली को काफी लाल गेंद क्रिकेट खेलना चाहिये। भारतीय टीम जून में इंग्लैंड दौरे पर जाएगी। पहला टेस्ट जून में होगा, जबकि काउंटी चैंपियनशिप अप्रैल में शुरू होगी। ऐसे में वह पुजारा की तरह काउंटी टीम में शामिल हो सकते हैं और मैच अभ्यास हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय टीम शुरुआती टेस्ट मैचों में उनके प्रदर्शन की समीक्षा कर सकती है। यदि सकारात्मक संकेत हैं, तो वह जारी रख सकते हैं। प्रशंसक चाहते हैं कि विराट वहां जाकर संघर्ष न करें, जैसा कि हमने पहले देखा है। यह भारतीय क्रिकेट के लिए अच्छा नहीं होगा। ऐसे में काउंटी क्रिकेट खेलना उनके लिए सबसे बेहतर रहेगा। वहीं पूर्व ऑलराउंडर खिलाड़ी संजय बांगड़ ने कहा कि कोहली अपनी बेहतरीन फिटनेस के बल पर एक बार फिर शानदार वापसी करेंगे।

पाक ने वेस्टइंडीज को पहले टेस्ट में 127 रनों से हराया

-1-0 की बढ़त हासिल की

मुंबई (एजेंसी)। मुल्तान (ईएमएस)। पाकिस्तान ने वेस्ट इंडीज को दो मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले ही मैच में 127 रनों से हराकर सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। इस मैच में पाक की जीत में स्पिनरों साजिद खान और अबरार अहमद के अलावा कप्तान शान मसूद की अहम भूमिका रही। मसूद ने जहां अर्धशतकीय पारी खेलते हुए 52 रन बनाये। वहीं साजिद ने पांच विकेट जबकि अबरार ने चार विकेट लिए। इस प्रकार पाक टीम ने तीसरे ही दिन ये मैच जीत लिया।

इस मुकाबले में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पहली पारी में 230 रन बनाए। इसके बाद पहली पारी में वेस्टइंडीज की टीम 137 रन पर आउट हो

गई। इस प्रकार पहली पारी में पाकिस्तान को 93 रन की बढ़त मिली। वहीं पाकिस्तान ने दूसरी पारी में 157 रन बनाए और टीम की कुल बढ़त 250 रन की हो गई। इस प्रकार वेस्टइंडीज को जीत के लिए 251 रन का टारगेट मिला था, लेकिन ये टीम दूसरी पारी में 123 रन पर आउट हो गई और उसे हार का सामना करना पड़ा।

वेस्टइंडीज की ओर से केवल ऐलेक ऐथनेज ही 55 रन बना पाये। वहीं अन्य बल्लेबाज सस्ते में ही सिमट गये। टीम के केवल पांच बल्लेबाज ही दो अंकों तक पहुंच पाये। पाक की ओर से साजिद ने 50 रन देकर पांच विकेट लिए। वहं अबरार ने 27 रन देकर चार विकेट झटके। नोमान ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले जोमेल वारिकन के 32 रन देकर सात विकेट की सहायता से वेस्टइंडीज ने पाकिस्तान को दूसरी पारी में 157 पर ही आउट कर दिया। इस प्रकार वेस्टइंडीज को जीत के लिए 251 रनों का लक्ष्य मिला था।

ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर की दादी और मामा सड़क हादसे का शिकार, मौके पर तोड़ा दम

स्पोर्ट्स डेस्क । अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खिलाड़ी मनु भाकर की दादी और मामा की रविवार 19 जनवरी को सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। बताया जा रहा है कि यह दुर्घटना रविवार सुबह करीब 9 बजे महेंद्रगढ़ बाईपास रोड पर एक स्कूटर और ब्रेजा कार की टक्कर के कारण हुई। टक्कर इतनी भीषण थी कि मनु भाकर की दादी और चाचा की मौके पर ही मौत हो गई। दुर्घटना के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। अभी दो दिन पहले ही मनु भाकर को राष्ट्रपति से खेल रत्न पुरस्कार मिला था। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल भिजवाया। शहर थाना प्रभारी और पुलिस मामले की जांच कर रही है। गौर हो कि दो बार की ओलंपिक पदक विजेता निशानेबाज मनु भाकर को शुक्रवार को राष्ट्रीय खेल पुरस्कार समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से प्रतिष्ठित मेजर ध्यानचंद खेल रत्न से सम्मानित किया गया। भाकर स्वतंत्र भारत की पहली खिलाड़ी हैं जिन्होंने एक ओलंपिक में दो पदक जीते हैं। उन्होंने पेरिस ओलंपिक में यह कमाल किया था।

रवींद्र जडेजा ने अभ्यास सत्र में लिया हिस्सा, दिल्ली के खिलाफ में खेल सकते हैं रणजी ट्रॉफी मैच

स्पोर्ट्स डेस्क । अनुभवी बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा राजकोट में टीम के अभ्यास सत्र में शामिल होने के बाद दिल्ली के खिलाफ आगामी रणजी ट्रॉफी मैच में सौराष्ट्र के लिए खेल सकते हैं। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि जडेजा रविवार की सुबह सौराष्ट्र के नेट सत्र में थे और बाएं हाथ के तेज गेंदबाज जयदेव उनादकट की कप्तानी वाली टीम के साथ प्रशिक्षण ले रहे थे। जडेजा को इंग्लैंड के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला और चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत की टीम में चुना गया था। जडेजा ने सौराष्ट्र के लिए आखिरी रणजी ट्रॉफी मैच जनवरी 2023 में तमिलनाडु के खिलाफ घुटने की चोट के बाद वापसी करते हुए खेला था और 8 विकेट लिए थे। उन्होंने हाल ही में भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान पांच में से तीन टेस्ट मैचों में हिस्सा लिया था, जहां उन्हें 3-1 से हार का सामना करना पड़ा था। इसके तुरंत बाद बीसीसीआई ने घरेलू क्रिकेट में भागीदारी को अनिवार्य बनाने के लिए 10-सूत्रीय नीति दस्तावेज पेश किया और कहा कि गैर-अनुपालन अंतरराष्ट्रीय चयन और केंद्रीय अनुबंध नवीनीकरण को प्रभावित कर सकता है। 11 अंकों के साथ एलीट ग्रुप डी अंक तालिका में पांचवें स्थान पर काबिज सौराष्ट्र 23 जनवरी को निरंजन शाह स्टेडियम में चौथे स्थान पर काबिज दिल्ली से भिड़ने के साथ अपने रणजी ट्रॉफी अभियान को फिर से शुरू करेगा जिसके 14 अंक हैं। जडेजा के अलावा विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत राजकोट में दिल्ली के लिए खेलेंगे जबकि भारत के टेस्ट और वनडे कप्तान रोहित शर्मा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल के साथ बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स के एमसीए मैदान पर जम्मू और कश्मीर के खिलाफ अपने मैच में मुंबई के लिए खेलेंगे। वनडे उप-कप्तान शुभमन गिल के कर्नाटक के खिलाफ अपने मैच में पंजाब के लिए खेलने की उम्मीद है। कोहनी की चोट के कारण केएल राहुल के घरेलू क्रिकेट खेलने की संभावना नहीं है। वहीं गर्दन में मोच के कारण विराट कोहली को शेष रणजी ट्रॉफी मैचों के लिए दिल्ली की टीम में भी शामिल नहीं किया गया है।

अर्जुन पुरस्कार विजेता सुचा सिंह को अब भी पंजाब सरकार की अनदेखी का दर्द

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत के पूर्व एथलीट सुचा सिंह को जब लंबे इंतजार के बाद शुक्रवार को अर्जुन पुरस्कार (लाइफटाइम) से नवाजा गया तो इसे मिलने की खुशी उनकी डबडबाई आंखों और रूंधी आवाज से महसूस की जा सकती थी लेकिन पंजाब सरकार की अनदेखी का दर्द अब भी उनकी जुबां पर आ ही जाता है। अर्जुन पुरस्कार दिए जाने की घोषणा के बाद पंजाब के 74 साल के सिंह की सारी नाराजगी दूर हो गई थी क्योंकि आखिर देश ने उनकी उपलब्धियों को सम्मानित किया।

अर्जुन पुरस्कार के लिए वह 10 साल तक फॉर्म भरते रहे और थककर उम्मीद छोड़ दी थी। सिंह ने कहा, 'अर्जुन पुरस्कार मिलने से पूरी जिंदगी की कड़ी मेहनत का फल मिल गया, देश के लिए पदक जीतने के लिए जीजान लगा दी थी लेकिन अपनी उपलब्धियों की अनदेखी किए जाने का गम था, जो अब इस पुरस्कार ने खत्म कर दिया।' यह बोलते हुए उनकी आंखे डबडबा गई।

उन्होंने अपने खेल के दिनों की बात याद करते हुए कहा, 'जब मैं 1965 में जंग के समय सेना में भर्ती हुआ था तो ट्रेनिंग के साथ साथ अपनी स्पर्धा का अभ्यास भी करता था। मैं कबड्डी और दौड़ने में काफी अच्छा था, पर सेना के कोच ने मुझे दौड़ पर ध्यान लगाने के लिए कहा। मेरे पास दौड़ने के जूते नहीं थे जो तब 400 रुपए में आते थे और मेरी तनख्वाह थी 150 रुपए।'

पंजाब सरकार से भी उन्हें वो सम्मान नहीं मिला जिसकी उन्हें उम्मीद थी। उन्होंने कहा, 'पंजाब सरकार ने कभी भी उस तरह सम्मानित नहीं किया जैसे अन्य राज्य सरकार करती हैं, मुझे मेरी उपलब्धियों के लिए 100 रूपए का लिफाफा मिला था जबकि मैंने इस समारोह में शिरकत करने के लिए 800 रूपए जोड़े थे जिसमें से 200 रूपए तो दोस्तों ने ही जश्न मनाने में खत्म करवा दिए थे।'

अपने समय में खिलाड़ियों को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, 'तब खिलाड़ियों के लिए इतनी सुविधायें नहीं होती थीं, कोई प्रायोजक नहीं होता था। दौड़ने के लिए कोई ट्रैक नहीं होता था, 1982 में जब नई दिल्ली में एशियाई खेलों की मेजबानी की गई तभी जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम बना था। मेरे पास दौड़ने के लिए जूते और ट्रैक सूट नहीं था। पहले इतने कोच और अभ्यास के लिए उपकरण नहीं होते थे। अब दौर ही बदल गया है। अब खिलाड़ियों की उपलब्धियों का पूरा सम्मान होता है।'

उन्हें देश के लिए 1972 म्यूनिख ओलंपिक में प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया था लेकिन चोट के कारण वह इसमें हिस्सा नहीं ले सके और खेल के इस महासमर में खेलने का उनका सपना पूरा नहीं हो सका। देश को 1970 में बैंकाक में छठे एशियाई खेलों में चार गुणा 400 मीटर रिले में रजत पदक दिलाने वाले सिंह अपने शुरूआती दिनों की बात करते हुए काफी उत्साह से भर जाते हैं कि किस जुनून और कड़ी मेहनत से वो देश को तमगा दिलाने में लगे रहते थे। आठ साल सेना में रहने के बाद वह 1973 में टाटा स्टील में जमशेदपुर चले गए जहां उनकी तनख्वाह 5000 रुपए हो गई।

सिंह ने कहा, 'खेलों में शानदार प्रदर्शन के बावजूद मुझे सेना में 'कमिशन' नहीं मिला था। हालांकि पदोन्नति पर सिर्फ पांच रूपए बढ़ते थे। फिर मैं जमशेदपुर चला गया और जब तक टाटा स्टील में रहा, उनका सर्वश्रेष्ठ एथलीट रहा।' उन्होंने इसी दौरान तेहरान में हुए 1974 में सातवें एशियाई खेलों में चार गुणा 400 मीटर रिले में रजत पदक

और फिर अगले साल दक्षिण कोरिया के सोल में हुई दूसरी एशियाई एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। सिंह हालांकि ओलंपिक में नहीं खेल पाए लेकिन उन्होंने वापसी करते हुए वेटरंस टूर्नामेंट में भी हिस्सा लिया। इससे पहले वह अर्जुन पुरस्कार के लिए लगातार 10 साल तक फॉर्म भरते रहे लेकिन फिर बंद कर दिया।

भारत में तेजी से आगे बढ़ रहा एथलेटिक्स : फराह

मुंबई । दिग्गज एथलीट मो फराह ने कहा है कि भारत में अन्य खेलों के साथ ही एथलेटिक्स भी अब तेजी से आगे बढ़ रहा है। यही कारण है कि अधिक से अधिक युवा इस क्षेत्र में आगे आ रहे है जो एक सकारात्मक बात है। युवा खिलाड़ी अपने प्रदर्शन से एथलेटिक्स के क्षेत्र को बदल सकते हैं। फराह ने कहा है कि आजकल भारत में एथलेटिक्स तेजी से लोकप्रिय हो रहा है और युवाओं में इतनी क्षमता है कि वे इस क्षेत्र में बेतर प्रदर्शन कर सकते हैं क्योंकि उनमें काफी प्रतिभा है। फराह ने कहा कि जिस प्रकार भारत खेल में तेजी से आगे बढ़ रहा है वह सभी को प्रभावित कर रहा है। टाटा मुंबई मैराथन के 20वें सत्र के ब्रांड दूत बनने पर भारत आये फराह ने कहा, ''देश के विकास, युवा एथलीटों की प्रतिभा को देखना एक शानदार अनुभव है। आप अगर कड़ी मेहनत करें तो जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है और यही भारत में भी हो रहा है।'' उन्होंने कहा, ''आप जानते हैं कि भारत में एथलेटिक्स लगातार आगे बढ़ रहा है। यह हालांकि अभी नंबर एक पर नहीं पहुंचा है पर इसमे तेजी आ रही है। उन्होंने कहा, '' मुझे राष्ट्रमंडल खेलों और अन्य चैंपियनशिप के लिए भारत आना याद है। युवा एथलीटों को यहां प्रदर्शन कतरे देखना अच्छा सुखद अनुभव है।

संक्षिप्त खबरें

लहरिया कटिंग और शोरगुल फैलाने वाले अब बख्शे नहीं जाएंगे

हज़ारीबाग़/बिभा संवाददाता। हज़ारीबाग़ पुलिस ने आखिरकार उन बुलेट चालकों पर कड़ा रुख अपनाया है, जो मॉडिफाइड साइलेंसर का इस्तेमाल कर ध्वनि प्रदूषण फैला रहे थे। एसपी अरविंद सिंह की सख्त चेतावनी के बावजूद इन बुलेट चालकों की हरकतें नहीं रुकीं, जिसके बाद पुलिस ने शहर के विभिन्न इलाकों में अभियान चलाकर कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस को लगातार शिकायतें मिल रही थीं कि बाइकों में मॉडिफाइड साइलेंसर लगाकर पटाखों जैसी तेज आवाजें की जा रही हैं, जिससे आम जनता को भारी परेशानी हो रही थी। इसके जवाब में पुलिस ने शनिवार को चेकिंग अभियान चलाया और कई बाइकों के मॉडिफाइड साइलेंसर जब्त किए। चालकों से जुर्माना वसूलने के साथ-साथ उनके खिलाफ केस भी दर्ज किया गया। पुलिस ने कहा, चेतावनी के बावजूद कई बुलेट चालक अपनी आदतों से बाज नहीं आए। हमने पहले ही साफ कर दिया था कि मॉडिफाइड साइलेंसर हटवा लें, वरना कार्रवाई के लिए तैयार रहें। अब ऐसे चालकों पर 5000 रुपये का जुर्माना लगाया जा रहा है और उनके वाहनों में मानक साइलेंसर फिट करवाए जा रहे हैं। पुलिस का कहना है कि यह अभियान आने वाले दिनों में और तेज किया जाएगा। एसपी ने अपील की कि जिन लोगों ने अब तक अपने वाहनों में मॉडिफाइड साइलेंसर लगाए हुए हैं, वे तुरंत उन्हें हटवा लें, वरना उन्हें कड़ी कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा।पुलिस की इस कार्रवाई के बाद शहर में एक संदेश गया है कि लहरिया कटिंग और शोरगुल फैलाने वाले अब बख्शे नहीं जाएंगे।

हज़ारीबाग़ में अष्टमूलगुण संस्कार समारोह सानंद सम्पन्न

हज़ारीबाग़/बिभा संवाददाता। दिगम्बर जैन पंचायत ने स्थानीय जैन भवन बड़ा बाजार में परम पूज्य वाक्केशरी आचार्य 108 श्री विनिश्चय सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 प्रज्ञान सागर जी महाराज एवं मुनि श्री 108 प्रसिद्ध सागर जी महाराज के सानिध्य में अष्टमूलगुण संस्कार समारोह का भव्य आयोजन सानंद सम्पन्न हुआ ! कार्यक्रम में पुरुष महिलाओं समेत बच्चों ने भी काफी संख्या में पूर्ण उत्साह पूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम मघ,मांस,मधु, बड़,पीपल, पाकर, उमर, कठूमर का सीधे सेवन का त्याग जिसको जैन धर्म की प्रथम सीढ़ी माना जाता है पर आधारित था। बताते चलें कि हजारीबाग के इतिहास में प्रथम बार इस तरह का आयोजन किया गया । समाज के बच्चों नवयुवक और बूढ़े सभी लोगों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया ।कार्यक्रम प्रातः 7:30 बजें शुरू किया गया सर्वप्रथम परमपूज्य आचार्य श्री 108 विनिश्चयसागर जी महाराज के चित्र का अनावरण समाज के अध्यक्ष, महामंत्री एवं पदाधिकारीगण के द्वारा किया गया। तत्पश्चात दीप प्रज्वलन जैन महिला समाज की पदाधिकारीयों द्वारा किया गया , मुनि श्री का पाद प्रक्षालन स्वरूप चंद विनायका, धर्म चंद विनायका, प्रदीप विनायका, कपूर चंद विनायका, विजय सेठी,उत्तम पाटोदी, किशोर विनायका, सुनिल विनायका (यूको), विजय लुहाड़िया, द्वारा किया गया। उसके उपरांत मंगलाचरण संगीत विनायका के द्वारा किया गया । मुनि श्री ने कहा कि परम पूज्य आचार्य गुरुवर विनिश्चय सागर जी महाराज की कृपा से आज यह अभूतपूर्व कार्य हजारीबाग में संपन्न हुआ है।

सरस्वती शिशु मंदिर में नवीन नामांकन जांच परीक्षा का हुआ आयोजन

हजारीबाग/बिभा संवाददाता। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, कुम्हार टोली, हजारीबाग में नवीन नामांकन जांच परीक्षा का आयोजन हुआ। कक्षा अरुण से लेकर कक्षा अष्टम में नामांकन हेतु बच्चों ने परीक्षा दी। विद्यालय के प्राचार्य ब्रजेश कुमार सिंह ने बताया है कि नामांकन जांच परीक्षा का परिणाम जारी होने के बाद चयनित अभ्यर्थी विद्यालय में आकर नामांकन करा सकते हैं। मौके पर वरिष्ठ आचार्य अनिल कुमार, नामांकन प्रभारी विनीत कुमार वर्मा,आचार्य संतोष कुमार राय, आचार्य तारकेश्वर राय एवं आचार्य बंधु- भगिनी उपस्थित थे।

न्यायालय परिसर में चोरी की नीयत से घुसे चोर औजार सहित पकड़ाए

रामगढ़/बिभा संवाददाता। अजय कुमार पुलिस अधीक्षक, रामगढ़ को न्यायालय रामगढ़ के कर्मी से सूचना प्राप्त हुआ कि रामगढ़ थाना अंतर्गत व्यवहार न्यायालय रामगढ़ के पास कुछ चोर न्यायालय परिसर में पैनल बोर्ड में लगे तार की चोरी करने के लिए घुसे हुए हैं। तत्पश्चात पुलिस अधीक्षक, रामगढ़ द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए व्यावहार न्यायालय रामगढ़ में प्रतिनियुक्त पुलिस पदाधिकारी अजय कुमार एवं आरक्षीयों को त्वरित कार्रवाई करते हुए चोर को पकड़ने तथा समानों की बरामदगी करने का निर्देश दिया गया। न्यायालय में प्रतिनियुक्त पुलिस पदाधिकारी/ कर्मियों द्वारा कोर्ट परिसर में एक व्यक्ति को संदिग्ध हालात में देखा गया। पुलिस को देखते ही संदिग्ध व्यक्ति दौड़कर भागने का प्रयास किया परंतु पुलिस बल के द्वारा दौड़ाकर न्यायालय कर्मियों के सहयोग से उसे पकड़ लिया गया। पकड़ाये व्यक्ति से पूछताछ करने पर उसने अपना नाम हामिद खान, पिता मंजूर खान, ग्राम 12 नं0 चौक, घाटो, थाना माण्डू (वे0बो०), जिला रामगढ़ बताया। पकड़ाये चोर के निशानदेही पर 11 तांबे का ब्रैकेट (जो पैनल बोर्ड में लगा हुआ था), 02 रिंच, 20 नट बोल्ट बरामद किया गया। इस संदर्भ में रामगढ़ थाना में काण्ड दर्ज कर अभियुक्त को न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया।

झील परिसर में लगा हेल्थ चेकअप शिविर, मुफ्त में हुआ जांच

गुणवत्तापूर्ण एवं आधुनिक रूप से जांच हमारी प्राथमिकता : डॉ प्रवीण

बिभा संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग शहर के झील परिसर में श्रीनिवास डायग्नोस्टिक ने दिन रविवार को हेल्थ चेकअप जांच शिविर का आयोजन किया। जिसमें सुगर एवं हीमोग्लोबिन का जांच मुफ्त किया गया। इसमें 44 से अधिक जरूरतमंदों ने सुगर एवं हीमोग्लोबिन का जांच एवं उत्तम स्वास्थ्य का परामर्श प्राप्त किया। साथ ही कई लोगों ने अन्य जांच का परामर्श प्राप्त किया। इस दौरान अन्य जांच पर बाजार से किफायती दर पर उपलब्ध होने से कई जरूरतमंदों ने पंजीकरण कराया। जरूरतमंदों लोगों ने बताया कि सप्ताहिक छुट्टी रविवार के दिन पब्लिक पलेस में इस प्रकार की जांच से आमजन में काफी राहत पहूंचेगा। गंभीर बिमारियों का पूर्वत जानकारी होने से गंभीर बीमारियों से बचाव एवं राहत मिलेगा। ज्ञात हो कि श्रीनिवास डायग्नोस्टिक रविन्द्र पथ मिशन रोड स्थित मिशन होस्पिटल के परिसर में सेवारत है। जिसमें शरीर पूरा जांच आधुनिक तरीके एवं किफायती दर पर उपलब्ध है। पूरा शरीर का जांच में सीबीसी, थायराइड प्रोफाइल, लिवर फंक्शन टेस्ट, किडनी फंक्शन टेस्ट, वसा प्रालेख एचबीए, आरबीएस, इलेक्ट्रोलाइट, विटामिन-डी, विटामिन बी, ई.सी.जी यूएसजीडब्ल्यू, छाती का एक्स-रे एवं मुत्र का जांच सहित कई जांच के अलावे निशुल्क डॉक्टर्स परामर्श भी उपलब्ध है। मौके पर श्रीनिवास डायग्नोस्टिक संचालक डॉ प्रवीण श्रीनिवास ने कहा कि सुगर की बिमारी एवं हीमोग्लोबिन संबंधित बिमारी काफी सामान्य होते जा रही है। विशेष पहल के साथ हेल्थ चेकअप कैंप में सुगर एवं हीमोग्लोबिन की जांच निशुल्क लोगों के लिए उपलब्ध करवा रहें हैं। ताकि समय से पूर्व सुगर एवं हीमोग्लोबिन संबंधित बिमारी का उपचार कराकर घातक एंव गंभीर बीमारियों से लोगों को बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण एवं आधुनिक रूप से पूरा शरीर जांच उपलब्ध करना हमारी प्राथमिकता है। गरीब एवं मीडिल क्लास फैमली को इसका शतप्रतिशत लाभ मिल रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में लोगों को राहत पहूंचाने के लिए हमेशा से श्रीनिवास डायग्नोस्टिक की टीम कार्यरत है। मौके पर श्रीनिवास डायग्नोस्टिक के लैब विभाग से पिंकू कुमार, दीपक कुमार, छात्र सयूम अंसारी, सुदर्शन कुमार, छात्रा गिंजा कुमारी, मनीषा कुमारी, नर्सिंग कर्मी अज़रा निगार सहित कई स्वास्थ्य कर्मी काफी सक्रियता से जुटे रहे।

आदिवासी संस्कृति और परंपरा भारतीय धरोहर का अमूल्य हिस्सा : मुन्ना सिंह

बिभा संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग में रविवार को चंपा दिशोम सोहराय महोत्सव 2025 का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें आदिवासी समुदाय की संस्कृति, परंपरा और विरासत का शानदार प्रदर्शन हुआ। यह आयोजन आदिवासी समाज की एकता और उनकी पहचान को सशक्त करने का प्रतीक बना। आदिवासी समाज के आमंत्रण पर पहुंचे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह ने विशेष रूप से इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया और इसकी शोभा बढ़ाई। उनके साथ मुख्य अतिथि राज्य मंत्री फागु बेसरा, मंत्री चमरा लिंडा, मंच पर उपस्थित अन्य विशिष्ट अतिथि, और आदिवासी समाज के प्रमुख व्यक्तित्वों ने भी आयोजन में भाग लिया। मुन्ना सिंह ने पत्रकारों से बातचीत में आदिवासी समाज के अधिकारों के संरक्षण और उनके विकास पर जोर देते हुए कहा, आदिवासी समाज की संस्कृति और परंपरा भारतीय धरोहर का अमूल्य हिस्सा है। इसे संरक्षित करना और अगली पीढ़ी को इसके महत्व से अवगत कराना हम सभी की जिम्मेदारी है। इस महोत्सव का आयोजन ऑल इंडिया संथाल स्टूडेंट यूनियन (झारखंड) केन्द्रीय सरना समिति,और आदिवासी को-ऑर्डिनेशन कमेटी के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य आदिवासी संस्कृति और परंपरा को सहेजना और इसे नई पीढ़ी तक पहुंचाना था। महोत्सव के दौरान आदिवासी नृत्य, पारंपरिक गीत, और कला के विभिन्न रूपों का प्रदर्शन किया गया, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने न केवल अद्वितीय अनुभव प्रदान किया बल्कि आदिवासी समाज की धरोहर का महत्व भी दर्शाया। मुन्ना ने आयोजन समिति के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा, इस प्रकार के महोत्सव न केवल आदिवासी समाज को एकजुट करते हैं, बल्कि उनकी संस्कृति और परंपराओं को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में भी सहायक हैं।

टांगटांग में एक दिवसीय फुटबॉल प्रतियोगिता संपन्न

सोनाहातू। प्रखंड क्षेत्र के टांगटांग बाजार मैदान में एक दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया।इस मौके पर मुख्य अतिथि सिल्ली विधायक अमित कुमार महतो एवं विशिष्ट अतिथि ग्रामप्रधान मुंडा कृष्णा कुमार सिंह ने फुटबॉल में कीक मारकर व खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर मैच का शुभारंभ किया।टूर्नामेंट में फाईनल मुकाबला सुजीत स्पोर्टिंग एवं रंजीत एफसी के बीच खेला गया।जिसमें सुजीत स्पोर्टिंग विजेता व रंजीत एफसी उपविजेता बना। वहीं बादल स्पोर्टिंग एवं काशम्बूरु एफसी तृतीय व चतुर्थ पर रहे।विशिष्ट अतिथि ग्रामप्रधान मुंडा कृष्ण कुमार सिंह ने विजेता टीम को नगद 20 हजार रुपए पुरस्कृत किया। अतिथि अनूप सिंह मुंडा के द्वारा उपविजेता टीम को नगद 15 हजार रुपए दिए गए। वहीं तृतीय व चतुर्थ स्थान रखने वाले दोनों टीमों को नगद 5 - 5 हजार रुपए कमिटी की ओर से दिये गये। मंच संचालन सुचाँद महतो ने किया। मौके पर ग्रामप्रधान मुंडा कृष्ण कुमार सिंह, मुखिया प्रतिनिधि प्रधान सिंह मानकी, कार्तिक सिंह मानकी, सहित समस्त ग्रामवासियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

दर्दनाक हादसा : यात्री बस पलटने से तीन की मौत, कई लोग घायल

बिभा संवाददाता

विष्णुगढ। विष्णुगढ गोमिया पथ मार्ग स्थित नरकी से 2 किलोमीटर पीछे नेहा यात्री बस पलटने से तीन व्यक्ति की मौत घटना स्थल पर मौत हो गई है।जबकि तकरीबन 15 गंभीर रूप से घायल हो गए।बस हजारीबाग से नरकी कंजकीरो होते हुए फुसरो जा रही थी।अचानक अगला टायर फटने से दुर्घटना घटी।मृतकों में नरकी के ही मंगर करमाली (70), दूसरा कुड़कपनिया का बताया जा रहा है जबकि तीसरे मृतक की पहचान नहीं हो पाई है। दुर्घटना की सूचना मिलते ही विष्णुगढ पुलिस घटनास्थल पर पहुँची।आक्रोशित लोगों ने कुछ देर तक सड़क जाम रखा।पुलिस की पहल पर जाम को हटाया गया।पुलिस शव को कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए हजारीबाग भेज दी।सुविधानुसार कुछ घायलों को बिटीपीएस ले जाया गया जबकि सात घायलो को विष्णुगढ सीएचसी लाया गया।जहां प्राथमिक उपचार कर बेहतर इलाज के लिए हजारीबाग रेफर कर दिया गया।

श्री श्याम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम हुआ प्रारंभ

आज अखंड श्री श्याम ज्योति लेने रवाना होंगे दर्जनों श्याम प्रेमी

प्रकाश पटवारी

रामगढ़। रामगढ़ में श्री श्याम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के अनुष्ठान आनेवाले 3 फरवरी से 08 फरवरी तक विभिन्न हवन पूजन के साथ किया जाएगा। इस आलौकिक प्राण प्रतिष्ठा के लिए श्री श्याम अखंड ज्योति लाने 20 जनवरी को प्रातः आठ बजे दर्जनों श्याम प्रेमी महाकुंभ होते हुए खाटूश्यामजी राजस्थान के लिए प्रस्थान करेंगे। श्री श्याम प्रेमियों का दल रामगढ़ से श्री श्याम रथ लेकर जाएंगे। प्राण प्रतिष्ठा के भव्य आयोजन के निमित्त बीती रात्रि श्री श्याम मंदिर परिसर में संकीर्तन का आयोजन किया गया। संकीर्तन में यजमान जयप्रकाश मित्तल ने पूजा के बाद ज्योति प्रज्वलन किया । संकीर्तन का प्रारंभ गायक सह मिडिया प्रभारी कमल बगड़िया ने श्री श्याम चोरासी के पाठ के बाद भजनों के गायन का सिलसिला शुरू हुआ। भजनों को आगे बढ़ते हुए कब आएगा मेरा सांवरिया, कीर्तन की है रात बाबा आज थाने आनो है, तेरे हाथों की लकीर बदलेगा, बाबा तेरा स्वागत है के भजनों से भक्ति झूमते गाते गए। देर रात तक चलते संकीर्तन में भजनों की श्रृंखला को कमल बगड़िया, सांवरमल अग्रवाल, विष्णु शर्मा, पीयूष शर्मा, इंदर अग्रवाल, भारती बगड़िया , ध्रुव सिंह ,मनोज शर्मा एवं अन्य भक्तों ने मिलकर आगे बढ़ाया। यह कार्यक्रम प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व विशेष रूप से आयोजित किया गया। आगामी 3 फरवरी से 8 फरवरी तक श्याम बाबा का भव्य प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर अनिल गोयल, राजेश अग्रवाल, शंभू अग्रवाल, रमेश अग्रवाल, संजय चौधरी, राजेश पटवारी, नरेश अग्रवाल, अभिषेक सिंघानिया, मनीष अग्रवाल, प्रकाश पटवारी, निखिल अग्रवाल, पिंकी अग्रवाल, मीना बगड़िया, अरुण बगड़िया, एवं म्यूजिक पर दिलीप सुधीर एवं दीपक उपस्थित थे।

मन्हो चौक में मनाया गया शहीद शेख भीखारी शहादत दिवस

बिभा संवाददाता

लोहरदगा। मन्हो चौक स्थित शहादत समिति द्वारा शहीद शेख भीखारी शहादत दिवस मनाया गया। शनिवार को सदर प्रखंड अंतर्गत ग्राम मन्हो चौक स्थित शेख भीखारी शहीद स्मारक पर माल्यार्पण कर शहीद शेख भिखारी को श्रद्धांजलि अर्पित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन फीता काटकर मुख्य अतिथियों आईटीडीए परियोजना निदेशक सह उपायुक्त प्रतिनिधि प्रभार सुषमा नीलम सोरेंग, एसडीपीओ श्रृद्धा केरकेट्टा, पंचायत राज पदाधिकारी अंजना दास ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों को पुष्पगुच्छ, पुष्पमाला, शॉल भेंट देकर सम्मानित किया गया। एवं मंच में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों को पगड़ी पोषी करके सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में जरूरतमंद लोगों के बीच कंबल वितरण भी किया गया।

मुख्य अतिथि सुषमा नीलम सोरेंग ने कार्यक्रम संबोधित करते हुये कहा कि समाज को विकसित करना है तो मिलजुल सद्भावना के साथ रहें। और शेख भीखारी शहीद हुये लोगों के विचारों एवं उनके भावनाओं को बनाये रखना है और उनको याद करते रहना हैं। शहादत दिवस मन मन ही श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं। शांतपूर्ण से करना सभी के लिए आनन्दायक है। अंग्रेजो ने धोखे से शेख भिखारी एवं टिकैत उमराव सिंह को घेरकर गिरफ्तार कर लिया था और 8 जनवरी 1858 को शेख भिखारी और टिकट उमराव सिंह को चुटूपाली पहाड़ के बरगद पेड़ पर लटका कर फांसी दे दी थी। मौके पर एसडीपीओ श्रृद्धा केरकेट्टा ने कहा कि शेख भीखारी शहादत दिवस पर शांतिपूर्ण ढंग से मनाने के लिए सभी समुदायों के लोगों के लिए हार्दिक आभार व कृतज्ञता प्रकट करते हुये कहा कि हम सभी आपसी भाईचारे हमेशा बनाकर और मिलजुल एक साथ रहें। इसी में सभी का विकास और विकसित जिला बनाने में अग्रसर होंगे। तभी आप लोग आपना आपना बिजनेस को आगे बढ़ाने में कामयाब होंगे।

कलश यात्रा के साथ महाकाली प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ की हुई शुरुआत

खलारी। चूरी कॉलोनी में चार दिवसीय महाकाली प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ की शुरुआत रविवार को कलश यात्रा के साथ की गई। रविवार की सुबह गाजे बाजे के साथ कलश यात्रा निकाली गई। जिसमें 301 महिला और पुरुष श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना के बाद सपही नदी से कलश में जल भर कर कॉलोनी की परिक्रमा कर कलश को यज्ञ मण्डप में लाया गया। पुजारी नरेंद्र पाठक के द्वारा कलश यात्रा के सभी संस्कार कराए गए। जजमान के रूप में नरेश विश्वकर्मा और उनकी पत्नी शामिल रही। सोमवार को महायज्ञ के दौरान अरणीमंथन किया जाएगा। इसके बाद यज्ञशाला की परिक्रमा शुरू हो जाएगी। मंगलवार को मां काली की प्रतिमा का नगर भ्रमण कराया जाएगा। वहीं बुधवार को मां काली की प्राण प्रतिष्ठा कराई जाएगी। संपन्न करने के लिए वाराणसी से पंडित रामानंद पाठक सहित कई आचार्य का आगमन हुआ है।

स्ट्रीट डॉग के लिए नए साल में पहल चलाएगा कई कार्यक्रम

बिभा संवाददाता

हजारीबाग। नए साल की पहली बैठक रविवार को होटल कनहरी इन में संपन्न हुआ, जिसमें स्ट्रीट डॉग के कल्याणार्थ कई अहम फैसले लिए गए। पहल के अध्यक्ष मनोज गुप्ता की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में स्ट्रीट डॉग की दुर्दशा, बढ़ती संख्या, समाज के समक्ष रैबीज के खतरे आदि पर चर्चा की गई। सदस्यों ने एकमत से दिसंबर में शुरू किए गए कुत्तों के नसबंदी कार्यक्रम को जारी रखने का फैसला लिया गया। यह निर्णय लिया गया कि अब फीमेल डॉग को इस अभियान के दायरे में लाया जाएगा। इसके लिए संस्था द्वारा डॉग कैचर को खरीदने का निर्णय लिया गया। वहीं दक्ष लोगो के लिए नगर निगम से मदद का अनुरोध किया गया। इसके लिए एक प्रतिनिधिमंडल शीघ्र इसके अधिकारियों से मिलेगा। इससे पहले नगर आयुक्त ने पहल को हरसंभव मदद का आश्वासन दिया था। लेकिन नए आयुक्त के आने के बाद मामला फिर रुक गया है। सदस्यों ने मदद के तौर पर प्रशिक्षित 1- 2 कर्मी की मां की। वहीं वैक्सीनशन, घायल कुत्तों या मूक जानवरों को मदद आदि पर भी विचार किया गया। बैठक में उपस्थित पशु चिकित्सक डॉ मजहरुल हसन ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा अभी फ्री एन्टी रैबीज सुई की उपलब्धता पशु अस्पताल में कराई गई है। सभी डॉग को यह सुई फ्री में लग सकता है। आज के इस बैठक में आलोक कुमार वर्मा, मुकेश सिंह, आशीष, ओमप्रकाश, राजीव शरण, नीलेन्दु जयपुरियार, मोहित, एमएस शिखा, राजन आदि सदस्य मुख्य रूप से उपस्थित थे।

हजारीबाग यूथ विंग ने जरूरतमंदों के बीच अब तक 1200 कंबलों का किया वितरण

बिभा संवाददाता

- हजारीबाग यूथ विंग का शीतकालीन राहत अभियान, जरूरतमंदों के बीच कंबल का वितरण, सामाजिक सेवा की अनूठी मिसाल
- मानवता की सबसे बड़ी सेवा जरूरतमंदों की मदद करना है, और हमारा अभियान इसी भावना का प्रतीक है : चंद्र प्रकाश जैन
- हमारा लक्ष्य है कि कोई भी व्यक्ति ठंड से पीड़ित न रहे, और हम इसे पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं : करण जायसवाल

हजारीबाग। ठंड के कहर को कम करने और जरूरतमंदों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से हजारीबाग यूथ विंग द्वारा चलाया जा रहा शीतकालीन राहत अभियान अपने नए मुकाम पर पहुंच चुका है। दिसंबर के प्रथम सप्ताह से प्रारंभ हुए इस अभियान के तहत अब तक 1200 से अधिक कंबलों का वितरण किया जा चुका है। संस्था ने रविवार को मंडई खुर्द मुक्तिधाम के समीप जरूरतमंदों को कंबल वितरित कर उनकी मदद की। संस्था न केवल रविवार को आयोजित विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से जरूरतमंदों तक पहुंच रही है, बल्कि रात्रि के समय चौक-चौराहों, सार्वजनिक स्थलों और सड़कों पर खुले आसमान के नीचे सो रहे लोगों के बीच जाकर राहत सामग्री प्रदान कर रही है। हर बार नए जोश और उत्साह के साथ हजारीबाग यूथ विंग अपने इस अभियान को निरंतर आगे बढ़ा रही है।संस्था के संरक्षक चंद्र प्रकाश जैन ने इस अभियान को लेकर कहा की हजारीबाग यूथ विंग का यह प्रयास सिर्फ जरूरतमंदों को राहत देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बड़ी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन भी है। हम मानते हैं कि मानवता की सबसे बड़ी सेवा जरूरतमंदों की मदद करना है। संस्था के सभी सदस्यों ने जिस तरह से इस अभियान में योगदान दिया है, वह प्रशंसनीय है। हमारा लक्ष्य है कि कोई भी व्यक्ति ठंड से पीड़ित न रहे और हम इस दिशा में सतत प्रयास कर रहे हैं।अध्यक्ष करण जायसवाल ने कहा की हमारे इस अभियान का उद्देश्य न केवल कंबल वितरित करना है, बल्कि समाज में एक संदेश देना भी है कि हर व्यक्ति अपने आसपास के जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए कदम बढ़ाए। ठंड के कारण जो लोग सड़क पर सोने को मजबूर हैं, उनके लिए यह कंबल एक छोटी सी राहत है, लेकिन हमारे लिए यह मानवता की सेवा का सबसे बड़ा काम है। मैं सभी सदस्यों का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने इस अभियान को सफल बनाने में सहयोग किया। हमारा प्रयास है कि आने वाले दिनों में इस अभियान को और भी बड़े स्तर पर पहुंचाया जाए और हजारीबाग के हर जरूरतमंद तक मदद पहुंच सके।इस अभियान को सफलतापूर्वक संचालन करने में कार्यक्रम प्रमुख के रूप में कार्यकारणी सदस्य अभिषेक कुमार पांडे ने अपनी अहम भूमिका निभाई। उन्होंने कार्यक्रम के आयोजन कुशलता से किया। संस्था के अन्य सदस्यों ने भी उनके प्रयासों की सराहना की। संरक्षक और अध्यक्ष ने अभिषेक कुमार पांडे को उनकी सक्रियता, नेतृत्व क्षमता और समर्पण के लिए बधाई दिया। हजारीबाग यूथ विंग ने घोषणा की आने वाले दिनों में यह अभियान और व्यापक स्तर पर चलाया जाएगा। संस्था ने ठंड के मौसम में और भी अधिक जरूरतमंदों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा है। संस्था के सदस्य इस बात पर सहमत हैं कि यह अभियान केवल राहत प्रदान करने का नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का भी एक प्रयास है। मौके पर सचिव संजय कुमार, कोषाध्यक्ष रितेश खण्डेलवाल, कार्यकारिणी सदस्य विकाश तिवारी, प्रमोद खण्डेलवाल, मोहम्मद ताजुद्दीन, अभिषेक पांडे, रोहित बजाज, सिद्धार्थ कुमार उर्फ सिद्ध, विशाल कुमार सहित कई लोग मौजूद थे।

यिब्बी जानसेन ने किया कमाल, ओडिशा वॉरियर्स ने श्राची राढ़ बंगाल टाइगर्स को 4-1 से हराया

बिभा संवाददाता

राउरकेला: बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम में दर्शकों से भरी एक यादगार रात में ओडिशा वॉरियर्स ने महिला हीरो हॉकी इंडिया लीग (2024-25) में श्राची राढ़ बंगाल टाइगर्स को 4-1 से हराकर शानदार जीत दर्ज की। ओडिशा वॉरियर्स के लिए मिशेल फिलेट (16वां मिनट), यिब्बी जानसेन (18वां और 47वां मिनट) और नेहा गोयल (58वां मिनट) ने गोल किए, जबकि श्राची राढ़ बंगाल टाइगर्स के लिए उदीता (30वां मिनट) ने एकमात्र गोल किया।

तीन दिन पहले रांची में दोनों टीमों के बीच 1-1 की बराबरी हुई थी, जहां पेनल्टी शूटआउट में ओडिशा वॉरियर्स ने गोलकीपर जोसलीन बार्ट्रम के शानदार प्रदर्शन के दम पर जीत हासिल की थी। लेकिन इस बार पेनल्टी शूटआउट की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि वॉरियर्स ने स्टाइल में जीत दर्ज कर ली और अंक तालिका में 8 अंकों के साथ शीर्ष पर पहुंच गए।

मैच की शुरूआत में श्राची राढ़ बंगाल टाइगर्स का दबदबा देखने को मिला। पहले क्वार्टर में उन्होंने कई बार सर्कल में प्रवेश किया, लेकिन ओडिशा वॉरियर्स की गोलकीपर बार्ट्रम को चुनौती नहीं दे सके।

11वें मिनट में वॉरियर्स की बलजीत कौर ने शानदार रन बनाते हुए रुतुजा पिसाल को पास दिया। रुतुजा ने गोलकीपर ग्रेस ओ'हैनलोन से बचाव करवाने में सफलता पाई।

14वें मिनट में टाइगर्स को पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला। उदीता के स्लैप शॉट को एक टाइगर्स खिलाड़ी ने डिफ्लेक्ट किया, जिससे गेंद ईशिका चौधरी के शरीर से टकरा गई। अंपायर ने पेनल्टी स्ट्रोक दिया, लेकिन वॉरियर्स ने रेफरल लिया और निर्णय पलट दिया गया।

दूसरे क्वार्टर की शुरूआत में वॉरियर्स ने गोल कर स्कोरिंग खोली। यिब्बी जानसेन ने हाफवे लाइन से मिशेल फिलेट को शानदार पास दिया। फिलेट के तेज शॉट ने गोलकीपर ओ'हैनलोन को हैरान कर दिया।

18वें मिनट में वॉरियर्स को पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला, जहां यिब्बी जानसेन ने शानदार ड्रैग-फ्लिक करते हुए अपनी टीम की बढ़त को दोगुना कर दिया।

हाफ टाइम से ठीक पहले टाइगर्स को दूसरा पेनल्टी कॉर्नर मिला। उदीता का शॉट डिफ्लेक्शन के बाद बार्ट्रम को छकाते हुए गोल में चला गया।

तीसरे क्वार्टर में मुकाबला बराबरी का रहा, लेकिन वॉरियर्स की डिफेंस ने अपनी बढ़त को बनाए रखा। चौथे क्वार्टर की शुरूआत में वॉरियर्स को एक और पेनल्टी कॉर्नर मिला। जानसेन ने एक बार फिर बेहतरीन ड्रैग-फ्लिक के जरिए गोल कर अपनी टीम की बढ़त को मजबूत किया।

58वें मिनट में नेहा गोयल ने शानदार फिनिशिंग करते हुए वॉरियर्स के लिए चौथा गोल किया। यिब्बी जानसेन ने मिशेल फिलेट को ओवरहेड पास दिया, जिन्होंने नेहा को सेट अप किया और नेहा ने गोल करने में कोई गलती नहीं की।

संक्षिप्त खबरें

दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा रांची और टाटानगर से कुंभ स्पेशल ट्रेन चलाने की मांग

रांची(बिभा) : दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा रांची और टाटानगर से कुंभ स्पेशल ट्रेन चलाने की मांग करते हैं. पूरे देश में जगह-जगह कई दिनों तक कुंभ स्पेशल ट्रेनों का परिचालन हो रहा है. जबकि रांची और टाटानगर से मात्र एक दिन के लिए ट्रेन चल रही है. अरूण जोशी ने कहा कि कि जब तक कुंभ का मेला चल रहा है, तब तक कुंभ के लिए और भी अतिरिक्त स्पेशल ट्रेनें चलाई जाए ताकि झारखंड की जनता को भी कुंभ में जाने में सुविधा मिले। आवश्यक है कि रांची से टूंडला वाया मेसरा, बरकाकाना, हजारीबाग टाउन, कोडरमा होकर तथा रांची से लोहरदगा, टोरी, डाल्टनगंज, गढ़वा, रेणुकूट, चोपन, सोनभद्र होकर ट्रेन चलाने से झारखंड के साथ उत्तर प्रदेश के यात्रियों को भी इसका लाभ मिलेगा। वर्तमान में यह जरुरी है कि प्रयागराज के लिए अतिरिक्त कुंभ स्पेशल ट्रेन चलाई जाए जिससे झारखंड से ज्यादा से ज्यादा श्रद्धालुओं को आने-जाने में सुविधा मिल सके।

धनबाद मंडल के धनबाद-कोडरमा खंड के मध्य चलाया गया मजिस्ट्रेट चेकिंग अभियान

धनबाद (बिभा): धनबाद मंडल में बड़े पैमाना पर टिकट चेकिंग अभियान चलाया जा रहा हैं इसी क्रम में दिनांक 18.01.25 को धनबाद झकोडरमा खंड में

मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में टिकट चेकिंग अभियान एवं मंडल के विभिन्न खण्डों में विशेष टिकट चेकिंग अभियान के साथ-साथ चन्द्रपुरा, डाल्टनगंज, चोपन, बरकाकाना, सिंगरौली स्टेशनों में भी गहन टिकट चेकिंग की गई इस जांच अभियान में कुल 1115 यात्रियों को पकड़ा गया जिसमें बिना टिकट यात्रा कर रहे यात्री, बिना उचित प्राधिकार के यात्रा करने वाले यात्री, बिना बुक किये गए सामान के साथ यात्रा कर रहे यात्रीगण शामिल थे इस दौरान उनसे 05 लाख 01 हजार 880 रूपए जुमार्ने के रूप में राशि प्राप्त की गई व कड़ी हिदायत दी गई चेकिंग टीमों ने स्टेशनों एवं विभिन्न मेल/एक्स्प्रेस ट्रेनों में भी चेकिंग की इस अभियान का उद्देश्य बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों पर अंकुश लगाना है ताकि वे टिकट लेकर यात्रा करें एवं उचित टिकट लेकर यात्रा करने वाले यात्रियों को बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों के कारण किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

जिले के सभी प्रखंडो में विशेष स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन 21 से

देवघर(बिभा) : उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी विशाल सागर द्वारा जानकारी दी गई कि स्वास्थ्य सुविधाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से राज्य सरकार के निदेर्शानुसार जिले के सभी दस प्रखंडो में स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन किया जा रहा हैं। इस कड़ी में 22.01.2025 को सामुदायिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र देवीपुर, 21.01.2025 को सामुदायिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र जसीडीह, 24.01.2025 को सामुदायिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र करो, 21.01.2025 को सामुदायिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र मागोमुंडा, 21.01.2025 को सामुदायिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र मधुपुर, 24.01.2025 को सामुदायिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र मोहनपुर, 21.01.2025 को सामुदायिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र पालोजरी, 21.0120250 को सामुदायिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र सारठ, 22.01.2025 को कस्तूरबा गांधी मैदान सारवाँ एवं 24.01.2025 को प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र सोनारायठाडी में कैंप का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा मेला में सभी विशेषज्ञ चिकित्सक के साथ-साथ लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाने की भी सुविधा उपलब्ध होगी। साथ ही मेला में सभी तरह की दवाएं भी उपलब्ध कराई जाएगी, ताकि आमजनों के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले मरीजों को मुफ्त में सारी दवा मिल सके।

उत्पाद विभाग ने किया मिनी शराब फैक्ट्री का उद्भेदन, 215 पेटी शराब बरामद

धनबाद(बिभा) : उत्पाद विभाग ने धनबाद जिले में छापेमारी कर मिनी शराब फैक्ट्री का उद्भेदन किया है। छापेमारी के दौरान भारी मात्रा में बोतल और अलग-अलग ब्रांड की अंग्रेजी शराब बरामद की गई है। साथ ही पैकेजिंग के उपकरण, कच्चा स्प्रिट और शराब निर्माण में उपयोग होने वाली अन्य चीजें भी उत्पाद विभाग ने बरामद की है। शराब की कीमत करीब 25 लाख रुपए है। एक ईंट भट्ठा में शराब फैक्ट्री का धंधा चल रहा था, जिसे बिहार सप्लाई किया जाता था। बिहार भेजने के लिए ही शराब बनाने का काम चल रहा था। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने दबिश दी। उत्पाद विभाग की यह कर्रवाई राजगंज थाना क्षेत्र के बेलायटांड में गई है। 215 पेटी शराब बरामद की गई है। शराब फैक्ट्री के संचालन में राजगंज थाना क्षेत्र के धावाचिता निवासी मुरारी महतो का नाम सामने आया है। अनुसंधान के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

झारखंड स्थापना दिवस की तैयारी को लेकर झामुमों ने की प्रमंडलीय बैठक

दुमका(बिभा)। 46 वां झारखंड स्थापना दिवस भव्य तरीके से मनाने को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा की संथाल परगना प्रमंडल स्तरीय बैठक दुमका क्लब में रविवार को आहूत हुई। बैठक की अध्यक्षता दुमका विधायक बसंत सोरेन ने किया। बैठक में झारखंड दिवस मनाने के उद्देश्य, भव्यता और सफल आयोजन को लेकर चर्चा हुई। बैठक में दो फरवरी को गांधी मैदान में एकजुटता का परिचय दिखाते हुए अधिक से अधिक संख्या में जुटने का आह्वान किया। इस दौरान अल्प संख्यक और कल्याण विभाग के मंत्री हफीजुल अंसारी ने कहा कि दो फरवरी का आयोजन झामुमों कार्यकत्ताओं के लिए टॉनिक का काम करता है। मंत्री हसन ने भाजपा को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि भाजपा वाले एक खास समुदाय को टारगेट कर चुनाव जीतना चाहते थे। यहां तो देशी मिल ही नहीं रहा है, सभी जगह पोल्टी इस्तेमाल हो रहा है। यहां तक की पोल्टी को ही रंग कर देशी मुर्गा बना रहे है और भाजपा वाले बंग्लादेशी और घुसपैठी की बात करते है। मौके पर महेशपुर विधानसभा के विधायक प्रो स्टेफन मरांडी ने स्थापना दिवस समारोह के तैयारियों को लेकर आवश्यक चर्चा करते हुए कहा कि कई समस्या का समाधान हुआ है और कई समस्या अब भी है। उन्होंने मुख्य मांगों में दुमका में हाई कोर्ट बेंच की स्थापना की मांग, मसानजोर डैम के पानी राज्य के सिंचाई के लिए इस्तेमाल होने और हवाई मार्ग से उपराजधानी दुमका को जोड़ने काम शेष है।

रांची के ब्रह्मकुमारी विवि में मनाया ब्रह्म बाबा का 56वां स्मृति दिवस

रांची(बिभा)। शहर के पिठौरिया के नवा टोली स्थित प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में रविवार को संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्म बाबा का 56वां पुण्य स्मृति दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सेवा केंद्र संचालिका बीके राजमती ने ब्रह्म बाबा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बाबा ने मानव मात्र के जीवन को सुखी बनाने के लिए कई प्रेरणाएं दी हैं। बाबा की शिक्षाएं मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत लाभदायक सिद्ध हुई हैं और आज पूरे विश्व में ब्रह्म बाबा की शिक्षा के जरिये लाखों लोगों ने अपना जीवन सुखमय बनाया है। युवा समाजसेवी आशुतोष द्विवेदी ने कहा कि ब्रह्म बाबा एक आध्यात्मिक प्रणेता थे, जो लोगों के जीवन से अवगुणों को छुड़ाने के मार्गदर्शक बने। समाजसेवी सह बाडू पंचायत के सरपंच अशोक उरांव ने जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाने की बात कही। समाजसेविका संपति देवी ने भी अनुभव साझा किया और ब्रह्म बाबा को श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इस अवसर पर संस्था की उर्मिला देवी, लीला देवी, कविता सेन और किरण देवी सहित कई अन्य लोग

वंदेभारत ट्रेन की पहली महिला लोको पायलट रितिका तिर्की को राष्ट्रपति ने दिया निमंत्रण

बिभा संवाददाता

जमशेदपुर: वंदेभारत ट्रेन की पहली महिला लोको पायलट 27 वर्षीय रितिका तिर्की ने देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 26 जनवरी 2025 को गणतंत्र दिवस की शाम राष्ट्रपति भवन में होने वाले ईएम-होम रिसेप्शन में शामिल होने के लिए निमंत्रण पत्र भेजा है.

सहायक डाक अधीक्षक (पश्चिमी) परीक्षित सेठ की देख-रेख में डाकिया द्वारा उक्त निमंत्रण पत्र को रितिका तिर्की के घर पहुंचकर उन्हें सौंपा.

देश की पहली आदिवासी महिला सहायक लोको-पायलट बनने का गौरव हासिल

झारखंड की 27 वर्षीय रितिका तिर्की, जो जुगसलाई में रहती हैं, वंदे भारत एक्सप्रेस की सहायक लोको-पायलट के रूप में देश की पहली आदिवासी महिला बनने का गौरव हासिल की हैं. रितिका तिर्की ने अपने कठिन परिश्रम और संकल्प के बल पर यह उपलब्धि हासिल की है, जो न केवल उनके परिवार और झारखंड के लिए गर्व का विषय है, बल्कि पूरे देश की महिलाओं के लिए एक मिसाल है. रितिका तिर्की, एक महिला लोको पायलट हैं, जो भारतीय रेलवे के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस चलाती हैं. रितिका टाटानगर-पटना वंदे भारत एक्सप्रेस में असिस्टेंट लोको पायलट के रूप में काम करती हैं. यह ट्रेन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट्स में से एक है. प्रधानमंत्री मोदी ने 15 सितंबर को छह नयी वंदे भारत ट्रेनों का उद्घाटन किया था. रितिका तिर्की को वंदे भारत जैसी अत्याधुनिक ट्रेन चलाने का मौका मिला था.

पहले मालगाड़ी और यात्री ट्रेनें चलायीं, फिर मिला वंदे भारत एक्सप्रेस चलाने का मौका

रितिका तिर्की ने 2019 में दक्षिण पूर्व रेलवे (एसइआर) के चक्रधरपुर डिवीजन में शंटर के रूप में अपनी रेलवे यात्रा शुरू की और बाद में मालगाड़ी और यात्री ट्रेनें चलायी. इसके बाद रितिका को सीनियर सहायक लोको पायलट के पद पर प्रमोशन के बाद उन्हें वंदे भारत एक्सप्रेस के ऑपरेटिंग में असिस्ट करने का मौका मिला. रितिका झारखंड की रहने वाली हैं और एक सामान्य परिवार से आती हैं. रितिका के परिवार में उनके माता-पिता और उनके चार भाई-बहन हैं. रितिका ने अपनी स्कूली शिक्षा रांची से पूरी की. उन्होंने रांची के बीआइटी मेसरा से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक किया. उनकी पहली पोस्टिंग धनबाद डिवीजन के अंतर्गत चंद्रपुरा, बोकारो में हुई. साल 2021 में रितिका का तबादला टाटानगर हो गया. साल 2024 में उन्हें सीनियर असिस्टेंट लोको पायलट के पद पर पदोन्नत कर दिया गया.

सड़क सुरक्षा को लेकर एक दिवसीय फुटबॉल प्रतियोगिता पीजी ग्राउंड दुमका मे हुआ संपन्न

दुमका : एक दिवसीय फुटबॉल प्रतियोगिता का शुरूवात जिला परिवहन पदाधिकारी जयप्रकाश करमाली द्वारा प्रारम्भ किया गया। इसमें कुल 8 टीम भाग लिया, जिसके विजेता नेशनल हॉस्टल दुमका रहे।

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह 2025 में तहत फुटबॉल मैच के माध्यम जिला परिवहन पदाधिकारी ने लोगों को यह संदेश दिया कि सबको हिट एंड रन और गुड समेरियटन पॉलिसी 2020 के बारे में जानकारी होनी चाहिए गोल्डन हावर में किसी भी दुर्घटना पीड़ित को बचाने में सोचें नहीं , पुलिस कभी भी आपको किसी की मदद करने के लिए परेशान नहीं कर सकती है, ऐसा गुड समेरिटन पॉलिसी 2020 के द्वारा आपको हक मिलता है जिससे पुलिस और अस्पताल आपसे अनावश्यक पूछताछ नहीं कर सकती है और किसी भी प्रकार के कानूनी प्रक्रियाओं से आप मुक्त रहेंगे । गुड समेरिटन पॉलिसी 2020 के तहत किसी भी दुर्घटना पीड़ित की मदद करने पर रुपए 2000 से रुपए 5000 तक आपको सम्मानित किया जाता है साथ ही प्रशस्ति पत्र भी दिया जाता है।

कार्यक्रम के अंत में अधिकारियों ने सभी वाहन स्वामी एवं वाहन चालक तथा नागरिकों से अपील की कि वे यातायात नियमों का पालन करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। मौके पर मोटरयान निरीक्षक अभय कुमार तथा नवनियुक्त मोटरयान निरीक्षक विनय किशोर देव, अरविंद तिरु, अभय टेटे, सड़क सुरक्षा समिति के सदस्यगण यथा- डॉ0 मनोज कुमार घोष, डॉ0 अमरेन्द्र सुमन, नीलकंठ झा, रमण कुमार वर्मा, अरुण कुमार सिंह, प्रदीपतो मुखर्जी, मुस्ताक आलम उर्फ खोखन दा सड़क सुरक्षा कोषांग के जिला प्रबंधक दीपक कुमार,कर्मी मनोज उरांव अमित कुमार, डॉ दिलीप झा, प्राचार्य बबन कुमार, ने सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान में भाग लिया।

आरपीएफ ने 2021 से अब तक 586 बांग्लादेशी और 318 रोहिंग्या को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली : रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने 2021 से अब तक 586 बांग्लादेशी नागरिकों और 318 रोहिंग्या सहित 916 व्यक्तियों को सफलतापूर्वक पकड़ा है, जो देश की सुरक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दशार्ता है। जून और जुलाई 2024 में, आरपीएफ ने पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में 88 बांग्लादेशी और रोहिंग्या प्रवासियों को पकड़ा। इनमें से कुछ व्यक्तियों ने अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने की बात कबूल की और उन्हें कोलकाता जैसे गंतव्यों के लिए ट्रेन से यात्रा करते समय रोका गया।

बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा

अक्टूबर 2024 में, रिपोर्ट में बताया गया कि बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा से जुड़े उपायों को बढ़ाने के बावजूद, अवैध प्रवासी भारत में घुसपैठ करना जारी रखते हैं, असम को पारगमन मार्ग के रूप में और रेलवे को देश के अन्य हिस्सों तक पहुंचने के लिए अपनी पसंदीदा यात्रा के रूप में उपयोग करते हैं। ये घटनाएं अवैध घुसपैठ के खिलाफ रेलवे नेटवर्क की निगरानी और सुरक्षा में भारतीय अधिकारियों के सामने आने वाली चुनौतियों को चिन्हित करती हैं। घुसपैठियों द्वारा रेलवे का उपयोग न केवल राज्यों में उनकी आवाजाही को सुविधाजनक बनाता है, बल्कि देश में अनधिकृत प्रवेश का पता लगाने और रोकने के प्रयासों को भी जटिल बनाता है।

आरपीएफ को पकड़े गए व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने का सीधा अधिकार नहीं

उपरोक्त मुद्दे पर विचार करने के लिए, आरपीएफ ने सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ), स्थानीय पुलिस और खुफिया इकाइयों जैसी प्रमुख सुरक्षा एजेंसियों के साथ सहयोग करके अपने प्रयासों को तेज कर दिया है। विभिन्?न एजेंसियों के बीच आंतरिक सहयोग के इस दृष्टिकोण ने परिचालन दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जिससे अवैध प्रवास में शामिल व्यक्तियों की शीघ्र पहचान करना और हिरासत में लेना संभव हो पाया है। अपने महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, आरपीएफ को पकड़े गए व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने का सीधा अधिकार नहीं है। इसके बजाय, हिरासत में लिए गए व्यक्तियों को आगे की कानूनी कार्यवाही के लिए पुलिस और अन्य अधिकृत एजेंसियों को सौंप दिया जाता है।

बांग्लादेश और म्यांमार जैसे पड़ोसी देशों में चल रही हाल के राजनीतिक उथल-पुथल और इन क्षेत्रों में भू-राजनीतिक घटनाक्रमों और सामाजिक-धार्मिक कारकों के कारण भारत के सुदूर इलाकों में शरण, रोजगार और आश्रय की तलाश करने वाले लोगों की आमद हुई है। यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बना हुआ है। जबकि रेलवे का उपयोग करने वाले घुसपैठियों की संख्या के सटीक आंकड़े सीमित हैं, हाल की रिपोर्टें बताती हैं कि अवैध प्रवासी अक्सर भारत के अन्य हिस्सों में जाने के लिए असम और त्रिपुरा जैसे क्षेत्रों से गुजरने के लिए रेलवे नेटवर्क का उपयोग करते हैं।

रेलवे सुरक्षा बल ने इस महत्वपूर्ण मुद्दे को हल करने की चुनौती को स्वीकार किया है, तथा भारत की सीमाओं में घुसने का प्रयास करने वाले अवैध प्रवासियों की पहचान करने और उन्हें पकड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये व्यक्ति न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा की चिंता का विषय हैं, बल्कि बंधुआ मजदूरी, घरेलू नौकरानी, वेश्यावृत्ति और यहां तक कि अंग निकालने के लिए मानव तस्करी सहित शोषण के लिए भी अत्यधिक संवेदनशील हैं।

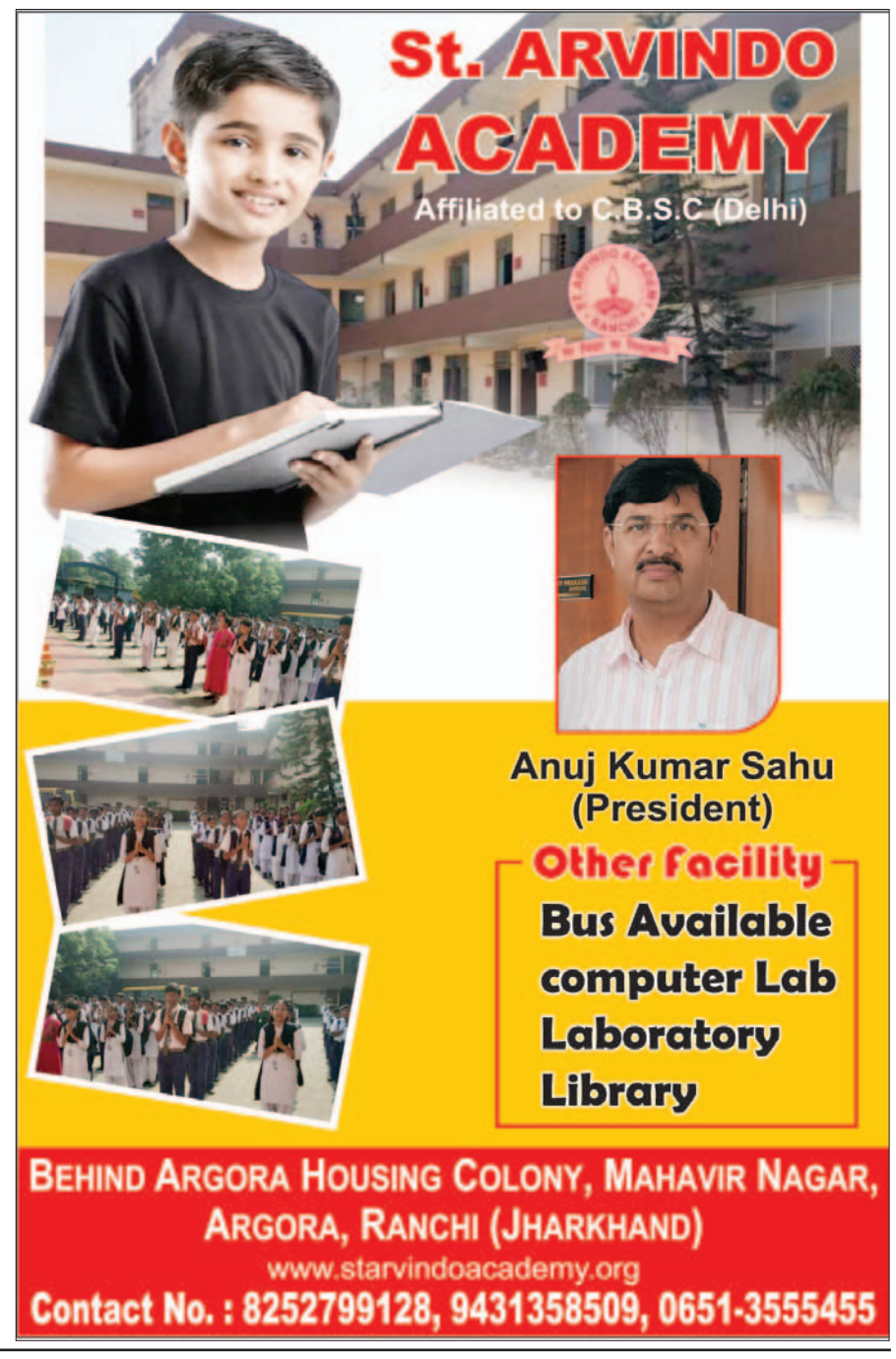

बिहान भारत की ओर से स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक संजय कुमार के लिए वाटिका अपार्टमेंट,भोसले गली,हरिहर सिंह रोड,बरियातू,रांची-834009(झारखंड) दूरभाषः 7761060594, 7004767601 से प्रकाशित तथा शिवा साई पब्लिकेशन प्रा.लि., काठीटांड रातु, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। समस्त दीवानी विवाद, न्यायोचित कार्रवाई एवं दंडित परिवादो के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। संपादक कविता साहू *पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार । Email-bihanbharat@gmail.com, bihanbharatranchinews@gmail.com